ISSN 2349-6614

जून, 2017

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

फिर सुलग उठा कश्मीर, लफ़्ज़ बेअसर, अब सख़्ती की दरकार

विद्यापीठ कुलपति सारंगदेवोत बने मानद कर्नल

वापसी के लिए कांग्रेस ने पाण्डेय को सौंपा राजस्थान

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 4 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

Founded on Trust. Envisioning Infinite Possibilities.

Becoming a leading Agri Chem company took us foresight, acumen and ability. But it all started with our foundation of trust. Our principles of complete business transparency and an adherence to the highest standards have made us global experts and a partner of choice in our business. We are confident that our belief in trust will lead us to infinite possiblities by leveraging our capabilities across the Agri Sciences value chain by providing integrated and innovative services & solutions by partnering with the best.

OUR BUSINESS PRINCIPLES

ADAPTABILITY
Constantly transforming ourselves like water, we are nimble footed and highly responsive to change.

TRUST
We work with integrity of purpose, honesty in action and fairness in all our dealings.

SPEED
Blazing ahead, we constantly strive to work with speed in the way we observe, think and act.

INNOVATION
The constant quest for horizon, the never ending search for a better, newer way to do things. Innovation is a way of life for us.

Inspired by Science

PI Industries Ltd

www.piindustries.com | info@piindustries.com

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs

कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

जून
2017
वर्ष 15, अंक 4

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 आवरण कथा

कश्मीर : उलझी डोर सुलझती क्यों नहीं?

10 पर्यावरण

ज़िंदगी लीलता प्रदूषण

16 आस्था

श्रद्धा व रोमांच से भरपूर चार धाम

25 जीवन दर्शन

खुशियां बांटने का अवसर

26 सर्जरी

वापसी के लिए कांग्रेस में बुनियादी बदलाव

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

HYUNDAI | NEW THINKING. NEW POSSIBILITIES.

PROMISE
APPROVED USED CAR

चन्द्रा हुण्डई

Opp. Dalal Petrol Pump
B.N. College Compound, Udaipur
M.: 9828144395, Ph.: 0294-2417130

||

G-78, Ambaji Industrial Area
Abu Road (Raj.)
Mob.: 8696920034

www.dpjewellers.com

DP Kataria

D.P. Jewellers

A BOND OF TRUST SINCE 1940

मेवाड़ का बढाया गौरव,
डी.पी.ज्वैलर्स को मिली एक और
कामयाबी

"BEST PROMISING GEMS & JEWELLERY COMPANY 2017"
(सर्वश्रेष्ठ मरोसेमंद रत्न और ज्वैलरी कंपनी 2017)

BEST BRIDAL JEWELLERY
OF THE YEAR
(सर्वश्रेष्ठ विवाहिक ज्वैलरी)
BY - IJ JEWELLERS CHOICE
DESIGN AWARDS 2016

INDORE
MOST TRUSTED
BRAND
OF THE YEAR
(सर्वश्रेष्ठ मरोसेमंद ब्रांड)
BY - 94.3 MY FM 2016

UDAIPUR
दैनिक भास्कर
RECOGNIZES D.P. JEWELLERS
AN ICONIC BRAND
OF MEWAR
(मेवार का सबसे प्रतिष्ठित ब्रांड)

DP @ UDAIPUR
17, NYAY MARG COURT CHOURAHA, UDAIPUR - 313001 ☎ +91 294 5104411 | 22

RATLAM ▪ INDORE ▪ UDAIPUR ▪ BHOPAL

corporate@dpjewellers.com

जल है, तो अपना कल है!

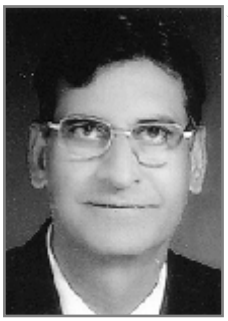

विकास के नाम पर कटते जंगल व औद्योगीकरण, कार्बन व केमिकल गैसों का उत्सर्जन, ओजोन परत का क्षरण, तापमान में असामान्य बढ़ोतरी, ग्लेशियरों के असीमित पिघलन और बेतहाशा पानी के उपयोग से आसन्न गंभीर जलसंकट के इशारों को समय रहते समझ लिया जाना चाहिए। नदियों में पानी के बहाव में परिवर्तन के कारण राज्यों के बीच जल विवाद भी बढ़ने वाले हैं। हिमखण्डों में बिखराव और उनके संकुचन के परिणामस्वरूप ये विलुप्ति के कगार पर हैं, जिनसे जलस्रोतों के सूखने का खतरा मंडरा रहा है।

यमुना कार्य योजना 1 और 2 पर लगभग 1500 करोड़ रुपए खर्च होने के बाद भी इस नदी का स्वरूप नाले जैसा है। गंगा कार्य योजना की शुरूआत 1985 में शुरू हुई और 10 हजार करोड़ से अधिक के खर्च के बाद भी प्रदूषण से मुक्त नहीं हो पाई। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री नर्मदा की सफाई पर कम और 'नमामि नर्मदे' यात्राओं के माध्यम से वोटों की फसल उगाने में लगे हैं। नदियों को प्रदूषित करने में नागरिकों की कम और औद्योगिक अपशिष्ट व सीवरेज की भूमिका प्रमुख है। इसी वर्ष मार्च में विश्व जल दिवस के दौरान यूनेस्को ने जो आंकड़े जारी किए हैं, वे बेहद चिंताकारी हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में भूजल स्तर में 65 प्रतिशत तक गिरावट आई है।

जमीन से खींचे गए पानी के उपयोग के मामले में भारत दुनिया में अव्वल है। यहां पेयजल की करीब 80 प्रतिशत जरूरत इसी से पूरी होती है। साल दर साल गर्मी का पारा बढ़ रहा है और भूजल स्तर लगातार नीचे उतर रहा है। शहरीकरण में तेजी और विशाल कृषि व औद्योगिक क्षेत्र पानी की मांग पर दबाव बढ़ा रहे हैं। अगर देश के नीति-नियामकों ने समय रहते हालातों पर ध्यान नहीं दिया और वैकल्पिक जल संसाधनों की व्यवस्था नहीं की तो देश के ज्यादातर बड़े शहरों तथा कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को अगले डेढ़-दो दशक में गंभीर दौर से गुजरना पड़ सकता है।

नरेन्द्र मोदी सरकार ने 2014 में 'स्वच्छ भारत' अभियान की शुरुआत की, लेकिन पानी और जलवायु की चुनौतियों से निपटने के लिए जो भी किया जा रहा है, वह काफी नहीं है। भारत में 7 करोड़ से भी ज्यादा लोग ऐसे हैं, जो आज भी स्वच्छ पेयजल से महरूम हैं। पानी का सीधा सम्बंध जनस्वास्थ्य से है। जहां पानी ही शुद्ध और पर्याप्त न हो, वहां बीमारियों के डेरे पसरते रहना स्वाभाविक है। पानी की जितनी कमी है, उससे ज्यादा कमी उसके प्रबंधन में है। एक तरफ भूजल स्तर गिर रहा है, तो दूसरी तरफ उन मशीनों के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो धरती का इंच दर इंच सीना चाक कर समाहित पानी का कतरा-कतरा निचोड़ ले। इन मशीनों के उत्पादन में निवेश धड़ल्ले से बढ़ रहा है। देश की बढ़ती आबादी और औद्योगीकरण को आधार मानें, तो 2025 तक पानी की आवश्यकता लगभग 1,093 घन किमी और 2050 में बढ़कर 1,447 घन किमी हो जाएगी। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश आदि राज्य पानी में खारेपन की समस्या से जूझ रहें हैं, तो महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना आदि में भूजल स्तर में तेजी से गिरावट हो रही है। देश का अधिकांश हिस्सा वर्षा जल पर निर्भर है। इसे सहेजने के भी माकूल प्रबंध नहीं हो पा रहे।

देश के दो-तिहाई भूजल भण्डार रीते हो चुके हैं, जो बचे हैं वे प्रदूषण की मार से जख़्मी हैं। परम्परागत कुएं-बावड़ियां पाट दी गई। नदियों का पानी पीने लायक नहीं रहा। ऐसे में संकट से पार पाने के लिए बेहतर सामुदायिक विकेन्द्रित जलप्रबंधन व्यवस्था अपनाने, जल के निजीकरण की जगह समुदायीकरण करने और अतिक्रमण से बचाने की आवश्यकता है। जल है, तो अपना कल है। जल पर ही सबकुछ निर्भर है। जल से ही विकास का तानाबाना मज़बूत हो सकता है। जल ही जीवन है, सब मिलकर इसे सहेजने का प्रयास करें। पानी के दुरुपयोग की आदतें नहीं बदलीं, तो नतीजे हम ही नहीं आने वाली पीढ़ियां भी भुगतेंगी। निज स्वार्थ से प्रेरित हमने ही हरियाली को तहस-नहस किया है, उसे वापस भी हमें ही लाना होगा। जंगल और जमीन को हर कीमत पर बचाना सबकी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। दरअसल जिस दिन से पानी और जंगल सरकारी हुए, उसी दिन से लोगों ने इन्हें पराया मान लिया। जाति, धर्म और आरक्षण की राजनीति ने समाज का साझा तोड़ दिया। इसी के साथ पानी की पालें भी टूट गईं और उपयोग का अनुशासन भी। सरकार से यदि नहीं संभलता तो उसे जल प्रबंधन एवं वितरण के काम से अपने को अलग कर लेना चाहिए। ऐसी व्यवस्था विकसित हो जिसमें स्थानीय समाज पर जिम्मेदारी डाली जाए। सरकार सिर्फ निगरानी रखे। पानी को लेकर हमें सिर्फ आज के संकट तक सीमित नहीं रहना है। दीर्घकालिक सोच बनाने और समाधान ढूंढने का यही उपयुक्त समय है।

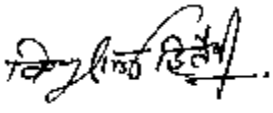

भारत को होना होगा दबाव मुक्त और सख्त

कश्मीर उलझी डोर सुलझती क्यों नहीं?

-शांतिलाल शर्मा

जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, जिसे दुनिया की कोई ताकत उससे अलग नहीं कर सकती। कश्मीर घाटी के पाकिस्तान परस्त कुछ शरारती व स्वार्थी तत्व नौजवानों में भारत विरोधी भावनाएं भड़का कर उन्हें गुमराह कर रहे हैं। देश के नेतृत्व व सेना को सख्ती और कूटनीति से स्थायी हल निकालना होगा।

आजादी के सात दशक बाद भी जम्मू-कश्मीर की उलझी डोर नहीं सुलझ पाई है। 26 अक्टूबर 1947 को कश्मीर के महाराजा हरिसिंह ने अपने राज्य का भारत राष्ट्र में विलय किया था। भारत-पाक बंटवारे के ठीक बाद पाकिस्तान ने कश्मीर हथियाने के लिए कबाइलियों के भेष में सैनिक भेजे। भारतीय सेना ने ऐसा सबक सिखाया कि उन्हें उल्टे पांव भागना पड़ा। 1965 में पाकिस्तानी सेना ने फिर हमला किया, जिसमें भी उसे मुंह की खानी पड़ी। 1971 में फिर से हमला करना पाकिस्तान को इतना महंगा पड़ा कि वह आधे भूभाग से हाथ धो बैठा। करगिल युद्ध में भी पाकिस्तान को करारा जवाब मिला। वह जनमत संग्रह की मांग के अलावा हर अन्तरराष्ट्रीय मंच पर भारत पर दबाव बढ़ाने से नहीं चूकता।

अस्सी के दशक के उत्तरार्द्ध में उसके पास जब एटमी हथियार आए तो भारत के खिलाफ अघोषित और इकतरफ़ा ज़ंग छेड़ दी, जिसमें उग्रवाद को बढ़ावा और आतंकी हमलों को अंजाम देना शरीक था। उसे इस बात का एहसास हो चला कि शांति और सहअस्तित्व का पक्षधर भारत उसका कड़ाई से जवाब देने से बचेगा, क्योंकि तनाव बढ़ने से एटमी टकराव हो सकता है। इसीलिए सैन्य शासक ही नहीं अपितु जम्हूरियत का राग आलापने वाले राजनेता भी गाहे-बगाहे एटमी हमले की गीदड़ भभकियां देते रहते हैं। पहले अमरीका और अब चीन के बल पर पाकिस्तान बेलगाम घोड़ा है।

सदाशयता को कमजोरी माना

भारतीय नेताओं ने हर समय पाकिस्तान की उद्दंडता को माफ़ कर बड़े भाई का फर्ज़ निभाया, परंतु वह नित नई साज़िशें बुनते हुए भारत की पीठ में छुरा भोंकने को आमादा दिखाई दिया। जम्मू-कश्मीर अवाम को भारत ने कभी पराया नहीं समझा।

लोगों के हित में हद से बाहर जाकर भी भारत सरकार ने 17 अक्टूबर, 1949 को संविधान में धारा 370 जोड़कर जम्मू-कश्मीर को विशिष्ट राज्य का दर्जा दिया। इसके अनुसार उसे अपना संविधान रखने की छूट मिली तथा संचार, विदेश, रक्षा और मुद्रा को छोड़कर बाकी तमाम प्रशासनिक मामलों में स्वायत्ता का हक़ मिला। वहां की असेम्बली को इतना अधिकार सम्पन्न बना दिया कि वह भारतीय संसद के बनाए किसी भी कानून को स्वीकार या खारिज कर सकती है।

जनसंघ के संस्थापक सदस्य श्यामाप्रसाद मुखर्जी तो इसका विरोध करते-करते कश्मीर की धरती पर ही चल बसे। शेख परिवार कांग्रेस के सहयोग से सात दशक से राजनीति पर हावी है। मुफ्ती परिवार भी अपने हित साधन से कभी नहीं चूका। इसी कारण वहां राष्ट्रीय भावना गौण और उग्रवादी और अलगाववादी नेताओं व आतंकियों की जमात खड़ी होती रही।

उलझी डोर सुलझती क्यों नहीं?

बिस्मार्क ने कहा था – 'अपनी गलतियों से तो मूर्ख सीखता है, विवेकवान वह है जो दूसरों की गलतियों से सीख जाए।' अब उस राष्ट्र को क्या कहा जाए जो न तो अपनी गलती से सीखता है और न ही दूसरों की गलतियों से। कश्मीर इस समय जिस उलझन में है, उससे पार पाने का इंतजार सभी को है। केन्द्र में सत्तासीन भाजपा और जम्मू-कश्मीर में महबूबा मुफ्ती का बेमेल गठबंधन समस्या सुलझाने की बजाय बढ़ा ही रहा हैं। नफ़ा-नुकसान का गणित असंतोष की आग में घी का काम कर रहा है। अलगाववादी और उग्रवादी अभियान को सियासत हवा दे रही है। फारूख अब्दुल्ला ने तो वोटों के खातिर कश्मीरी पत्थरबाजों को देशभक्त तक बता दिया। पाक अधिकृत कश्मीर पर बयान दे डाला कि पीओके को पाक से कोई ताकत छीन नहीं सकती। ऐसे बयान बर्दाश्त की हद को पार कर रहे हैं।

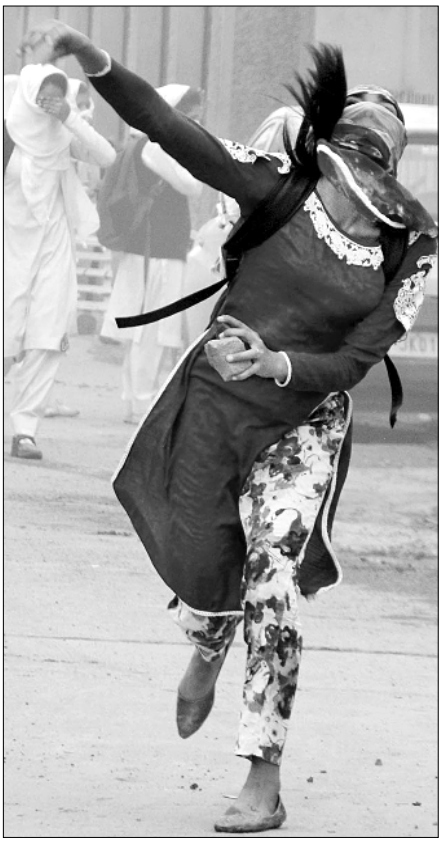

पाक का लक्ष्य कश्मीर

कश्मीर का मुद्दा सत्तर साल से सुलग रहा है। भारत-पाक के बीच इस मसले पर तीन ज़ंग हो चुकी है।

पाकिस्तान का उद्देश्य कश्मीर हथियाना है। स्वयं पाकिस्तान के बलूचिस्तान, सिंध और पीओके में असंतोष की आग बरसों से जल रही है, परन्तु हर बार सेना के दम पर उसने कुचल दिया। भारत सरकार ने कश्मीर पर जितना खर्च किया, उससे तो विकास की तस्वीर बदल जानी चाहिए। परन्तु सियासत के खैवनहार बीच में ही कश्मीरी अवाम के हिस्से आई राहत हड़प जाते हैं, क्योंकि धारा 370 के विशिष्ट दर्जे के कारण राजनेताओं को वैसी हैसियत मिली हुई है।

पाकिस्तान का वजूद ही मज़हबी कट्टरता और आतंकी सरगनाओं पर टिका है। विश्व में कहीं भी कोई आतंकवादी घटना होती है तो उसके तार कहीं न कहीं पाकिस्तान से जुड़े मिलते हैं। इसीलिए पाकिस्तान को आतंक की फैक्टरी कहा जाता है। मज़हबी कट्टरपन और फौज के बल पर पाकिस्तानी हुक्मरान पगला रहे हैं। हरकतों का माकूल जवाब नहीं मिलने की वज़ह से ही दुस्साहसी बन गए हैं। अब सर्जिकल स्ट्राइक नहीं, मास्टर स्ट्रोक जरूरी है। हालांकि युद्ध और तनाव किसी समस्या का हल नहीं है। अमन और ज़ंग में बराबर की दूरी हो तो अमन का रास्ता ही चुनना चाहिए। दोनों मुल्कों का अवाम कभी तनाव व संघर्ष नहीं चाहता। गरीबी व बेरोजगारी का हल युद्ध से पहले निकालना चाहिए। परन्तु पाकिस्तान के सत्तानशीं इन मुद्दों पर बात नहीं करते। उन्हें ज़ंग की भाषा ही समझ में आती है।। तभी तो पूर्व सैन्यकर्मी कुलभूषण जाघव को भारतीय जासूस बता कर गुपचुप फांसी की सजा सुनाई गई है।

अब तो खुले आंख

आतंकियों के निशाने पर कश्मीर के वे युवा हैं जो अपने को सहज रूप से भारतीय नागरिक मानते हैं। जम्मू-कश्मीर के शोपिया में एक युवा सैन्य अधिकारी की नृशंस हत्या इस बात का संकेत है कि पाकिस्तान परस्त दहशतदगर्द अब आम कश्मीरी जनता के जान के दुश्मन बन गए हैं। कुलगाम जिले के सुरसोना गांव के रहने वाले लेफ्टिनेंट उमर फैयाज महज 22 साल में अफसर बन गए और पहली छुट्टी में अपनी चचेरी बहन की शादी में शामिल होने आए थे। दस नकाबपोशों ने उनको अगवा किया और कुछ दूर ले जाकर गोलियों से छलनी कर दिया। भारतीय सेना के तीनों अंगों में दर्जनों अफसर हैं और लगभग पांच हजार कश्मीरी देशभक्त सेना में दूसरे महत्त्वपूर्ण रैंक पर राष्ट्र की रक्षा में संलग्न हैं। सिरफिरे आतंकी अब उन लोगों को निशाना बना रहे हैं, जिन्हें पहले वे 'अपना भाई' बताते फिरते थे। इंसानियत की हदें पार कर आतंकियों ने लेफ्टिनेंट फैयाज की शवयात्रा पर भी पत्थरबाजी की। जम्मू क्षेत्र के रहने वाले नबील अहमद वानी बीएसएफ की असिस्टेंट कमांडेंट परीक्षा में टॉप रहा। उसे आतंकी धमकी दे रहे हैं कि वह बीएसएफ की नौकरी छोड़ दे वरना इसकी कीमत चुकाने को तैयार रहे। उसकी बहन को भी धमकाया जा रहा है। अब कश्मीर के लोगों को सोचना है कि वे अमन व विकास चाहते हैं अथवा आतंकियों की गोलियां। कश्मीर घाटी धरती का जन्नत कहा जाता है आज वहां पाकिस्तान परस्त कुछ तत्व खून-खराबे पर उतर कर कश्मीरियत व इंसानियत का सफ़ाया कर रहे हैं। आतंक के यंत्रणा भरे दौर में आम अवाम हाशिये पर विपन्न खड़ा है। आतंक के खात्मे के लिए सेना ने अब सर्च अभियान चलाया है। ऐसे तत्वों के खिलाफ 'खोजो और पकड़ो' के बजाय 'तलाश करो और मारो' अभियन चलाया जाना चाहिए।

स्थाई हल ज़रूरी

आजादी के बाद कश्मीर ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। वह वर्तमान से भी खराब दौर से गुज़रा और उबरा भी। 1990 से अप्रैल 2017 तक आतंकी हिंसा, आंदोलन, टकराव से 41 हजार जानें गईं। 5055 सुरक्षा बल जवान शहीद व 13502 घायल हुए। 21965 आतंकी व फिदायीन मारे गए और 13941 स्थानीय नागरिक भी हिंसा की चपेट में आए। अस्सी के दशक में जब घाटी से लाखों कश्मीरी पंडित विस्थापित हुए, तब से आतंकियों को आसानी से शरणगाह मिल गई। 8 जुलाई को उग्रवादियों का नायक बुरहान वानी जब सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में मारा गया तो उसके बाद विरोध प्रदर्शन व पत्थरबाजी का सिलसिला व आतंकी घटनाओं में यकायक तेजी आ गई। इस दौरान हिंसक वारदातों में सेना के कई जवान शहीद हुए और स्थानीय नागरिक भी मारे गए। पाकिस्तान परस्त सत्तालोलुप नेता लोगों को बरगला रहे हैं। सेना पर पत्थरबाजी का अंतहीन सिलसिला, बैंक डकैती, हिंसक प्रदर्शन से हालात बेहद त्रासद है। इंसानियत, कश्मीरियत और जम्हूरियत दफ़्न हो हो रही है। चारों तरफ अराजक वातावरण

से आम अवाम हैरान-परेशान है। उसे भारत विरोधी सांचे में ढालने की लगातार साज़िशें चल रही हैं। यदि अब भी केन्द्र व राज्य सरकार मूकदर्शक और लापरवाह रही तो हालात विस्फोटक बन सकते हैं।

आतंकी वारदातों को शह

एक मई को पूंछ सेक्टर की कृष्णा घाटी के पास भारतीय सेना व बीएसफ के गश्ती दल पर पाकिस्तानी सेना की 647 बटालियन ने अकारण गोलीबारी की। कवर फायर की आड़ में पाकिस्तानी बोर्डर एक्शन टीम ने घात लगा कर दो भारतीय जवानों को मार दिया। यही नहीं उन्होंने सैन्य नियमों, अन्तरराष्ट्रीय कानूनों एवं मानवता की सारी हदें पार करते हुए दोनों जवान के सिर काट दिए। ऐसा पहले भी कई बार किया गया। इस वीभत्स कार्रवाई पर 130 करोड़ देशवासी आग बबूला हैं। पाकिस्तानी सेना ने बड़ी बेशर्मी से घटना से पल्ला झाड़ लिया। जबकि सारे सबूत बता रहे हैं कि सीमा पार से आए लोगों ने ही इस घिनौनी वारदात को अंजाम दिया। हालांकि इस घटना के तत्काल बाद भारतीय सेना ने जवाबी कार्रवाई करते हुए 7 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया। भारतीय सेना विश्व की चौथी सबसे सक्षम मिलिट्री फोर्स है, जो हर स्थिति का माकूल जवाब देने में माहिर है। 1962 का दौर कब का बीत चुका है और सरकार और सेना दोनों की कमान ताकतवर हाथों में है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सेना को जरूरत के अनुरूप सभी कदम उठाने की पूरी छूट दी है। सेनाध्यक्ष विपिन रावत पहले ही कह चुके कि सैन्य शिविर पर आतंकी हमले और अपने जवानों का सिर कलम करने की कायराना हरकत का बदला भारत जरूर लेगा। तिथि और समय का निर्धारण सेना खुद करेगी। इस घटना के 8 दिन बाद ही पाकिस्तानी सेना के सीज फायर उल्लंघन करने पर 8 मई को एक बार फिर भारतीय सेना ने करारा जवाब देते हुए नौशेरा सेक्टर में 7 से भी ज्यादा बंकर ध्वस्त दिए। इससे पाकिस्तान सदमें में है। अब भारत को बड़ी कूटनीतिक और सैनिक कार्रवाई करना होगा। सब्र की सीमा समाप्त हो चुकी है। यह भी स्पष्ट हो चुका है कि भारतीय जवानों का सिर काटने का हुक्म पाकिस्तानी फौज प्रमुख कमर बाजवा ने ही दिया था। आतंकी वारदातों में भी पाकिस्तान का हाथ होने के सबूत हैं। 27 अप्रैल को कश्मीर के कुपवाड़ा में सीमा पार से आए आतंकियों ने एक सैन्य शिविर पर हमला कर कैप्टन सहित तीन जवानों को मार दिया था। यह हमला आठ माह पूर्व उड़ी में हुए हमले की तर्ज पर था, जिसमें आतंकियों ने धोखे से हमला कर बीस भारतीय जवानों को मार डाला। पिछले साल हुए आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना ने सर्जिकल स्ट्राइक कर पीओके में चलाए जा रहे कई आतंकी शिविरों को तबाह कर दिया था। लम्बे समय तक दुबके पाकिस्तान ने फिर दुस्साहस किया है। भारतीय सेना प्रमुख विपिन रावत ने कहा कि दुर्भाग्यपूर्ण पहलू यह रहा कि कुपवाड़ा के आतंकी हमले के बाद मुठभेड़ में मारे गए दुर्दांत आतंकियों के शव मांगने के लिए स्थानीय लोगों ने सैन्य शिविर के बाहर जमकर पथराव किया। कश्मीर घाटी में आतंकी और बैंक लूटने की बढ़ती घटनाओं के मद्देनजर दक्षिण कश्मीर के शोपिया, पुलगामा समेत 20 गांवों में सेना ने सर्च अभियान शुरू कर दिया है। यह अब तक का सबसे बड़ा अभियान है जिसमें सेना व सुरक्षा बलों के 4000 जवान लगे हैं। भारत अब पाकिस्तान की नापाक हरकतें सहन नहीं करेगा। कूटनीतिक स्तर पर जब पाकिस्तान हर अन्तरराष्ट्रीय मंच पर कश्मीर का मुद्दा बार-बार उछालता है तो भारत को भी बलूचिस्तान, सिंध और पीओके के दमनकारी मुद्दे पर काउंटर अटैक से परहेज क्यों होना चाहिए। भारत ने 1971 से अमरीकी चुनौती को दरकिनार कर भी पाकिस्तान के दो टुकड़े कर दिए। आखिर उस घटना के 45 साल बाद भारत असहाय और रक्षात्मक मुद्रा में क्यों हैं ?

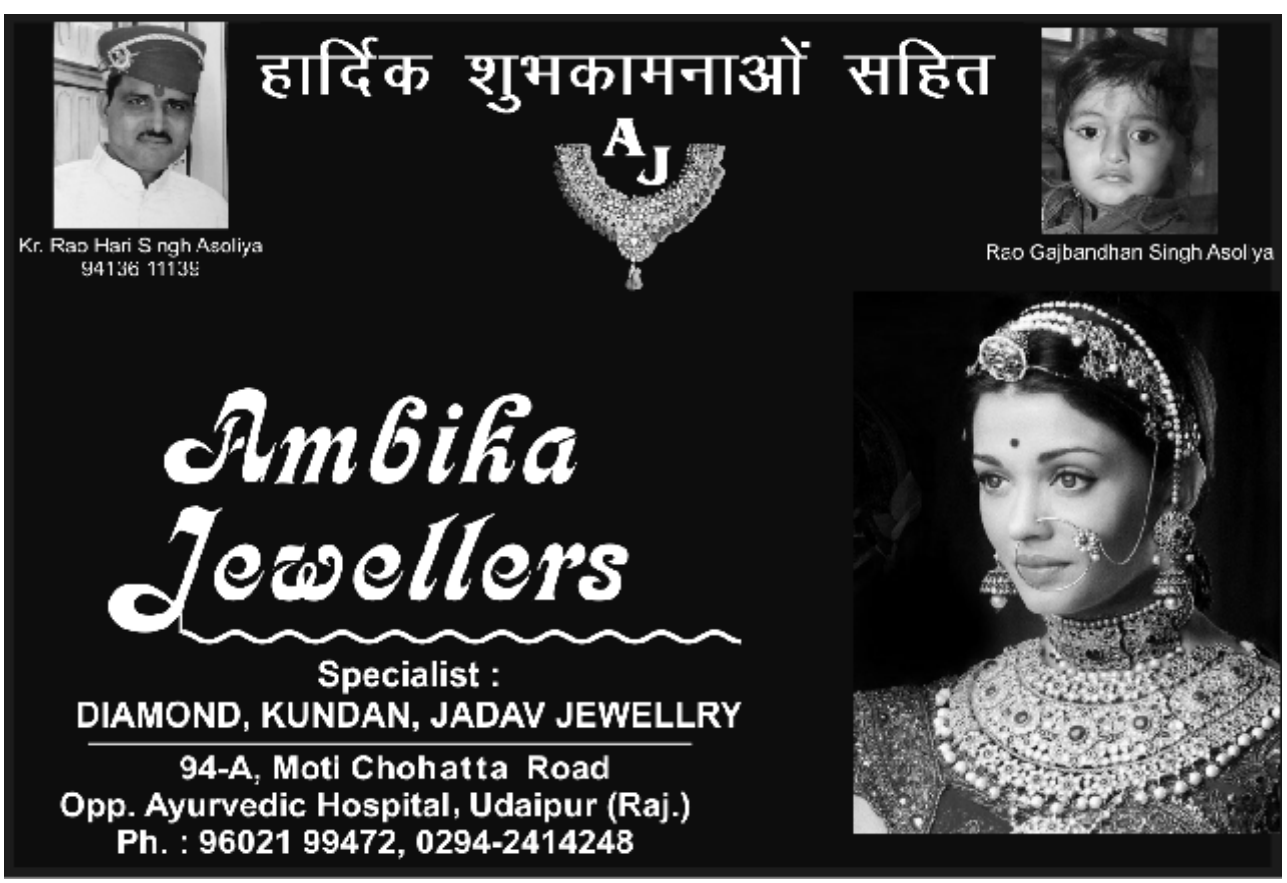

With Best Compliments From

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Factor Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Factor Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

Authorised Service Contractors
Schneider Electric India Pvt. Ltd.

ज़िंदगी लीलता प्रदूषण

- पुष्कर जोशी

बढ़ते प्रदूषण और उसके खतरनाक प्रभावों के सामने इंसान बेबस है। विकास और आधुनिकता की अंधी दौड़ ने जन-जीवन को बौना कर दिया है। पहली बार 3 से 14 जून 1992 को रियो डी जेनेरियो(ब्राजील) में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदूषण से निज़ात पाने के लिए पर्यावरण एवं विकास पर विश्व के कई शासन प्रमुखों ने संयुक्त एकजुटता दिखाई।

प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मना कर इस सोच को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। जीवन और पर्यावरण दोनों ही प्रदूषण से प्रभावित है। आदमी भोजन के बिना कुछ हफ्ते और पानी के बिना कुछ दिन ज़िन्दा रह सकता है, परन्तु हवा के बिना कुछ पल भी जीना असंभव है। पर्यावरण की दृष्टि से भारत को दुनिया का सातवां सबसे ख़तरनाक देश के तौर पर पहचाना गया है। देश में हर साल प्रदूषणजनित रोगों से अनुमानत: बारह लाख से भी ज्यादा लोग अकाल मौत के शिकार हो जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की माने तो दुनिया में दस में से नौ लोग प्रदूषित हवा में सांस लेने का मजबूर हैं। दूषित जल और औद्योगिक अपशिष्टों से नदी, नालों, कुए और सरोवर ही नहीं अपितु भू-गर्भ जल भी विषाक्त होता जा रहा है। वायु जल व ध्वनि प्रदूषण से जनजीवन बदहाल है। सुप्रीम कोर्ट की तल्ख़ टिप्पणी 'बस इंसान की जिंदगी ही सबसे सस्ती, बाकी तो हर चीज़ कठिन हो गई है' के बावजूद न सरकार की नींद टूटती और न ही लोगों की। अगर हमने अभी शुरुआत नहीं की तो ऐसा वक्त आएगा कि जब इसे संभालना असंभव हो जाएगा। केन्द्रीय और राज्य के प्रदूषण निवारक एवं नियंत्रक मंडल पर्यावरण के निमित्त बने कानूनों की सेज पर सोते मिलते हैं। अक्सर ऐसी खबरें आती रहती कि औद्योगिक इकाई मासिक 'सुविधा शुल्क' देकर अपने काम को छिपाने में कामयाब हो जाती है।

प्राथमिकता सूची से पर्यावरण नदारद

मार्च 2017 में सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय स्टेज-3 पेट्रोल वाहनों पर प्रतिबंध लगा कर वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने की कोशिश की। मगर डीजल से चलने वाली बड़ी-बड़ी गाड़ियां अभी भी दौड़ रही हैं। एक गैलन पेट्रोल जलने पर करीब 5720 लाख घन फीट वायु प्रदूषण होता है, जबकि डीजल वायु प्रदूषण पेट्रोल की तुलना में कई गुना ज्यादा होता है। मोटरवाहन के ईंधन और उनसे निकलने वाला धुएं पर तो सरकार व अदालत की निगाह है, परन्तु औद्योगिक इकाइयों पर नियंत्रण के लिए कुछ खास नहीं हो रहा है। उनसे वायु व ध्वनि प्रदूषण ही नहीं, अपितु पानी, जमीन व भूगर्भ भी प्रदूषित हो रहा है। प्रदूषण मापने के सभी पैमाने पीछे छूट रहे हैं। सांस के माध्यम से शरीर में पहुंचने वाले प्रदूषण के कणों का बड़ा भाग तो श्वास नली में जाता है, साथ ही इसका एक छोटा हिस्सा नर्व फाइबर स्नायु तंत्र से होते हुए दिमाग में भी पहुंचता है। इससे कई बीमारियों के अलावा दिल ही नहीं दिमाग को भी गंभीर खतरा रहता है। दीवाली के बाद दिल्ली में धुंध और कोहरे की ऐसी घनी परत छाई कि सांस लेना भी दुभर हो गया था। स्वच्छ हवा का स्तर पिछले बीस वर्षों में बेहद भयावह रूप से खराब हुआ है। प्रदूषित हवा से होने वाली हर तीन में से दो मौतें भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया में होती है। देश की राजधानी दिल्ली चुनिन्दा इक्कीस शहरों में से तीसरा सबसे ज्यादा प्रदूषित शहर है। शहर ही नहीं गांव भी औद्योगिक इकाइयों और वाहनों के कार्बन डाइऑक्साइड, मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड व सल्फर डाइऑक्साइड के उत्सर्जन से गैस चैम्बर में तब्दील हो रहे हैं। दमा, डायबिटीज ही नहीं अपितु कई संक्रामक रोग इंसानों पर एक साथ टूट पड़ते हैं। व्यक्ति या तो परलोक सिधार जाता या तिल-तिल मरने को मजबूर हो जाता है। पीएम-10 और पीए-2.5 के मानक कोसों पीछे छूट गए हैं।

> जीवन को प्रदूषण की चपेट से बचाना है तो औद्योगिक विकास और जीवन के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। इसके लिए कड़े कानून बनाने होंगे। सरकार और जनता दोनों को मिल कर पर्यावरण बचाने के लिए आगे आना होगा। क्योंकि जीवित रहेंगे तभी तो विकास करेंगे और जीएंगे तभी, जब सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा, पीने के लिए साफ पानी और खाने के लिए प्रदूषण मुक्त आहार मिलेगा।

न शुद्ध हवा न साफ पानी

औद्योगीकरण और विकास के राजपथ पर कुलांचे भरते देश को पता ही नहीं कि कितने मासूम लोग प्रदूषण की बलि चढ़ रहे हैं। केमिकल व पेस्टीसाइड के प्रभाव से साथ ही भूमितल और भू-गर्भ के जलस्रोत बेहद ज़हरीले हो गए हैं। लोगों को न शुद्ध हवा नसीब हो पा रही है और न ही शुद्ध जल। तकरीबन हर जलस्रोत में फ्लोराइड, नाइट्रेट, लेड, कैडमियम, जिंक, क्रोमियम, कॉपर, मर्करी, सल्फर जैसे खतरनाक केमिकल व हैवी मैटल की भरमार है। पानी का पीएच और हार्डनेस अपनी टोलरेन्स लिमिट कब का पार कर चुका है। भूजल में खतरनाक रसायन और हैजार्ड्स वेस्ट मैटेरियल्स के ज़हरीले रिसाव से पीने लायक तो दूर नहाने लायक भी पानी नहीं रहा। गंगा, यमुना जैसी पवित्र नदियां अपशिष्टों का नाला बन गई हैं। ताल-तलैया सभी प्रदूषित हैं, क्योंकि बड़े गटर उन्हीं में समा रहे हैं। समंदर भी प्रदूषण से अछूते नहीं रहे। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले ज़हरीले पानी और रासायनिक कचरे के निस्तारण के माकूल इंतजाम ही नहीं है। सर्वोच्च अदालत ने सभी राज्यों को आदेश दिया था कि अगर कोई फैक्ट्री महीने के भीतर पोल्यूटेड एफ्ल्युएंट

ट्रीटमेन्ट प्लान्ट सुचारू नहीं चलाती तो उसकी बिजली आपूर्ति बंद कर दी जाए। ज्यादातर इटीपी काम नहीं कर रहे हैं। इलाके के इलाके तबाह हो चुके हैं। आसपास के खेत-कुए, नदी-नाले और सरोवर-तालाब प्रदूषित हो चुके परन्तु जिम्मेदार अफसर व कारिंदे जेबें भरने में मशगूल हैं। भूगर्भ जलस्रोत इतने बदहाल हैं कि उनका असर आने वाले पचास साल बाद भी कायम रहेगा, भले ही वे आज बंद कर दिए जाएं। कई जगह सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर हैजार्ड्स इण्डस्ट्रीज को बंद कराया गया, परन्तु दशकों बाद भी इलाकों के हालत नहीं सुधरे हैं। मनी और पोलिटिक्स पॉवर की कॉरपोरेट लॉबी का सामान्य आदमी मुकाबला करे भी तो कैसे ? सत्ता के शिखरों तक इस लॉबी की पहुंच है।

ये कैसी उदासीनता?

पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण के प्रति शासन, प्रशासन और राजनेता कभी गंभीर नहीं रहे। अदालत की लंबी न्याय प्रक्रिया प्रार्थियों को पस्त कर देती है। अदालत उसी मामले की सुनवाई करती है, जो उसके सामने आता है, संज्ञान लेकर ऐसे मामले उठाने के उसके उदाहरण नगण्य हैं और सब मामलों में निष्पक्ष न्याय होगा, इसकी क्या गारंटी ? इस दृष्टि से तैंतीस बरस पहले 1984 में हुई भोपाल गैस त्रासदी याद आती है। दो व तीन दिसम्बर की सर्द रात में मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में शहर की पूरी आबादी सड़कों पर निकल आई। क्योंकि मल्टीनेशनल अमेरिकी कंपनी यूनियन कार्बाइड में ज़हरीली मिथाइल आइसो साइनेट गैस का बड़े पैमाने पर रिसाव हो गया। इस गैस त्रासदी को दुनिया की सबसे बड़ी मानव निर्मित त्रासदी करार दिया गया, जिसमें हजारों लोग बेमौत मारे गए और पांच लाख से ज्यादा प्रभावित हुए। धन-कुबेरों के मोटे मुनाफ़े के सामने इंसान किस कदर बौना व सस्ता है। यह त्रासदी सबूत है, उसी ग़लीज़ और गंदी सरकारी सोच का। वहां के वाशिंदे आज भी कराहते-रेंगते मरने का मज़बूर हैं। तत्कालीन सरकार ने गैस पीड़ितों के कानूनी अधिकार को छीनकर गुपचुप अदालत में समझौता कर लिया। इसमें यूनियन कार्बाइड को 3.3 बिलियन डॉलर(लगभग 4500 करोड़ रुपये) के क्लेम के बदले महज़ 470 मिलियन डॉलर मतलब 715 करोड़ रुपये का मुआवजा देना पड़ा और बदले में उसके खिलाफ मुआवजा दावे के साथ लापरवाही से हत्या करने वाला आपराधिक केस भी समाप्त होना था। कहते हैं कानून के हाथ लम्बे हैं, परन्तु कानून की तराजू लिए बैठा शख्स भी तो संवेदनशील हो तब है ना। इस मामले में अदालती मुहर लगाने वाले मुख्य न्यायाधीश रिटायरमेन्ट के बाद इंटरनेशनल कोर्ट में पुरस्कार स्वरूप जज की कुर्सी पर जा बैठे। भोपाल के कातिलों के खिलाफ भारतीय दंड विधान की धारा 304-द्वितीय के दर्ज अपराध की धारा को बदलकर 304-ए में बदलने से अपराध की गंभीरता और सज़ा दोनों में आश्चर्यजनक कमी आ गई। पहली धारा में 10 साल की सजा तो दूसरी में मात्र दो साल की सज़ा का प्रावधान है। मुख्य अभियुक्त वारेन एंडरसन तो सरकार की शह से ही देश छोड़ भाग गया। अभी तक न पीड़ितों को उचित मुआवजा मिल पाया है, न उस हादसे के बाद पैदा हुए खतरों से पार पाने के उपाय। अब भी भोपाल के यूनियन कार्बाइड कारखाने में हजारों टन ज़हरीला मलबा दबा या खुला पड़ा है। सूरज की रोशनी, बरसात व हवा से रासायनिक तत्व भूजल व आसपास के इलाकों में फैल रहे हैं। मगर न तो राज्य सरकार को इसकी फिक्र है और न ही केन्द्र को। प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान में भी औद्योगिक कचरे और प्रदूषण से मुक्ति का पहलू शामिल ही नहीं है। भोपाल त्रासदी एक नज़ीर है, अन्यथा कमोबेश देश की कई औद्योगिक इकाइयों की तस्वीर भी इससे अलग नहीं है। अगर जीवन को बचाना है तो औद्योगिक विकास और जीवन के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। इसके लिए कड़े कानून बनाने होंगे, सरकार और जनता दोनों को पर्यावरण बचाने के लिए आगे आना होगा। क्योंकि जीवित रहेंगे तभी तो विकास करेंगे और जीएंगे तभी, जब सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा, पीने के लिए साफ पानी और खाने के लिए शुद्ध व स्वच्छ आहार मिलेगा।

जानकारी

अमेजन विश्व की सबसे विस्तृत नदी

कई आश्चर्यों व रहस्यों से भरपूर है अमेजन नदी। यह पेरू के एंडीज़ पर्वत से निकल कर ब्राजील के भूभाग से गुजरती हुई एटलांटिक महासागर में समा जाती है। अमेजन के उद्गम स्थल पर पानी की एक-एक बून्द टपकती है, वह भी 20 सेकंड के अन्तराल पर। बाद में इस नदी में पानी की आवक बढ़ जाती है और इसमें 200 सहायक नदियां मिल कर इसे अथाह जल राशि से भर देती है। यह विश्व की सबसे चौड़ी नदी है और लम्बाई में दूसरी। अकेली यह नदी नील, मिसीसिपी और यांसी से भी अधिक पानी का वहन करती है।

अनेक स्थानों पर तो इस नदी का सामने वाला किनारा देखना ही संभव नहीं है। इसकी अधिकतम चौड़ाई 140 किलोमीटर है। इसके तटीय इलाकों में सघन वन क्षेत्र है, जहां 300 फीट से भी ऊंचे वृक्ष हैं और कई इलाकों में सूरज की सीधी रोशनी भी नहीं पड़ती। अकेले अमेजन के जंगल विश्व को 20 प्रतिशत ऑक्सीजन की आपूर्ति करते हैं।

शिक्षा की साख पर सवाल

विश्वविद्यालयों में राष्ट्र विरोधी नारों की गूंज, शिक्षक चयन प्रक्रिया में घोटाले और परीक्षा से पहले प्रश्नपत्रों की बिक्री के बाज़ार लगना, शिक्षा नीति-नियामकों की गहरी नींद का परिचायक है। भारत के भाग्य और भविष्य का निर्माण करने वाले इन विश्वविद्यालयों के कर्म-धर्म को खंगालना अब ज़रूरी है, क्योंकि इनसे जुड़ी है, राष्ट्र की अस्मिता और चेतना।

-नंदकिशोर

विश्वविद्यालय सर्वोच्च ज्ञान केन्द्र हैं। शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य है - व्यक्ति को सुसंस्कृत, शिक्षित, समुन्नत और सर्वतोमुखी बनाना। लेकिन पिछले वर्षों मध्य प्रदेश में हुआ व्यापमं घोटाला, जेएनयू शिक्षा संकुल में देश विरोधी भावनाओं का खुलेआम इज़हार और हाल ही राजस्थान विश्वविद्यालय में पेपरलीक घोटाले से तो लग रहा है कि देश में उच्च शिक्षा के केन्द्र अनुशासनहीनता और अनियमितताओं के खुदरा बिक्री स्टोर तथा सियासत के अड्डे बन चुके हैं। राजनीति, व्यवसाय, समाज, मज़हब और रसूखदारी के क्षेत्रों की तरह शिक्षा जगत भी अब चहेतों को लाभ दिलाने एवं पैसों के लालच में अपनी प्रतिष्ठा तक को दांव पर लगाने को तैयार है। बस चाहिए खरीददार। चौंकाने वाले ताजा घटनाक्रम के अनुसार 17 अप्रैल को राजस्थान पुलिस के स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप ने अब तक के सबसे बड़े पेपर लीक रैकेट को गिरफ्त में लिया है। जिसमें राजस्थान युनिवर्सिटी के एक विभागाध्यक्ष, बीकानेर युनिवर्सिटी के एक महाविद्यालय के प्रिंसिपल, प्रोफेसर, परीक्षा नियंत्रक के पीए, रिटायर्ड प्रोफेसर, गोपनीय शाखा के कर्मचारी, बुक प्रकाशक, कोचिंग सेन्टर संचालक तथा छात्र सहित ढाई दर्जन से ज्यादा लोग शामिल हैं। इस प्रकरण ने विश्वविद्यालयों की साख को बट्टा तो लगाया ही, 1200 से अधिक कॉलेजों के लाखों छात्र-छात्राओं व अभिभावकों के भरोसे को भी तार-तार कर दिया।

व्यवस्था में सुराख

पेपरलीक मामले का भाण्डा फूटने से पहले ही एसओजी को व्हाट्सअप पर किसी विश्वविद्यालय के प्रश्न पत्र मिले। करीब सौ से अधिक लोगों से पूछताछ के बाद प्रदेश के 12 स्थानों पर एक साथ छापे मारे गए। शिक्षकों, कोचिंग संस्थानों, पुस्तक प्रकाशकों, गोपनीय शाखा से जुड़े कर्मचारियों की मिलीभगत से शिक्षा संस्थानों पर अनेक सवाल खड़े हो गए हैं। इससे कुछ माह पहले ही जोधपुर विश्वविद्यालय द्वारा कर्मचारी चयन में अनियमितताएं सामने आई थी। इसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के नामी-गिरामी प्रोफेसर पकड़ में आए, जिन पर अदालत में मामला लम्बित है। जब कर्मचारी चयन में ही घोटाले होते हों, तो परीक्षाएं भला कैसे अछूती रह सकती हैं।

पाली के एक निजी महाविद्यालय में तो प्राध्यापक ही सामुहिक नकल करवाते पकड़ में आया। एग्जाम कन्वीनर पेपर सलेक्ट करवाने के लिए तीन प्रोफेसरों का चयन करता है। जिनसे अलग-अलग सीलबंद लिफाफे एग्जाम कंट्रोलर के पास पहुंचते हैं। हाईपावर कमेटी उनमें से किसी एक का चयन कर प्रेस को भेजती है। कन्वीनर व सलेक्टर गोपनीय शाखा के जरिए पता कर लेते हैं कि किस प्रोफेसर का पेपर सलेक्ट

हुआ है। बस, फिर पैसों के लालच और परिचित व परिजनों को उपकृत करने के लिए पेपर लीक खेल शुरू हो जाता है और व्हाट्स एप से वह चहेतों तक पहुंच जाता है। इसमें लाखों के वारे-न्यारे होते हैं। यह हेराफेरी वर्षों से निर्बाध चल रही है। इसमें सियासत की शह का भी अहम् रोल है।

नीट परीक्षा भी संदेह के घेरे में

देश भर में 7 मई को मेडिकल कॉलेजों के एमबीबीएस व डेन्टल कोर्स एडमिशन परीक्षा (नीट) का फर्जी पेपर ई-मेल से आने और 35 लाख रुपयें में सौदा होने की पुख्ता जानकारी पर प्रदेश की एटीएस टीम ने राजस्थान नेटवर्क के मास्टर माइंड सहित पांच शातिरों को गिरफ्त में ले लिया इस गिरोह का नेटवर्क पूरे देश के प्रमुख शहरों में है। राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे शातिरों को दबोचने की कार्रवाई चल रही है दिल्ली से भी कुछ लोगों को हिरासत में लिया गया है। असली हो या नकली पेपर लीक कर छात्रों के भविष्य से खिलावाड़ कर लाखों रुपये हड़पने वाले गिरोह का पर्दाफाश होना जरूरी है।

साइंस टेक्नोलॉजी, कॉमर्स-बिजनेस, इण्डस्ट्री-मार्केट, एडमिनिस्ट्रेशन-मैनेजमेन्ट का देश में बड़ा रोल है। मनी-एस्टेट का देश के विकास में काफी योगदान है। ये बहुत कुछ हो सकते हैं, परन्तु सब कुछ नहीं। व्यक्ति व जीवन की कसौटी दूसरी है, जिस पर गंभीर चिंतन की जरूरत है। इसलिए हमें देश के नव-निर्माण के लिए निष्णात शिक्षाविद् के साथ चिंतक दृष्टा भी चाहिए।

राजनीति का अखाड़ा

युनिवर्सिटी कैम्पस राजनीति के अखाड़े और अनियमितताओं के गढ़ बन गए हैं। कुछ विश्वविद्यालय तो देश-विरोधी भावनाओं की प्रोसेसिंग और मार्केटिंग के मॉल हैं। दशकों पूर्व राष्ट्र नेता कहते थे कि विश्वविद्यालय उच्च स्तरीय ज्ञान और टेक्नोलॉजी के नए तीर्थ हैं। आज के हालात से नहीं लगता कि उन नेताओं का कथन सार्थक हो रहा है। शिक्षा के पवित्र मंदिरों में नशाखोरी, चाकू-तमंचे लहराना और किसी खास विचारधारा या मकसद से प्रेरित देश विरोधी नारे लगाते नौजवानों का हुजूम इशारा करता है कि शिक्षा के बड़े केन्द्र परिवार और समाज के नासूर बनते जा रहे हैं और जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। देश का दुर्भाग्य है कि जिन्होंने शिक्षा-संस्कार और उच्च आदर्शों का ककहरा भी नहीं सीखा, उनके पास शिक्षा नीति के निर्धारण की बड़ी जिम्मेदारी है। महर्षि अरविन्द ने ठीक कहा था कि -'विवेक, तुलना व विभेद तथा अभिव्यक्ति क्षमता के क्षरण पर ही परिवार, समाज और देश का बौद्धिक पतन होने लगता है।' शिक्षा का अर्थ सिर्फ रोजगार सृजन ही नहीं है। व्यक्ति रोजगार इस उम्मीद से करता है कि वह शांतिपूर्ण जीवन जी सके। मगर वह जीवन क्या है, यह ज्ञान उसे आज की शिक्षा से नहीं मिल रहा। हर कीमत पर सम्पदा हासिल करना और समाज व राष्ट्र को भूलकर सिर्फ अपने और परिवार की सुख-सुविधाओं के अम्बार लगाने के लिए व्यक्ति आठों पहर जुटा रहता है और इस निमित्त दुर्गुणों व व्यसनों का आश्रय लेने पर रत्ती भर भी न झिझक है, न संकोच। क्या यही जीवन का लक्ष्य और शिक्षा का अर्थ है ? जिधर भी नज़र उठाएं मनुष्यता और जीवन का मौलिक ओझल गायब है। इसलिए शिक्षा को सार्थक बनाने के लिए सरकार और नीति- नियामकों को पुनर्विचार करना होगा।

उ.फ़! ये लू और गर्मी

झुलसाती तेज गर्म हवाओं और परेशान करते लू के थपेड़ों से जन जीवन ठहर-सा गया है। सभी प्राणी छाया और दो घूंट पानी की तलाश में हैं। सूर्यदेव के रौद्र रूप से जीव-जंतु ही नहीं, वनस्पति भी लाचार है। सीमेन्ट-कंक्रीट के आशियानों में बिजली गुल होते ही भारी बेचैनी हो जाती है।

इस बार अनुमान से कहीं अधिक गरमी है। ऐसे में जरूरी है कि गरमी और लू से बचने के लिए जरूरी उपाय अपनाएं जाएं, ताकि किसी तरह की दिक्कत पैदा न हो। साल दर साल बढ़ती गरमी से जहां वातावरण प्रभावित हो रहा है, वहीं मनुष्य के स्वास्थ्य पर भी कुप्रभाव पड़ रहा है। इस बार कई लोग लू से मृत्यु का ग्रास बन चुके हैं। दरअसल, वातावरण के बढ़ते तापमान का सीधा प्रभाव शरीर पर पड़ता है। शरीर सैंतीस डिग्री सेल्शियस तापमान ही सहन कर सकता है।

ऐसे में जब तेज धूप से शरीर का तापमान काफी ऊपर पहुंच जाता है तब खून भी गरम होने लगता है। हाइपोथैलेमस मस्तिष्क का ही एक हिस्सा है, जो शरीर के तापमान को 95 से 98.6 फॉरेनहाइट के बीच नियंत्रित करता है, लेकिन जब शरीर का तापमान ज्यादा बढ़ जाता है तब असहनीय गरमी की वजह से हाइपोथैलेमस असामान्य ढंग से काम करने लगता है। इससे स्वास्थ्य संबंधी कई दिक्कतें होने लगती हैं। आमतौर पर जब वातावरण की गरमी शरीर में प्रवेश कर जाती है तो इसे ही सन स्ट्रोक या लू लगना कहा जाता है। लू लगने से किडनी, दिमाग और दिल पर बुरा प्रभाव पड़ता है। नाड़ी और सांस की गति तेज होती है। रोगी की जान को भी खतरा रहता है।

लू के लक्षण

जब तापमान बढ़ने लगता है, तब गरमी की वजह से शरीर में पानी और नमक की कमी होने लगती है और लू लगने की आशंका बढ़ जाती है। गरम हवा के थपेड़ों और बढ़े हुए तापमान से खासकर उन लोगों को खतरा अधिक रहता है, जो खुले में काम करते हैं। मजदूर, किसान, बच्चों, बूढ़ों पर लू का जल्दी प्रभाव पड़ता है। कमजोर प्रतिरक्षातंत्र वाले, दुर्बल और धूप में अधिक देर तक रहने वालों को भी लू जल्दी लगती है। लू का शरीर के अंगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

गरमी की वजह से कुछ अन्य समस्याएं भी पैदा होती हैं। कुछ लोगों के खून में पोटेशियम की मात्रा बढ़ जाती है। इसकी वजह से हृदय संबंधी समस्या हो सकती है। लू के प्रभाव से शरीर में अत्यधिक गरमी महसूस होने लगती है। थकावट और प्यास अधिक लगती है। कई बार रक्तचाप भी कम हो जाता है। तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ, उल्टी, चक्कर, दस्त, सिरदर्द के साथ हाथ-पैरों में कमजोरी महसूस होने लगे तो समझ लें कि आप लू की चपेट में हैं।

राहत के उपाय

लू लगने पर चिकित्सक की सलाह तो लें ही। इसके अलावा कुछ उपाय अपनाकर भी मरीज को राहत पहुंचाई जा सकती है। लू लगने पर मरीज को ऐसी जगह लिटाएं जहां अधिक ठंडक हो। थोड़ी-थोड़ी देर पर मरीज को पानी पिलाते रहें। लगातार तरल पदार्थ जैसे-नमक व चीनी का घोल व शर्बत आदि देकर शरीर में पानी की कमी को कम करने की कोशिश करें। ठंडा कपड़ा शरीर पर रखने से भी आराम मिलता है। इससे शरीर के तापमान को कम करने में मदद मिलती है। आंखों पर गुलाब जल में भीगी रुई रखने से भी ठंडक मिलती है। हथेलियों व पैरों के तलवों को ठंडे पानी के कपड़े से पोंछते रहें तो भी आराम मिलेगा।

कैसा हो आहार

आमतौर पर देखा जाता है कि लोगों को पता ही नहीं होता कि लू से पीड़ित व्यक्ति के लिए किस तरह का आहार दुरुस्त रहेगा। लू लगने के

बाद व्यक्ति का शरीर कमजोर हो जाता है और किसी तरह का सख्त आहार वह पचा नहीं सकता। इसलिए मरीज को ऐसा आहार दें जो जल्दी पच जाए साथ ही शरीर को कपड़े से ढंक कर बाहर निकलें तो काफी हद तक त्वचा को झुलसने से बचाया जा सकता है। बर्फ का पानी न पिलाएं क्योंकि इससे लाभ नहीं हानि ही होगी इमली के बीज को पीस कर उसे पानी में घोल कर छान लें और इस पानी में शक्कर मिलाकर पिएं। धनिए को पानी में डाल कर रखें। फिर मसल कर और छान कर पानी में थोड़ी चीनी मिला कर उसका सेवन करें। गर्मियों में कच्चे आम का शर्बत या आम का पना भी लाभदायक है।

जहां तक तो हो सके घर के तापमान को संतुलित रखें। तेज धूप में बाहर न निकलें और जरूरी हो तो गर्म हवा से बचाव के लिए छाते के साथ चेहरे को कपड़े से ढंक कर निकलें। तेज रंग के और तंग कपड़ों को पहनने से परहेज करें। सूती और ढीले कपड़ें पहनें। न खाली पेट बाहर निकलें और न अधिक देर तक भूखा रहें। पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं और घर से भी पानी साथ लेकर निकलें। हर दो-तीन घंटे में पानी पीते रहें। पानी को उबालकर और छानकर ठंडा होने पर पिएं, क्योंकि स्वास्थ्य पर दूषित पानी का भी कुप्रभाव पड़ता है। ककड़ी, खीरा, पुदीना, तरबूज, संतरा, अंगूर आदि मौसमी फलों का सेवन अधिक करें।

- राजकुमार सिंह

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

रितेश जैन

मै. ऋषि एन्टरप्राइजेज

(रेल्वे कॉन्ट्रेक्टर)

मकान नं. 2, न्यू बैंक कॉलोनी, लोकेन्द्र भवन कम्पाउण्ड, रतलाम-457001 (म.प्र.)

फोन : 07412-232858

ऋषिकेश

श्रद्धा और रोमांच से भरपूर चार धाम यात्रा

–जगदीश सालवी

अक्षय तृतीया 28 अप्रैल से उत्तराखंड स्थित गंगोत्री और यमुनोत्री के कपाट खुल गए और इसी के साथ श्रद्धालुओं की चारधाम यात्रा प्रारंभ हो गई। चारधाम हैं - केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री। इस यात्रा में श्रद्धालुओं को मानसिक शांति तो मिलती ही है, मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं। साथ ही रोमांच से भरपूर प्रकृति के दर्शन का भी अवसर मिलता है। गंगा-यमुना की सहायक अलकनंदा, मंदाकिनी, रामगंगा, सरस्वती आदि का प्रवाह, पर्वत शिखरों पर चांदी जैसे चमचमाते हिमखंड, विशाल गहरी खाइयां, घने जंगल, विविध प्रजातियों के पशु-पक्षी, उमड़ते बादल और इनके बीच चहकता जनजीवन।

चारधाम की यात्रा का पहला पड़ाव है – ऋषिकेश। यहां तीन और से पर्वतश्रृंखला और बीच में गंगा का प्रवाह सदियों से पर्यटकों और श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहां का सबसे प्राचीन, भारत मंदिर है। कहते हैं इसे श्रीराम के अनुज ने बनवाया था।

इसी तरह लक्ष्मण झूले को लक्ष्मण से जोड़ा जाता है। वर्तमान में लोहे के मोटे तार से बना यह झूला-पुल अंग्रेजों ने 1939 में बनवाया था। महाभारत काल में यहां का राजा सुबाहु था। वर्ष 1901 में यहां की आबादी मात्र नौ सौ थी। कुछ वर्ष पूर्व टिहरी परियोजना से विस्थापितों ने ऋषिकेश में जमकर मकान बनाये। अब ऋषिकेश की आबादी लगभग दो लाख से अधिक है। यहां के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं – रामझूला, त्रिवेणीघाट, स्वर्गाश्रम, मुनि की रेती आदि। ऋषिकेश सड़क और रेलमार्ग से देहरादून और हरिद्वार से जुड़ा है। यह हरिद्वार से 24 किलोमीटर दूर है।

केदारनाथ

ऋषिकेश से केदारनाथ की दूरी लगभग दो सौ किलोमीटर है। कहते हैं कि सतयुग में उपमन्यु ने यहीं भगवान शंकर की आराधना की। द्वापर में पांडवों ने तपस्या की। महर्षि रूपधारी भगवान शंकर के विभिन्न अंग पांच स्थानों पर प्रतिष्ठित हुए। कहते हैं कि इस मंदिर का जीर्णोद्धार आदि शंकराचार्य ने कराया था। यहीं उन्होंने देह त्याग किया। यहां ठहरने के लिए अनेक धर्मशालाएं हैं। लेकिन यात्री तीन किलोमीटर नीचे रामवाड़ा में रूकते हैं। प्रत्येक वर्ष जाड़े के दिनों में केदारनाथ जी उखीमठ आ जाते हैं। यहीं छह महीने उनकी पूजा होती है। वर्ष 2013 में प्राकृतिक आपदा से यहां जानमाल का बहुत ज्यादा नुकसान हुआ था। हालांकि बाद में उत्तराखंड सरकार ने व्यापक स्तर पर पुल-पुलियाओं, सड़कों और अन्य आवश्यक स्थानों पर स्थानों पर पुनर्निर्माण के कार्य शुरू कर जनसुविधाओं का विस्तार किया। आश्चर्य तो यह है कि इस भीषण त्रासदी में भी मंदिर को कोई क्षति नहीं पहुंची। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 3 मई को मंदिर के कपाट खुलने के साथ ही बाबा के दर्शन किए।

बद्रीनाथ

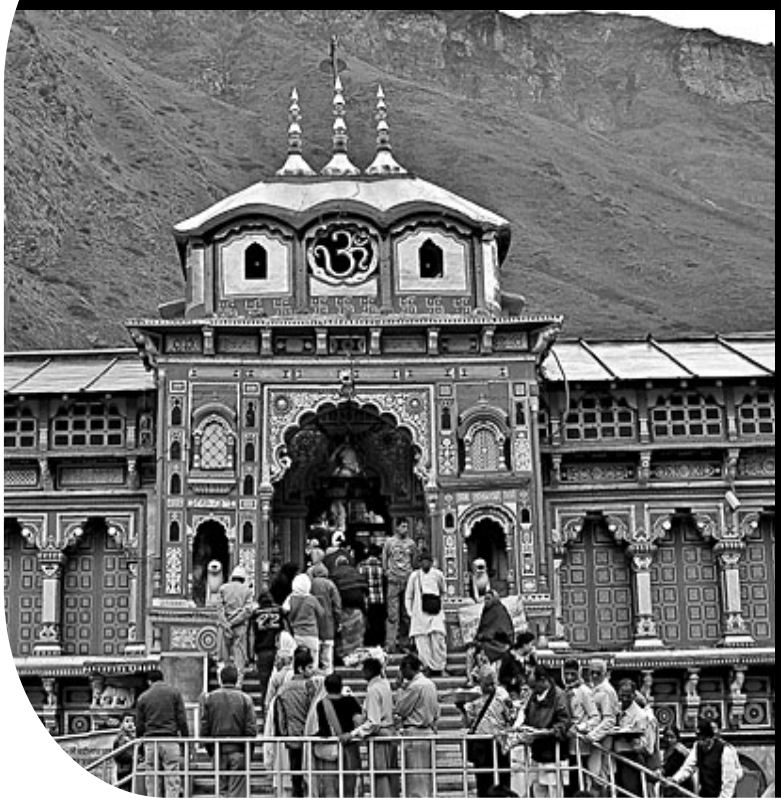

भगवान बद्रीनाथ का मंदिर अलकनंदा नदी के किनारे है। यहां सनातनदेव, परमात्मा नारायण विराजमान हैं। मंदिर के दोनों बाजुओं में विशाल नर-नारायण पर्वत हैं। इसके कपाट 6 मई को खोले हैं। कहते हैं भगवान विष्णु के अवतार नर और नारायण ने यहीं तपस्या की थी। मंदिर में बद्रीनाथ ने मूर्ति की स्थापना पहली बार देवताओं ने की थी। उन्हें अलकनंदा नदी के बीच से मूर्ति मिली थी। देवर्षि नारद इसके प्रथम अर्चक बने। जब देश में बौद्धों का उदय हुआ, उन्होंने मंदिर पर अधिकार कर लिया। आदि शंकराचार्य ने बौद्धों से इसे मुक्त कराया। बौद्ध मूर्ति को अलकनंदा में फेंककर चीन की ओर भाग गये। शंकराचार्य ने इसे नदी से निकालकर फिर से मंदिर में स्थापित किया। इस घटना के एक हजार वर्ष पश्चात् मंदिर का पुजारी ही बद्रीनाथ की प्रतिमा को तप्तकुंड में फेंककर चला गया। चूंकि उस समय यहां कम श्रद्धालु आते थे, इसलिए पुजारी को भोजन के लाले पड़े रहते थे। इस बार रामानुजाचार्य ने तप्तकुंड से निकलकर मूर्ति स्थापित की। शीतकाल में प्रतिमा जोशीमठ लाई जाती है। यहीं उनकी अर्चना होती है। उस दौरान बद्रीनाथ क्षेत्र मानवरहित हो जाता है। वहां सिर्फ सेना के जवान डटे रहते हैं। प्राचीनकाल में बदरी(बेर) पेड़ों की बहुलता के कारण इस क्षेत्र का नाम बद्रीनाथ पड़ गया। पास ही में भारत की उत्तरी सीमा का अंतिम गांव भी है।

यमुनोत्री

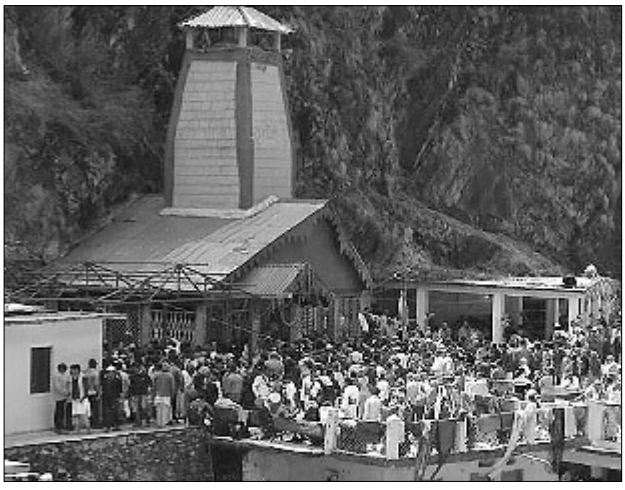

ऋषिकेश से यह स्थान 165 किलोमीटर दूर है। यहां कालिंदी पर्वत से बर्फ पिघलकर पानी के रूप में कई धाराओं में गिरती है। इसी कारण यमुना का एक नाम कालिन्दी भी है। हिमालय में गंगा और यमुना की धाराएं एक हो गई होती लेकिन दोनों नदियों के बीच दंड पर्वत खड़ा है। सूर्यपुत्री और यमराज की बहन यमुना का उद्गम स्थल अत्यंत भव्य है। इस स्थान की शोभा और ऊर्जस्विता अद्भुत है।

गंगोत्री

समुद्र तल से दस हजार फुट की ऊंचाई पर है – गंगोत्री। पवित्र गंगा यहीं से निकलती है। वैसे गंगाजी का उद्गम स्थल गोमुख है लेकिन अधिकतर तीर्थयात्री गंगोत्री से ही स्नान पूजा कर लौट आते हैं। गोमुख यहां से लगभग 20 किलोमीटर आगे है। गंगोत्री में गंगाजी का भव्य मंदिर है। मंदिर परिसर में ही राजा भगीरथ, यमुना, सरस्वती और भैरवनाथ का मंदिर है। यहां एक विशाल शिला है। कहते हैं कि इसी शिला पर बैठकर राजा भगीरथ ने तप किया था। गंगोत्री से नीचे गंगा से केदार नदी का संगम होता है। यहां से एक किलोमीटर आगे काफी ऊंचाई से गंगाजी शिवलिंग पर गिरती हैं। इस स्थान को 'गौरीकुंड' कहते हैं। गंगोत्री क्षेत्र में गंगाजी 44 फुट चौड़ी और लगभग तीन फुट गहरी है। आसपास देवदार और चीड़ के जंगल हैं।

कब होगा अपना सस्ती दवा का सपना.

-महेन्द्र दीक्षित

मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया ने हाल ही में डॉक्टरों को सिर्फ जेनेरिक दवाएं लिखने का आदेश दिया है। इससे चिकित्सा जगत में जेनेरिक दवाओं पर बहस शुरू हो गई है। दवा कारगर न होने पर मरीज इसका दोषी डॉक्टर को ठहराएगा। डॉक्टरों की राय में सरकार एनपीपीए के जरिए स्टेंट की तरह दवाओं की कीमतें कम कर सकती है। उनका मानना है कि जेनेरिक दवाएं लिखने के साथ ही सरकार ब्रांडेड लिखने की छूट भी दे, क्योंकि जब देश में जेनेरिक और गुणवत्तापूर्ण दवाएं है ही नहीं, तो इस तरह के आदेश का क्या मतलब ? इसलिए पहले दवाओं की गुणवत्ता और जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। अभी भी देश के लोगों को जेनेरिक दवाओं पर भरोसा नहीं है।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी सूरत में 400 करोड़ की लागत से अत्याधुनिक अस्पताल का उद्घाटन करते हुए कहा कि वे गरीबों को सस्ती दवाएं उपलब्ध कराने के लिए जल्द ही नया कानून बनाएंगे। देश में ब्रांडेड दवाओं का सालाना कारोबार 3700 करोड़ डॉलर(2,39,000 करोड़ रुपये) का है, जबकि जेनेरिक दवा का महज़ 45 हजार करोड़ रुपये। दवा बाजार में एक छोर पर पीड़ित व उनके परिजन होते हैं, तो दूसरे पर मोटा मुनाफा कमाने वाली मेडिसिन कंपनियां व डॉक्टर। गरीब और मध्यम वर्ग ब्रांडेड दवाओं और बड़े अस्पतालों के बीच शीर्षासन करता दिखलाई पड़ता है। मरीज की तीमारदारी में लगे परिजन सब कुछ लुटा कर भी जान की भीख मांगते हैं। रहम और राहत की उम्मीदें पालना इस क्षेत्र में बड़ा मुश्किल हो रहा है। सरकारी चिकित्सालयों के हालात तो इतने खराब है कि लोग इलाज करवाते-करवाते कोल्हू का बैल बन जाते हैं। निजी चिकित्सालयों के हवाई खर्च उठाना तो गरीब और मध्यम वर्ग के लिए दूर की कोड़ी है। ऊपर से ब्रांडेड दवाओं की आसमानी कीमत आदमी को पस्त कर देती है। देश में सस्ती यानी जेनेरिक दवाएं तो हैं, लेकिन मरीजों तक उनकी पहुंच का माकूल इंतजाम नहीं।

जेनेरिक दवा है क्या?

दवा निर्माता कंपनी अपने स्तर पर शोध एवं ट्रायल के बाद कोई दवा बाजार में उतारती है। यह काम काफी पूंजी एवं श्रम साध्य है। इसीलिए उसका पेटेंट प्राप्त कर लिया जाता है, ताकि उस रासायनिक मिश्रण से कोई दूसरा वैसी दवा न बना ले। आमतौर पर ऐसा पेटेंट 10 वर्ष का होता है। कभी-कभी विशेष दवा का 20 वर्ष। यह समय सीमा पूरी होते ही कंपनी विशिष्ट रॉयल्टी प्राप्त कर अन्य दवा निर्माताओं को दवा बनाने की अनुमति दे देती है। मूल निर्माता भी उसका निर्माण करते हैं, परन्तु उनकी मार्केटिंग नहीं करते। ऐसा इसलिए की जेनेरिक के मुकाबले उनकी कीमत कई बार कई गुना ज़्यादा होती है। ब्रांडेड दवाओं की मार्केटिंग में कंपनी बेतहाशा खर्च करती है तथा डॉक्टरों व वितरकों को मोटा कमीशन भी देती है। यह सब खर्च कीमत में जोड़ दिया जाता है तथा इससे भी ज्यादा अपना मोटा मुनाफा जोड़ कर कंपनियां दवा की कीमत खुद ही निर्धारित करती हैं। सरकार का इस पर ज्यादा नियंत्रण नहीं होता है। आमतौर

पर यदि जेनेरिक दवा का मूल्य 10 रुपये है तो ब्रांडेड दवा की कीमत 100 रुपये या इससे भी काफी ज्यादा हो सकती है। कई बार यह अंतर 500 गुना तक भी होता है। ब्लड कैंसर के मरीज को एक विशेष ब्रांड की दवा डॉक्टर द्वारा लिखी जाती है। इसकी महीने भर की कीमत 1,14,400 रुपये होगी। इसी दवा का जेनेरिक संस्करण 8000 से 5700 रुपये में उपलब्ध है। किडनी, यूरिन, हार्ट, न्यूरोलॉजी, डायबिटीज़ जैसी बीमारियों में ब्रांडेड व जेनेरिक दवा की कीमत का फ़र्क बहुत ज्यादा है। यदि ब्रांडेड दवा को उसी आधारभूत फॉर्मूले पर ही बनाया जाए तो वह जेनेरिक कहलाती है। भिन्न-भिन्न कंपनियों के विनिर्माण में दवा की गुणवत्ता में मामूली अंतर आ सकता है। लेकिन वे ब्रांडेड की तरह ही असरकार मानी जाती है, बशर्ते कि उन्हें हाइजिन के मापदण्डों पर ही बनाया गया हो। सस्ती इसलिए होती हैं कि शोध-अनुसंधान व मार्केटिंग की लागत इसमें जुड़ी नहीं होती। जेनेरिक दवाएं सिंगल सॉल्ट वाली होती हैं। मल्टी-सॉल्ट वाली अभी बनाई ही नहीं जा रही हैं। अभी इस्तेमाल में आ रही दवाओं में 40-50 फीसद मल्टी कम्पोजिशन है।

भेदना होगा दुष्चक्र

अधिकांश डॉक्टर अभी ब्रांडेड दवाएं ही लिखते हैं। दवा दुकानों पर सस्ती जेनेरिक दवाएं मिलती ही नहीं। केमिस्ट कहते हैं उनकी मांग नहीं, जबकि नब्बे फीसद मामलों में वितरक जेनेरिक दवा लिखी हो तो भी ब्रांडेड ही थमाते हैं। दवा निर्माता कंपनियों का मकड़जाल और डॉक्टर व कैमिस्टों की मिलीभगत से दुष्चक्र चल रहा है। जेनेरिक दवा बनाने में भारत अग्रणी है और अमेरिका तक को इसकी सप्लाई होती है। परन्तु देश में ही इसकी ढंग से आपूर्ति नहीं की जा रही है। देश में राष्ट्रीय औषध मूल्य निर्धारण प्राधिकरण की पहल पर अमृत औषधालय व जन औषधि केन्द्र द्वारा कम दाम पर मरीजों को ऐसी दवाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। इस वर्ष 300 ऐसे औषधालय व 3000 केन्द्र खोलने का लक्ष्य है। 600 से अधिक जेनेरिक दवाएं मौजूद हैं और हृदय रोग के काम आने वाले उपकरण स्टेंट की कीमतों की भी सीमा तय कर दी गई है। कैमिस्ट से जुड़े कानून तथा एमसीआई एक्ट में भी बदलाव की जरूरत है। रासायनिक मंत्रालय के उपक्रम एनपीपीए ने एक सराहनीय कदम उठाते हुए अपनी वेबसाइट पर सर्च सुविधा उपलब्ध कराई है, जिसमें किसी भी जेनेरिक दवा का ब्रांडेड नाम डालने पर उस दवा के जेनेरिक संस्करण की जानकारी मिल जाती है। एनपीपीए दवाओं की सही कीमत जानने के लिए 'फार्मा सही दाम' नामक मोबाइल एप जारी कर चुका है।

और प्रयासों की जरूरत

जनता को जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता से काफी आर्थिक राहत मिलेगी। गरीब व मध्यम वर्ग स्वास्थ्य और चिकित्सा जगत की महंगी कारगुजारियों से आहत है। जीवन में और किसी से साबका पड़े या न पड़े, परन्तु मेडिकल संस्थानों व डॉक्टरों से रूबरू होना ही पड़ता है। चिकित्सा क्षेत्र को सुधारने और राहत देने का यह कदम स्वागत योग्य है। लेकिन कोई भी कदम लोगों के स्वास्थ्य व जीवन की कीमत पर न हो। मेडिसिन एक ऐसी चीज है, जिसमें विनिर्माण, भण्डारण व वितरण में उच्चतर मानदण्डों और हाइजिन वाली रिच टेक्नोलॉजी की जरूरत होती है। पीने के पानी में जब शुद्धता की अनिर्वायता है तो स्वास्थ्य सुधारने वाली दवा में तो उच्च गुणवत्ता की जरूरत होनी ही चाहिए। चिकित्सा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी मानव संसाधन व प्रौद्योगिकी की कमी है। अन्य क्षेत्रों की तरह इसमें भी मोटा मुनाफा कमाने की लालसा व सिस्टम में भ्रष्टाचार पसरा है। सबको पता है कि मेडिकल दुकानों पर फार्मासिस्ट के लाइसेंस बिकते हैं और अकुशल कर्मचारी एवजी के तौर पर दवा वितरण करते हैं। कई बार उन्हें दवा के फॉर्मूलेशन और गुणधर्म की पूरी जानकारी नहीं होती। वे भला सही दवा और जेनेरिक दवा कैसे दे सकेंगे? कोई भी डॉक्टर अपनी साख को नाकाबिल हाथों में कैसे छोड़ सकता है। इसलिए वे पुख्ता जानकारी वाली ब्रांडेड दवाएं ही लिखते हैं। अप्रैल के अंतिम सप्ताह में राजस्थान में नकली दवाओं के कारोबार का गिरोह पकड़ में आया है। अकेले प्रदेश में 20 हजार करोड़ का सालाना दवा बाजार है, जिसमें से 400 करोड़ की नकली दवाएं सालाना बिक रही हैं। जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जहां बेईमानी व धोखाधड़ी नहीं हो रही है। ऐसे में सरकार को काफी सोच समझकर जनता के हित में कदम उठाना चाहिए। जेनेरिक दवाओं की गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके बाद कानून बना कर दवा निर्माता कंपनियों, फार्मासिस्टों व डॉक्टरों पर नकेल कसनी चाहिए। सवाल सिर्फ मूलतत्व के घटकों का नहीं, सवाल शुद्धता व गुणवत्ता का भी है।

पाठक पीठ

यूनिवर्सल बेसिक इनकम लागू करे सरकार

'प्रत्यूष' के मई अंक में यूबीआई

स्कीम पर सामयिक विश्लेषण अच्छा लगा। यदि केन्द्र सरकार इस योजना पर अमल करती है तो उसे वाहवाही मिलेगी। नोटबंदी और डिजिटल पेमेन्ट से असंगठित कामगार व कृषि क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ऐसे में तमाम सब्सिडी और लोक-लुभावन योजनाओं की जगह यूबीआई के तहत निश्चित रकम सीधे जनता को दी जाए। **अंबालाल मेनारिया, व्यवसायी**

स्तब्ध करने वाली हॉरर किलिंग स्टोरी

पिछले अंक में प्रकाशित प्यार,

धोखा और क़त्ल की सनसनीखेज़ सत्य पढ़कर रूह कांप गई। विश्वास भरे रिश्तों के बीच उगती नागफनियां सचमुच इंसानों को लहुलूहान कर रही हैं। आधुनिकता और हवस हजारों जिंदगियों को लील रही है। **ललित सुहालका, व्यवसायी**

शाबास! जलपरी गौरवी

14 वर्षीय गौरवी सिंघवी ने मुंबई के पास सी-लिंक से गेट-

वे ऑफ इंडिया के बीच उफनती लहरों में कमाल दिखाते हुए 36 किमी की दूरी $6^{1}/_{2}$ घंटे में पूरी कर अतुल्य साहस का प्रदर्शन किया। सचमुच बधाई की पात्र है गौरवी।

ललित चोरडिया, समाजसेवी

चीता को सलाम

राजस्थान की माटी के सपूत चेतन चीता कश्मीर घाटी में खुद मौत को

दबोच कर ज़िंदगी की ज़ंग में बच गए, यह देशवासियों के लिए सुकून की बात है। इस जवान ने आतंकियों की नौ गोलियों से जिस्म छलनी हो जाने के बाद भी अदम्य वीरता व साहस दिखाते हुए लगातार 16 राउंड गोलियां चलाई। उनकी गोलियों से आतंकी कमांडर ढेर हो गया। वे 16 दिन कोमा में रहे और ईश्वर की कृपा से स्वस्थ हो गए।

डॉ. लोकेश परतानी, चिकित्सक

मंगल शुभ स्थान पर तो कर देगा मालामाल

मंगली को चाहिए जीवन साथी भी मंगली

मांगलिक योग हर स्थिति में अशुभ नहीं होता। यदि जन्म कुण्डली में मंगल शुभ स्थान पर है, तो वह मालामाल कर देगा। अशुभ प्रभावकारी है तो जीवन में संघर्ष और हानि तय है ।

यदि किसी व्यक्ति की कुंडली के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में मंगल स्थित हो तो वह कुंडली मांगलिक मानी जाती है। हालांकि मांगलिक योग हर स्थिति में अशुभ नहीं होता है। कुछ लोगों के लिए यह योग शुभ फल देने वाला भी होता है। जिन लोगों की कुंडली मांगलिक होती है, उन्हें प्रति मंगलवार मंगलदेव के निमित्त विशेष पूजन करना चाहिए। मंगलदेव को प्रसन्न करने के लिए उनकी प्रिय वस्तुओं जैसे लाल मसूर की दाल, लाल कपड़े का दान करना चाहिए। शास्त्रों के अनुसार मंगल दोष का निवारण मध्यप्रदेश के उज्जैन में ही हो सकता है, अन्य किसी स्थान पर नहीं। उज्जैन ही मंगल देव का जन्म स्थान है और मंगल के सभी दोषों का निवारण यहीं किए जाने की मान्यता है। मंगलदेव के निमित्त भात पूजा की जाती है जिससे मंगल दोषों की शांति होती है। ज्योतिष के अनुसार मंगली लोगों पर मंगल ग्रह का विशेष प्रभाव होता है। यदि मंगल शुभ हो तो वह लोगों को मालामाल बना देता है। मंगली व्यक्ति अपने जीवनसाथी से प्रेम-प्रसंग के संबंध में कुछ विशेष इच्छाएं रखते हैं, जिन्हें कोई मंगली जीवनसाथी ही पूरा कर सकता है। इसी वजह से मंगली जातक का विवाह किसी मंगली से ही किया जाता है।

मंगली लोगों की खासियत

- मंगली व्यक्ति का विशेष गुण यह है कि वह अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण निष्ठा से निभाता है। कठिन से कठिन कार्य वह समय से पूर्ण ही कर लेता है। नेतृत्व की क्षमता ऐसे लोगों में जन्मजात होती है।
- यह लोग जल्दी किसी से घुलते-मिलते नहीं परन्तु जब मिलते हैं तो संबंध को पूर्णतः निभाते हैं। अति महत्वाकांक्षी होने से इनके स्वभाव में क्रोध समाया रहता है परंतु यह बहुत दयालु, क्षमा करने वाले तथा मानवतावादी होते हैं। गलत के आगे झुकना इनको पसंद नहीं और खुद भी गलती नहीं करते।
- यह लोग उच्च पद, व्यवसायी, अभिभाषक, तांत्रिक, राजनीतिज्ञ, डॉक्टर, इंजीनियर सभी क्षेत्रों में यह विशेष योग्यता प्राप्त करते हैं। विपरीत लिंग के प्रति यह सदैव संवेदनशील रहते हैं तथा उनसे कुछ विशेष आशा रखते हैं। इसी कारण मंगली कुंडली वालों का विवाह मंगली से ही किया जाता है।

मंगल दोष

कुंडली में कई प्रकार के दोष बताए गए हैं। इन्हीं दोषों में से एक है मंगल दोष। यह दोष जिस व्यक्ति को कुंडली में होता है वह मंगली कहलाता है। जब किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली के 1, 4, 7, 8, 12वें स्थान या भाव में मंगल स्थित हो तो वह व्यक्ति मंगली होता है। मंगल के प्रभाव के कारण ऐसे लोग क्रोधी स्वभाव के होते हैं। ज्योतिष के अनुसार मंगली व्यक्ति की शादी मंगली से ही होनी चाहिए। यदि मंगल अशुभ प्रभाव देने वाला है तो इसके दुष्प्रभाव से कई क्षेत्रों में हानि प्राप्त होती है।

भूमि से संबंधित कार्य करने वालों को मंगल ग्रह की विशेष कृपा की आवश्यकता है। मंगल देव की कृपा के बिना कोई व्यक्ति भी भूमि संबंधी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। मंगल से प्रभावित व्यक्ति अपनी धुन का पक्का होता है और किसी भी कार्य को बहुत अच्छे से पूर्ण करता है। हमारे शरीर में सभी ग्रहों के अलग-अलग निवास हैं। ज्योतिष के अनुसार मंगल ग्रह रक्त में निवास करता है।

- पं. दयानन्द शास्त्री

Darcl
Logistics

Darcl Logistic Limited

(Formerly known as Delhi Assam Roadways Corporation Limited)

Branch Office :
2nd Floor, 26-NB Complex, Ahemdabad Road, Pratap Nagar Chauraha, Udaipur (Raj.)
Tel. : +91-294-3296769, 3297688, Fax : +91-294-2494142
Email : surender.sharma@delhiassam.com | www.darcl.com

उस रात का दर्दभरा सन्नाटा

सत्यप्रकाश

बंबई महानगर सपनों का शहर है, जो चौबीस घंटे चलायमान रहता है। यहां काम तो मिल सकता है, मगर एक अदद घर मिलना मुश्किल है। रोज़गार और रहवास के बीच फंस कर कामकाजी व्यक्ति का जीवन अत्यंत विद्रूपकारी बन जाता है। तीन दशक पहले लिखित कहानी में इसी दारुण व्यथा को अत्यंत मार्मिकता से जनजीवन के मार्फ़त उकेरा है। प्रसिद्ध कथाकार सत्यप्रकाश, जिन्होंने स्वयं इस महानगर की आवास-यंत्रणा को भोगा है।

पिछले कल से ही खासा परेशान है। घर से पिताजी की चिट्ठी आई है। वे परसों ही यहां पहुंच रहे हैं। उनके पास इतना भी समय नहीं है कि उन्हें फिलहाल यहां आने से मना कर सके। जब तक उसका तार पहुंचेगा, वे चल चुके होंगे। समझ में नहीं आ रहा, कहां ठहराए उन्हें? अपने साथ ठहरा नहीं सकता। ठहराने की इजाज़त ही नहीं। बंबई में पेइंग गेस्ट के साथ यही दिक्कत होती है - पचास तरह की बंदिशें और तो और, उसे छुट्टी का दिन भी बाहर भटकते हुए गुज़ारना पड़ता है। यह जगह मिली ही इस शर्त पर कि सिर्फ़ रात में ठहर सकते हैं। उस छोटी-सी कुठरिया में वैसे भी दम घुटता है। करे तो क्या करे! इतनी मुश्किल से तो कम पैसों में यह जगह मिल पाई थी। उसके बस में होता तो जुहू, बांद्रा जैसे पॉश इलाके में शानदार ढंग से रहता। एक तो उसकी मामूली-सी नौकरी और एक कप चाय वाले पेइंग गेस्ट के ठिकाने के चक्कर में उसे खाना खाने के लिए होटलों पर निर्भर रहना पड़ता है। यहां मंथली बेसिस पर होटल वाले खाना भी तो नहीं खिलाते जैसा अपनी तरफ़ होता है। इस चक्कर में उसकी जेब में बड़े-बड़े छेद जैसे उसे चिढ़ाते-से लगते हैं।

वह अपने ऑफिस में सबसे पूछ चुका है, लेकिन किसी के भी न घर में इतनी जगह है, न दिल में कि उसके पिता की तीन-चार दिन की जिम्मेदारी संभाल सके। उसे कई बार कोफ़्त भी होती कि कैसे रूखे और मतलबी लोगों के बीच में रहने को मज़बूर है। उसकी इस मुश्किल का किसी के पास भी हल नहीं है। उसे याद आता है, उसकी बड़ी बहन की शादी के मौके पर सारे मेहमानों को मोहल्ले भर के घरों में टिका दिया गया था और सबने बढ़-चढ़ कर उसकी मदद की थी, पर यहां पर?

उसे पिताजी पर भी गुस्सा आ रहा है। कब से वह उन्हें लिख रहा है, अभी न आएं। रहने-खाने का ठीक-ठाक इंतज़ाम होते ही वह न सिर्फ़ उन्हें बल्कि अम्मा, गुड्डो और अमित को भी लिवा लाएगा और इस मायानगरी की खूब सैर कराएगा। लेकिन अब पिताजी को भी क्या कहा जाए। चल पड़े हैं अपने बंबइया बेटे की गृहस्थी देखने। पता नहीं वे बंबई के आकर्षण से खिंचे चले आ रहे हैं या बेटे की खैरियत जानने के मोह से। वह सोचता है - दोनों ही तरीके से वे निराश होंगे। जेब की जो हालत है उसे देखते हुए न उन्हें ढंग से घुमा-फिरा पाएगा, न अपने साथ ठहरा ही पाएगा।

गाड़ी समय पर आ गई। उसने अकाउंटेंट से कहकर दो घंटे की छुट्टी ले ली थी, ताकि पिताजी को रिसीव करके भायंदर ले जा सके। उसकी किस्मत अच्छी रही कि उसके दफ्तर के वाचमैन को उस पर दया आ गई है और उसने भायंदर के अपने एक ही कमरे की खोली में उसके पिताजी को दो दिन तक ठहराने की हामी भर दी है। उनके रहने-खाने के लिए वह दो सौ रुपये नकद लेगा। वाचमैन की खोली इतनी छोटी है कि उसमें दो तो क्या एक भी एक्स्ट्रा आदमी नहीं अंट सकता और जून-जुलाई की इस बरसात में तो बिलकुल भी नहीं। लेकिन वाचमैन चूंकि आजकल नाइट ड्यूटी पर है, इसलिए दो सौ रुपये के लालच में वह इसके लिए राज़ी हो गया है। कल ही वह उसकी खोली देख भी आया था। पिताजी ने भीड़ में से बेटे को पहचाना और ट्रेन से उतर पड़े।

पिताजी उसके हाल-चाल पूछ रहे हैं। वह अम्मा की तबियत पूछ रहा है। पिताजी पूछ रहे हैं - रहने-खाने का क्या इंतज़ाम है उसका। वह पूछ रहा है - उनकी पेंशन के लिए बैंक वाले परेशान तो नहीं करते। दोनों के पास बताने और पूछने के लिए बहुत ही कम बातें हैं। बोरीवली से भायंदर पहुंचते-पहुंचते सवाल-जवाब का सिलसिला ख़त्म-सा हो चुका है।

वह डर रहा है कि पिताजी को कैसे बताएं कि उनके ठहराने का उसने क्या इंतज़ाम किया है। आख़िर वे वाचमैन के घर पहुंचे और सच अपने-आप सामने आ गया है। इसके बावजूद वह पिताजी को आश्वस्त करता है, वे रोज़ाना मिलते रहेंगे। छुट्टी के दिन एक साथ घूमने-फिरने भी जाएंगे और .....। इस 'और' के झीने परदे में बहुत कुछ है जिसे उसने अनकहा छोड़ दिया। पिता अनुभवी और समझदार हैं। सब समझ गए हैं।

उसने पिता को व्यस्थित करा दिया। वे नहा-धो लिए हैं। बेटे के लिए, वे जो पकवान लाए हैं, वे उसे थमा दिए उन्होंने। वह पिता को भायंदर के बाज़ार में घुमाने ले गया। उन्हें होटल में खाना खिलाया। कम-से-कम पहली बार तो एक साथ खाना खा लें। तय हुआ कि कल पिताजी ग्यारह-बारह बजे चर्चगेट की तरफ़ आएंगे। तब वह उन्हें मैरीन ड्राइव, चौपाटी, गेट वे वगैरह दिखा देगा। बाद में इतवार की छुट्टी के दिन वह उन्हें जुहू बिच वगैरह घुमा लाएगा। उसने एक कागज पर ऑफिस तक आने का नक्शा भी बता दिया। बेटा समझ रहा है - इस ज़रा-सी खोली में एकदम अज़नबी और अपरिचित लोगों के बीच पिताजी को तकलीफ़ होगी। बाप समझ रहा है उसका बेटा ये सब कम-से-कम खुशी से तो नहीं कर रहा है। वे उसकी मज़बूरी बखूबी समझ गए।

वह दिन भर पिताजी की राह देखता रहा, परेशान होता रहा। बार-बार उठकर दरवाज़े तक आता रहा। एक बार भीगता हुआ चर्चगेट भी आया, लेकिन वे नहीं आए। उसे चिंता लग रही है। वाचमैन तो रात नौ बजे आएगा, परन्तु तब तक वह ठहर नहीं सकता। तुरन्त भायंदर जाना होगा। पिताजी ने आने की पुरज़ोर कोशिशें की थी, लेकिन बंबई की बात दूसरी है। लोकल ट्रेन की धक्का-मुक्की में वे भीतर घुस ही नहीं पाए। इस चक्कर में वे गिर गए और चोट भी खा बैठे। हिम्मत बटोर कर लड़खड़ाते हुए वापस दड़बे पर लौट आए। बेटा पिताजी का हाल जानने आखिर आ ही गया। वह पूछता है - कहीं ज्यादा चोट तो नहीं लगी। वे आश्वस्त करते हैं - चिंता की कोई बात नहीं। वह पिता को दिलासा देता है - कल अगर थोड़ी देर से निकले तो दोपहर को भीड़ कम होती है। यदि वे कल कोशिश करें तो आ सकते हैं। थोड़ी देर पिता का दर्द सहला कर वह लौटने को उठ खड़ा हुआ। और नहीं रुक सकता, क्योंकि जहां वह रहता है, दस बजे से पहले पहुंचना ज़रूरी होता है, वरना वे दरवाज़ा खोलते समय दस तरह की बातें सुनाते हैं।

अगले तीन दिन भी उसके पिता चर्चगेट नहीं आ पाते। वह भी भायंदर नहीं जा पाया, क्योंकि अचानक ऑफिस में ज्यादा काम आ गया और उसे पूरा करना था। ऑफिस के बाद वह चाहकर भी भायंदर नहीं पहुंच सकता, क्योंकि नौ तो ऑफिस में ही बज रहे हैं और वह किसी भी हालत में भायंदर जाकर दस बजे तक लोअर-परेल वापस नहीं आ सकता। अलबत्ता, वाचमैन के ज़रिये वे पत्रों का आदान-प्रदान कर रहे हैं।

आज शनिवार है। आधा दिन की छुट्टी। उसने तय किया कि आज वह ओवरटाइम नहीं करेगा। भायंदर जाकर पिताजी से मिलेगा। वैसे भी कल पिताजी को लौट जाना है। उन्हें घुमाएगा। होटल में खाना खिलाएगा। हालांकि उसका सीज़न टिकट दादर तक का है, फिर भी उसने चर्चगेट से विरार के दो रिटर्न टिकट ले लिए हैं। पिताजी को लेकर वह भायंदर स्टेशन आया और होटल में चाय-नाश्ता लिया। दोनों विरार जाने वाली ट्रेन में बैठ गए हैं।

दोनों के पास बहुत कुछ है - पूछने को, कहने को, बताने को, छुपाने को। वह पूछता है। पिता जवाब देते हैं। पिता पूछते हैं। वह जवाब देता है। ट्रेन चलती है। चर्चगेट पहुंच गई है। वहां बहुत तेज बरसात हो रही है। गाड़ी से बाहर निकलने का कोई मतलब नहीं। वे बैठे रहते हैं। ट्रेन चर्चगेट से चलती हुई बोरीवली पहुंच गई। रफ्तार पर सवाार ट्रेन बोरीवली से अंधेरी पहुंची। फास्ट ..... स्लो..... स्लो..... फास्ट। पिछले कई घंटे से यही क्रम चल रहा है। वे दोनों आमने-सामने की खिड़कियों पर बैठे हैं। कभी चुप- कभी बात करते हुए। सारी बातें कर ली गई और अब वे मौन हैं। इस बीच एक स्टेशन पर वह तेजी से उतरकर सामने के स्टाल से खाने की कई चीज़ें बंधवा लाया है। पिता बेटे को लेकर चिंतित हैं, लेकिन उनके पास, उनके शहर में बेटे के लिए घर तो है, नौकरी नहीं। बंबई में मामूली नौकरी तो है, पर घर नहीं।

रात का डेढ़ बजा है। गाड़ी बोरीवली स्टेशन पर खड़ी है। न वह अपने घर जा सकता, न पिता को इस वक़्त वाचमैन के घर ले जा सकता है। अचानक गाड़ी की बत्तियों बंद हुई। ट्रेन यार्ड की पटरी पर आहिस्ता-आहिस्ता चल पड़ी। दोनों पिता-पुत्र बिना कुछ कहे आमने-सामने की सीटों पर पसर गए। बाहर अभी भी तेज़ बारिश चल रही है।

अचानक सीट पर डंडा फटकने की आवाज के साथ कड़कती आवाज कौंध गई। 'क्यों वे बुड्ढे, इस ..... के लिए यही जगह मिली है क्या? चल उठ/भाग यहां से नहीं तो ..... ।' दोनों सकपका कर उठते हैं। समझ नहीं पाते, कौन है क्या है। वे आंखें मसलकर देखते हैं - रेलवे पुलिस का खाकी वर्दीवाला सिपाही अपने हाथ में डंडा लिए साक्षात यमराज की तरह घूर रहा है। वह जिस्म को डण्डे से कोंचते हुए कह रहा है, 'उतरता है नीचे या करूं अन्दर?'

दोनों कुछ कहना चाहते हैं ..... सच बयां करना चाहते हैं, लेकिन मुंह पर पुलिसिया खौफ़ से ताले लग गए। वह डिब्बे से फुर्ती से नीचे कूदता है और पिता को सहारा देकर नीचे उतारता है।

तेज बरसात में भीगते हुए दोनों पटरियों पर चले जा रहे हैं। लावारिश बने दोनों सोच रहे हैं कि भगवान बचावे इस बंबई मायानगरी से, जहां इंसानों की बेवक़्त व बिना बात ही जान हलक़ में आ जाती है।

अंग्रेजी-हिन्दी शब्दों का सटीक प्रयोग

अनेक ऐसे शब्द होते हैं, जिनकों प्राय: पर्याय समझ लिया जाता है। ऐसे शब्दों की व्यवहार में निकटता तो होती है, परन्तु अर्थ में कदापि नहीं। जानकारी के अभाव में प्राय: इन शब्दों का ठीकठाक प्रयोग नहीं हो पाता, जिसके कारण प्राय: अर्थ का अनर्थ होने की संभावना बनी रहती है। हर अंक में ऐसे समानार्थक शब्दों का सही अर्थ देने का प्रयास रहेगा।

approve - अनुमोदन करना, संतुष्टि के बाद स्वीकृति देना।
confirm - पुष्टि करना, आधिकारिक रूप से किसी बात की पुष्टि।
recommend - सिफ़ारिश करना, गुण विशेष के कारण ।
certify- प्रमाणित करना, ठीक पाए जाने पर प्रमाणित करना।
ratify - अनुसमर्थन करना, कार्य की अधिकारिक स्वीकृति।
sanction - मंजूरी/संस्वीकृति, अधिकार के साथ मंजूरी देना।
endorse - पृष्ठांकन करना, स्वीकृति के बाद अपनी ओर से कुछ लिखना।
area - क्षेत्र, निश्चित दूरी तक का कोई भू-भाग।
beat - हलका, सौंपे गए कार्य का किसी नगर/गांव का क्षेत्र।
block - खंड, प्रशासनिक सुविधा से तय कोई निश्चित इलाका।
circle - इलाका, प्रशासन द्वारा तय सीमा क्षेत्र।
division - प्रभाग/मंडल, प्रशासनिक स्तर पर निर्धारित कोई बड़ा क्षेत्र।
range - रेंज, पुलिस या वन विभाग का कोई विस्तृत इलाका।
subrange - उपरेंज, रेंज से छोटा भाग/प्रभाग।
section - अनुभाग/धारा, किसी विभाग का अलग प्रभावी हिस्सा।
sub-section - उपधारा, किसी कानून की धारा का कोई भाग।
subdivision - उपखंड, मंडल का छोटा हिस्सा।
department - विभाग, मंत्रालय/विभाग का कार्य की दृष्टि से भाग।

सीख जो बनी सिक्ख धर्म की पहचान

सिख समाज की स्थापना का मुख्य मकसद धर्म की रक्षा था। सिख समाज के गुरुओं ने इस धर्म को दुनिया की निगाहों में सबसे ऊपर रखने में मदद की। इन्हीं गुरुओं में से एक थे गुरु हरगोबिंद सिंह।

गुरु हरगोबिंद सिंह सिक्खों के छठे गुरु थे, जिनका जन्म माता गंगा व पिता गुरु अर्जुन सिंह के घर में 14 जून, 1595 ई. में बडाली (भारत) में हुआ। गुरु हरगोबिंद सिंह ने एक मजबूत सिक्ख सेना संगठित की और अपने पिता गुरु अर्जुन के (मुगल शासकों के हाथों 1606 में पहले सिख शहीद) निर्देशानुसार सिक्ख पंथ को योद्धा-चरित्र प्रदान किया।

अकाल तख्त निर्माता

गुरु हरगोविंद से पहले सिक्ख पंथ अधिक सक्रिय नहीं था। प्रतीक रूप में अस्त्र-शस्त्र धारण कर, हरगोविंद गुरु के तख्त पर बैठे। उन्होंने अपना ज्यादातर समय युद्ध प्रशिक्षण एवं युद्ध कला में लगाया गया तथा बाद में वे तलवारबाजी, कुश्ती व घुड़सवारी में माहिर हो गए। तमाम विरोध के बावजूद हरगोविंद ने अपनी सेना संगठित की और अपने शहरों की किलेबंदी की। वर्ष 1609 में उन्होंने अमृतसर में अकाल तख्त(ईश्वर का सिंहासन) का निर्माण किया, इसमें संयुक्त रूप से एक मंदिर और सभागार है, जहां सिक्ख-राष्ट्रीयता से सम्बन्धित आध्यात्मिक और सांसारिक मामलों को निपटाया जाता था।

सिक्खों के प्रति आस्था

उन्होंने अमृतसर के निकट एक किला बनवाया और उसका नाम लौहगढ़ रखा। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने अनुयायियों में युद्ध के लिए इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास पैदा किया। मुगल बादशाह जहांगीर ने सिक्खों की मजबूत होती स्थिति को खतरा मानकर गुरु हरगोबिंद सिंह को ग्वालियर में कैद कर लिया। गुरु हरगोबिंद सिंह बारह वर्षों तक कैद में रहे, लेकिन उनके प्रति सिक्खों की आस्था और मजबूत हुई। अंतत: मुगलों का विरोध करने वाले भारतीय राज्यों के खिलाफ सिक्खों का समर्थन प्राप्त करने के उद्देश्य से बादशाह पीछे हटे और गुरु को रिहा कर दिया। रिहा होने पर उन्होंने शाहजहां के खिलाफ बगावत कर दी और वर्ष 1628 में अमृतसर के निकट संग्राम में शाही फौज को हरा दिया। हरगोबिंद ने यह भांपकर कि मुगलों के साथ संघर्ष का समय नजदीक है, अपनी पुरानी युद्ध नीति जारी रखी।

धर्म की रक्षा

जहांगीर की मृत्यु (1627) के बाद नए मुगल बादशाह शाहजहां ने सिक्खों पर अत्याचार शुरू किया। मुगलों की अजेयता को झुठलाते हुए गुरु हरगोबिंद के नेतृत्व में सिक्खों ने चार बार शाहजहां की सेना को मौत दी। इस प्रकार अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित आदर्शों में गुरु हरगोबिंद सिंह ने एक और आदर्श जोड़ा, सिक्खों का यह अधिकार और कर्तव्य है कि अगर जरूरत हो, तो वे तलवार उठाकर भी अपने धर्म की रक्षा करें।

अपने निधन से ठीक पहले गुरु हरगोबिंद ने अपने पौत्र गुरु हर राय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। वह केवल धर्मोपदेशक ही नहीं, कुशल संगठनकर्ता भी थे। वर्ष 1644 में कीरतपुर(पंजाब) भारत में उनका निधन हो गया। गुरु हरगोबिन्द सिंह ने सिक्ख धर्म को जरूरत के समय शस्त्र उठाने की ऐसी सीख दी जो आज भी सिक्ख धर्म की पहचान बनी हुई है।

- रवीन्द्रपाल सिंह 'कप्पू'

खुशियां बांटने का अवसर है ईद

फिरोज बख्त अहमद

इस्लाम का बुनियादी उद्देश्य व्यक्तित्व का निर्माण है और ईद का त्योहार इसका परिचायक है। धार्मिकता के साथ नैतिकता और इंसानियत की तालीम लेने और देने का यह एक ख़ास मौका है। इसके लिए एक माह का प्रशिक्षण (रमजानुल मुबारक) भी तय किया गया है। जिसमें हर व्यक्ति जीवन के उन्नत मूल्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह समर्पित हो जाता है।

ईद वास्तव में एक तोहफा होता है, उन सभी के लिए, जिन्होंने 29 या 30 दिन लगातार रोज़े रखे हैं। यही कारण है कि रमज़ान से ईद का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। ईद की शुरुआत तो ईद से एक रोज़ पहले मगरिब की नमाज के बाद चांद देखने के साथ ही हो जाती है। ईद का यह चांद महीन होने के साथ-साथ थोड़ी ही देर के लिए दिखाई देता है। ईद का चांद देखते ही मुस्लिम खुदा से अमन-शांति की दुआ करते हैं।

ईद का अर्थ समझें तो अरबी में किसी भी चीज के बार-बार आने को 'ऊद' कहा जाता है। इसका अर्थ है कि जिसने रोज़े रखे हैं, उसके लिए ईद बार-बार आएगी। इस पर्व का नाम ईद उल फित्र क्यों पड़ा? ईद के दिन ईद की नमाज से पूर्व सभी मुसलमान फितरा अदा करते हैं। फितरे का अर्थ है कि दान-दीन धर्म भावना के तहत सुबह-सवेरे निर्धन एवं फकीर लोगों को पैसे की शक्ल में फितरे की रकम देना।

इस्लाम धर्म गुरुओं का मानना है कि ईद वाले दिन खुदा लोगों को अगणित नेकियों से नवाजता है। ईद का अर्थ मात्र यह नहीं कि सभी मुस्लिम भाई-बहिन नए एवं साफ-सुथरे कपड़े पहनें, पकवान खाएं या ईदगाह जाकर ईद की नमाज पढ़ आएं। ईद को समझने के लिए हमें पैगम्बर हज़रत मुहम्मद(सल्ल) से इसका तत्व समझना चाहिए। हजरत मुहम्मद बड़ी सादगी के साथ ईद मनाया करते थे। एक बार ईद के दिन सुबह-सवेरे फज्र की नमाज के बाद बाजार गए। रास्ते में एक छोटा सा यतीम बच्चा रोता हुआ दिखाई दिया। हजरत मुहम्मद पास गए और कारण पूछा। बच्चे ने बताया कि आज ईद का दिन है और उसके पास नए कपड़े, जूते और पैसे नहीं हैं। हजरत मुहम्मद ने उसे पुचकारा और घर ले आए। बच्चे से कहा आज से उनकी पत्नी हजरत आयशा तुम्हारी मां, बेटी फातिमा बहन और हसनैन तुम्हारे भाई हैं। इस अनाथ बच्चे को नए कपड़े पहनाए गए, उसे पकवान पेश किए गए, ताकि उसे अकेलेपन का आभास न हो।

वास्तविक भावना भी यही है। कहने को तो ईद-उल-फित्र(मीठी ईद) मुसलमानों का धार्मिक पर्व है, परन्तु इसका सामाजिक महत्त्व भी कम नहीं है।

ईद वाले दिन लोग ईदगाहों में नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ के दौरान छोटे-बड़े का अंतर नहीं रहता। एक शायर ने कहा है - एक ही सफ में खड़े हो गये महमूद-ओ-आयाज/न कोई बन्दा रहा, न बन्दा नवाज़। ईद सामूहिक प्रसन्नता का दिवस है। इस दिन गले मिलना, लोगों से सलाम दुआ करना अच्छा समझा जाता है।

रोज़े की अहमियत

इस्लामी कैलेंडर का नवां महीना वास्तव में अपने साथ अनेक रहमत व बरकत लेकर आया है। दुनिया भर के मुसलमान बेचैनी से इसका इंतजार करते हैं, क्योंकि इस महीने में किए गए एक नेकी के बदले खुदा बंदे को सत्तर नेकियां देता है। इस महीने का हर रोज़, रोज़-ए-सईद, सौभाग्यशाली दिन है, और हर शब, 'शब-ए-मुबारक'। दिन रोशन होता है, तो अनगिनत बंदों को यह सआदत(सौभाग्य) नसीब होती है कि वे अपने 'मालिक' की आज्ञा पालन और खुश करने के खातिर अपने जिस्म की जायज ख्वाहिशों और जरूरी इच्छाओं तक को तर्क करके गवाही दे कि सिर्फ अल्लाह ही उनका रब है। उसकी आज्ञापालन व बंदगी की तलब ही ज़िन्दगी की असल भूख और उसके ज़िक्र की लज़त व बरक़त से मालामाल होते हैं। उनके दिल शीशे-चिराग़ों की तरह ऐसे जगमगा उठते हैं जैसे - आसमान पर सितारे।

'रमजान' शब्द अरबी भाषा के 'रम्जा' शब्द से आया है जिसका अर्थ है 'तपती जमीन'। जिस समय हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर कुरआन उतारा गया, वह गर्मी का महीना था। यही नहीं, सौभाग्यवश इससे पूर्व पैगम्बरों पर अन्य आसमानी किताबें(ईश्वरीय ग्रंथ) भी इसी महीने उतारी गई थीं।इस माह की हर घड़ी में बरक़त का इतना बड़ा ख़ज़ाना पोशीदा है कि 'नफील', 'फर्ज़' के दर्जे को पहुंच जाते हैं और फरायज़ सत्तर गुना ज्यादा वजनी और बुलंद हो जाते हैं।

आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और रहमतों की बारिशें होती है। नेकी के रास्ते पर चलने की सहूलत और तौफीक आम हो जाती है। जहन्नुम के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं, शैतानों को जंजीरों में जकड़ दिया जाता है, बुराई के मौक़े कम हो जाते हैं। रोज़े को अरबी में 'सौम' कहा जाता है, यानी किसी काम या वस्तु का रुक जाना। शरई रूप में इसका मतलब 'इबादत के लिए समर्पित होना' है। हदीस के मुताबिक 'रमज़ान के रोज़े बंदे को जन्नत तक पहुंचा देते हैं।' इसीलिए रमज़ान के इस महीने में रोज़े की बड़ी अहमियत है।

- अफ़रोज आलम

गहलोत को गुजरात और पाण्डेय को राजस्थान का जिम्मा ■ पंजाब और उत्तराखंड में बदले प्रदेश अध्यक्ष ■ कर्नाटक, गोवा और हिमाचल में भी बदले चेहरे

वापसी के लिए कांग्रेस में बुनियादी बदलाव

कांग्रेस ने छह दशक तक देश पर एकछत्र शासन किया। 127 साल पुरानी कांग्रेस आज इतिहास के सबसे खराब दौर से रूबरू है। राजनीति और लोकतांत्रिक व्यवस्था में हार-जीत होती रहती है। लेकिन हार के बाद पस्त हो जाना चिंताजनक है। भले ही राजनीतिक विश्लेषकों ने जल्दबाजी में निष्कर्ष निकाल लिए हो कि कांग्रेस का उबरना अब मुश्किल है, परन्तु राजनीति और क्रिकेट संभावनाओं का खेल है। प्राय:परिदृश्य बदल भी जाया करते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी 17 साल से संगठन को सफलतापूर्वक चला रही हैं। पिछले पांच साल में हार का ठीकरा राहुल गांधी पर फूटता रहा है, परन्तु एक बात साफ है कि वे अनुभवों से परिपक्व भी हो रहे हैं। राष्ट्रपति चुनाव के बहाने सोनिया गांधी मई से विपक्षी दलों से मजबूत सम्पर्क सूत्र का काम कर रही हैं। यदि विपक्षी दलों के बीच एका स्थापित हो गया तो राष्ट्रपति चुनाव में एनडीए मुसीबत में पड़ सकता है। 2013 में तीन राज्यों और 2014 में आम चुनाव में करारी हार के बाद पूरे देश में कांग्रेस कार्यकर्ताओं में नैराश्य के चलते प्रादेशिक इकाइयों में भी निष्क्रियता छाई रही। 2016 में यूपी और उत्तराखंड की कमरतोड़ हार के सदमे से तो पार्टी में खलबली-सी मच गई। कर्नाटक में एस. एम. कृष्णा के भाजपा का दामन थामने के बाद, यूपी में रीता बहुगुणा जोशी, दिल्ली के अरविंदर सिंह लवली व अमित मलिक भी भाजपा में शामिल हो गए हैं। राज्यों में छोटे-बड़े नेताओं का संगठन छोड़ना हैरान कर रहा है। हालांकि कांग्रेस नेता इसे अवसरवादिता करार दे रहे हैं। उनका कहना है कि जब कोई जहाज हिचकोले खाता है तो चूहे सबसे पहले कूद कर अपना ही सर्वनाश कराते हैं। कारण कुछ भी हों, परन्तु यह वक्त गंभीर आत्मचिंतन का है। कांग्रेस पार्टी में निष्ठावान कार्यकर्ता अपने को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं, जिन्हें सत्ता में रहते भी तवज्जो नहीं मिली। सोनिया गांधी स्वयं बीमार रहने के बावजूद पार्टी की नब्ज को साध कर हालात सुधारने की कोशिश में हैं।

जयपुर में आयोजित पीसीसी बैठक में उपस्थित वरिष्ठ कांग्रेसजन तथा संबोधित करते अविनाश पाण्डेय व सचिन पायलट।

आक्रामक कांग्रेस के तीखे नश्तर

कांग्रेस ने अब बचावी मुद्रा को त्याग कर आक्रामक रुख अख्तियार कर लिया है। उसने तीखे शब्द बाणों से लैस छह नेता राहुल गांधी की अगुआई में मैदान में उतारे हैं, जिन्होंने केन्द्र सरकार के तीन सालाना जश्न पर सवाल खड़े कर कहा युवा बेरोजगारी से परेशान हैं और किसान सूखे से व सीमा पर जवान मारे जा रहे हैं, लेकिन सरकार जश्न मनाने में मशगूल हैं। यह 'तिकड़मों और लीपापोती' की सरकार है। अपने विरोधियों को झूठे आरोपों में फंसाना ही इस सरकार का एकमात्र काम रह गया है। देश की जनता अब समझ चुकी और भाजपा की पोल खुल गई है।

बेखबर क्यों है आलाकमान?

कांग्रेस इस पर आत्मचिंतन करे कि आज वह जिस मुकाम पर है, वहां क्यों और कैसे पहुंची? कर्नाटक और पंजाब को छोड़ कर किसी बड़े राज्य में उसकी सरकार नहीं। उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, झारखंड, उड़ीसा, तमिलनाडु जैसे बड़े राज्यों में पार्टी के ताकतवर चेहरे क्यों नहीं उभरे? इतिहास गवाह है कि केन्द्र में कांग्रेस की ताकत उस वक्त हमेशा सबसे ज्यादा मजबूत रही, जब सूबों में उसका संगठन मज़बूत रहा। लगभग एक दशक से कई प्रदेश इकाइयों में बदलाव की आवाजों पर ध्यान ही नहीं दिया गया। राजस्थान, पंजाब जैसे राज्यों में संगठन में बदलाव के सकारात्मक नतीजे आ रहे हैं। कांग्रेस को नए चेहरों को तराशते हुए फ्री हैण्ड करना होगा। सत्ता के दौरान कई अर्से तक मलाई चाटते रहे भ्रष्ट नेताओं को अग्रिम पंक्ति से हटाना तथा वक्त-बेवक्त अनर्गल टिप्पणियों से पार्टी की छवि खराब करने वाले नेताओं से पिंड छुड़ाना होगा। संगठन में प्रभावी और अच्छे लोगों की कमी नहीं, लेकिन उन्हें कभी आगे नहीं आने दिया गया। ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं को सक्रिय करना और नए लोगों को जोड़ना होगा। पिछले दो दशकों में राजनीति ही नहीं अपितु लोगों का मिज़ाज व अपेक्षाएं भी बदली हैं। सिर्फ विरासत का बखान करने की बजाय नई कार्यनीति, कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने और आम जनता से जुड़ने की जुगत करनी होगी। बदलाव व सांगठनिक नीतियों में परिवर्तन मंथर गति से चल रहा है। नई सोच के खातिर 2006 में बनी कमेटी का रोडमैप अभी तक सामने ही नहीं आया। पिछले लोकसभा चुनाव के बाद ए के एंटनी की अगुवाई में पराजय के कारणों के विश्लेषण की कमेटी पर अमल होता तो यूपी और उत्तराखंड में बंटाधार न होता। पार्टी कैडर में संवादहीनता है।

राजस्थान कांग्रेस : मजबूती का बड़ा प्रयास

कांग्रेस आलाकमान का मानना है कि अगले वर्ष के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के फिर से उभरने की संभावनाएं राजस्थान में सबसे ज्यादा है। बुनियादी कारण यह माना जा रहा है कि यहां पर भाजपा सरकार जन आकांक्षाओं पर खरी साबित नहीं हो पाई है। दूसरा, भाजपा विधायक ही अपने काम नहीं होने पर असंतोष जाहिर कर रहे हैं। भाजपा के सांगानेर विधायक घनश्याम तिवाड़ी तो विधानसभा में अपनी ही सरकार को कठघरे में खड़ा करने से नहीं चूक रहे। उन्हें अनुशासन तोड़ने के आरोप में नोटिस तक जारी हुआ। इससे वे और भी तिलमिला उठे हैं। उनका कहना है कि राज में रहने का मतलब लूटने का लाइसेंस मिलना नहीं है। बदलाव के तहत आलाकमान पहले ही युवा और कर्मठ प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट को फ्री हैण्ड कर चुका है।

(शेष पेज 41 पर)

कर्नल बन गए सारंगदेवोत

कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को कर्नल की मानद उपाधि प्रदान करते सेना अधिकारी।

उदयपुर/प्रब्यू। राजस्थान विद्यापीठ द्वारा संचालित जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत(कच्छेर) को उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट योगदान के लिए गत 26 अप्रेल को रक्षा मंत्रालय की ओर से कर्नल की मानद उपाधि प्रदान की गई। विश्वविद्यालय के प्रतापनगर स्थित मुख्यालय में आयोजित समारोह में सेना के एयर कमांडर कोमोडोर राधा-कृष्णन शंकर, कमांडर कर्नल जेएस सिंह(वीएएएम) ने उन्हें कर्नल की रैंक, अशोक स्तंभ, स्टॉर, कॉलर डाफ प्रदान कर प्रमाण पत्र भेंट किया। इस दौरान समारोह स्थल तालियों से गूंजता रहा। कर्नल की मानद उपाधि हासिल करने वाले प्रो. सारंगदेवोत किसी डीम्ड युनिवर्सिटी के प्रथम कुलपति हैं। इस मौके पर एनसीसी विंग ने सेना के अधिकारियों को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। इस पिपिंग सेरेमनी में उदयपुर आर्मी स्टेशन के ब्रिगेडियर एसएस पाटिल, कर्नल हरीश चंडोक, कर्नल एसएस दबास, लेफ्टिनेंट कर्नल प्रतीक हमाल, कैप्टन अनिता राठौड़, लेफ्टिनेंट डॉ. युवराज सिंह राठौड़, कैप्टन रामचन्द्र ने कुलपति को बधाई दी। रजिस्ट्रार प्रो. मुक्ता शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। कुलाधिपति एचसी पारख ने सेना के अधिकारियों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। कोमोडार राधा कृष्णन शंकर ने विद्यापीठ विश्वविद्यालय के सामुदायिक शिक्षा, ग्रामीण एवं वंचित व सर्वहारा वर्ग के कार्यों की सराहना की। इस सम्मान के लिए सारंगदेवोत ने सरकार एवं सेना का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि दृढ़ निश्चय और परिश्रम से जीवन में सफलता मिलती है। विद्यार्थी अपना लक्ष्य निर्धारित करें और उसे प्राप्त करने के लिए पूरी शक्ति और सामर्थ्य को लगा दें तो कुछ भी असंभव नहीं है। उन्होंने कहा मैं स्कूल के दिनों में एनसीसी कैडेट्स बना और आज कर्नल की उपाधि पाकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। किसी भी पद, व्यक्ति या समाज से राष्ट्र सर्वोपरि है। जरूरत पड़ने पर राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पण का संकल्प करें। सेना से प्राप्त इस उपाधि को उन्होंने विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं को समर्पित किया।

संगठनों द्वारा सम्मान

भूपाल नोबल्स संस्थान के महेन्द्रसिंह आगरिया, मोहब्बत सिंह राठौड़, सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट के दलपत सुराणा, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, डेयरी अध्यक्ष गीता पटेल, भाजपा नेता प्रमोद सामर, प्रदेश कांग्रेस सचिव पंकज शर्मा, डॉ. मनोज भट्ट, महेन्द्र सिंह शेखावत, लालसिंह झाला, भीम सिंह चूंडावत, पंकज गांगावत, प्रो. लोकेश भट्ट, इतिहासविद् प्रो. के. एस. गुप्ता, डॉ. राजशेखर व्यास, केन्द्रीय विधि आयोग के सदस्य प्रो. मूलचंद शर्मा, गुजरात विवि के कुलपति प्रो. एन एन जॉनी सहित विभिन्न संगठनों ने प्रो. सारंगदेवोत को पगड़ी पहना कर व प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

Central Public Sr. Sec. School

A Day - Cum Boarding School

We Offer Quality Education CPS

A Perfect Blend of Technology, Technique & Values

www.cpsudaipur.com

- Proficient Faculty & Staff
- Well Researched Curriculum
- Adequate Student - Teacher Ratio
- Well developed Campus with Modern Facilities
- Emphasis on Skill Development
- Focus on Holistic & Overall Development
- Well Equipped Hi-Tech Computer Lab
- Separate Luxurious Hostel Facility for Boys & Girls
- International Student Exchange Programme

ADMISSIONS OPEN
(Pre Nursery to IX & XI)
Science, Commerce & Humanities

B.P. JOSHI HOSTEL

- Well Monitored Preparatory Classes
- English Enhancement Classes
- Daily Yoga & Pranayam | Remedial classes
- Field Trips | International Trips | Camps
- Hygienic Spacious Mess (Pure Veg / Jain Food option Available) | RO Water Plant
- CCTV Monitored Campus | Spacious Rooms
- Well Qualified Coaches for Sports
- 24 hours Security
- 24 Hours Electricity Back up

Hi-Tech WiFi Enabled IT Lab

President's Award for Excellence in IT

International Student Exchange Programme

Smart Class Concept

School Integrated Programme (SIP) Science / Commerce

A GOLDEN OPPORTUNITY TO PREPARE YOUR CHILD FOR
XI, XII + JEE (MAIN/ ADVANCE) ENGINEERING ENTRANCE EXAM
XI, XII + NEET – MEDICAL ENTRANCE EXAM
XI, XII + CPT

TEACHING METHODOLOGY :

1. Concept Classroom Sessions (CCS)
2. Doubt Removal Sessions (DRS)
3. Daily Practice Problems (DPP)
4. Exhaustive Study Material (ESM)
5. Regular Test Series – Online & Offline (RTS)
6. Batch Re-Shuffling Through Monthly Tests

Central Public Sr. Sec. School, New Bhupalpura, Udaipur
Ph.: 0294 - 2415641, 0294-2413651, info@cpsudaipur.com

Admission forms are available in office between 8.30 a.m.to 1.30 p.m.

JK Cement LTD.

सुरक्षा का नया चिन्ह

JK SUPER CEMENT

BUILD SAFE

जे के सुपर सीमेंट | बिल्ड सेफ़

उनके निभाए हर किरदार ने चौंकाया

बतौर खलनायक अपने कॅरियर की शुरूआत करने के बाद नायक के रूप में शोहरत की बुलंदियां छूने वाले बॉलीवुड अभिनेता से राजनेता बने विनोद खन्ना नहीं रहे। पिछले 2-3 वर्ष से आंत के कैंसर से पीड़ित विनोद ने 26 अप्रेल की पूर्वान्ह मुम्बई के एचएन रिलायंस फाउंडेशन एण्ड रिसर्च सेंटर में अंतिम सांस ली।

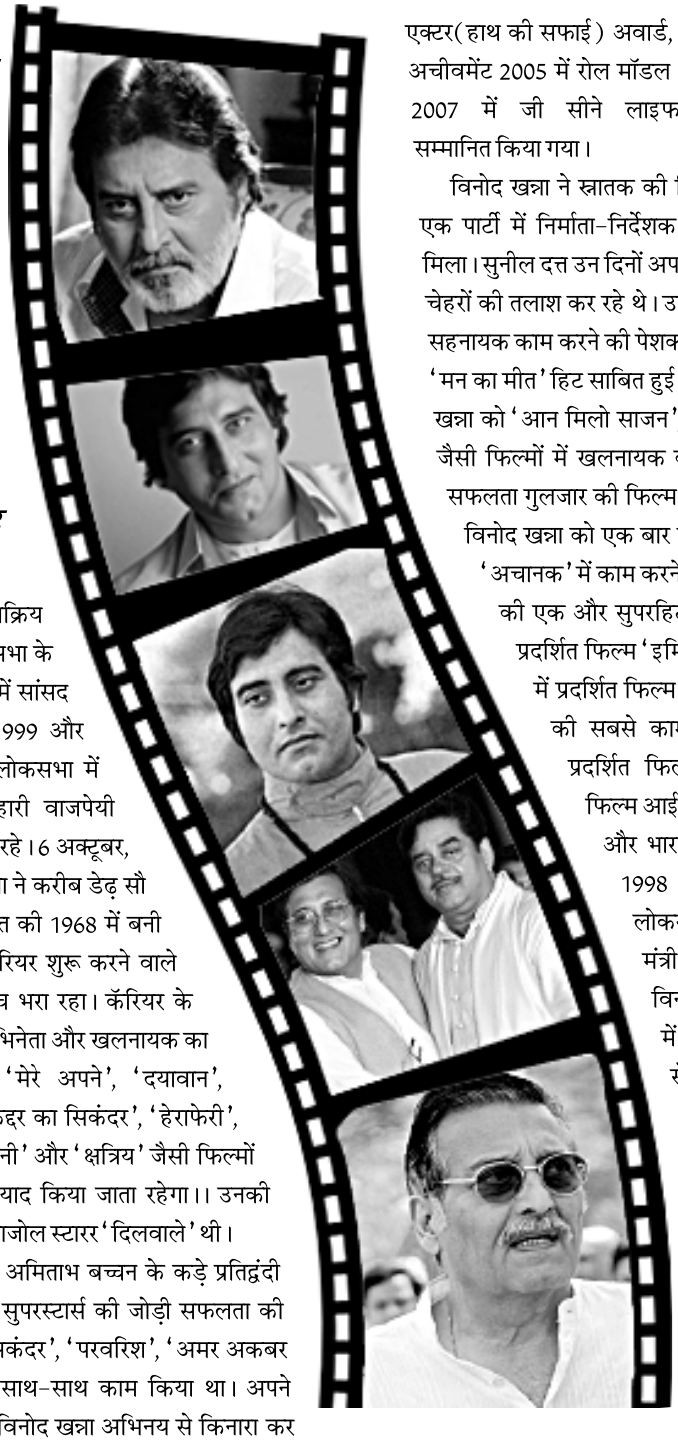

अभिनय के साथ-साथ राजनीति में सक्रिय रहने वाले विनोद खन्ना मौजूदा लोकसभा के लिये गुरुदासपुर से चौथी बार 2014 में सांसद चुने गये थे। इससे पहले 1998, 1999 और 2004 में भी उन्होंने इस क्षेत्र का लोकसभा में प्रतिनिधित्व किया था। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में वह संस्कृति राज्य मंत्री भी रहे। 6 अक्टूबर, 1946 को पेशावर में जन्मे विनोद खन्ना ने करीब डेढ़ सौ फिल्मों में अभिनय किया। सुनील दत्त की 1968 में बनी फिल्म 'मन का मीत' से फिल्मी कॅरियर शुरू करने वाले विनोद खन्ना का जीवन काफी रोमांच भरा रहा। कॅरियर के शुरूआती दिनों में उन्होंने सहायक अभिनेता और खलनायक का किरदार निभाया लेकिन बाद में 'मेरे अपने', 'दयावान', 'कुर्बानी', 'मेरा गांव मेरा देश', 'मुकद्दर का सिकंदर', 'हेराफेरी', 'अमर अकबर एंथनी', 'जुर्म', 'चांदनी' और 'क्षत्रिय' जैसी फिल्मों में सशक्त भूमिकाओं के लिए उन्हें याद किया जाता रहेगा।। उनकी आखिरी फिल्म 2015 में शाहरूख-काजोल स्टारर 'दिलवाले' थी।

विनोद खन्ना बॉलीवुड में अमिताभ बच्चन के कड़े प्रतिद्वंदी माने जाते थे लेकिन स्क्रीन पर दोनों सुपरस्टार्स की जोड़ी सफलता की गारंटी भी थी। दोनों ने 'मुकद्दर का सिकंदर', 'परवरिश', 'अमर अकबर एंथनी' जैसी सुपर हिट फिल्मों में साथ-साथ काम किया था। अपने करियर के शिखर पर होने के दौर में विनोद खन्ना अभिनय से किनारा कर 1982 में आध्यात्मिक गुरु रजनीश(ओशो) के शिष्य बन गए और उनके अमेरिका स्थित आश्रम में विनोद भारती के रूप में बर्तन धोने से लेकर माली का पांच साल तक काम किया। सन् 1987 में उन्होंने पुन: बॉलीवुड में धमाकेदार वापसी की। सन् 1975 में फिल्म फेयर बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर(हाथ की सफाई) अवार्ड, 1999 में फिल्म फेयर लाइफ टाइम अचीवमेंट 2005 में रोल मॉडल ऑफ द ईयर-स्टारडस्ट अवार्ड एवं 2007 में जी सीने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

विनोद खन्ना ने स्नातक की शिक्षा मुंबई से की। इस दौरान उन्हें एक पार्टी में निर्माता-निर्देशक सुनील दत्त से मिलने का अवसर मिला। सुनील दत्त उन दिनों अपनी फिल्म 'मन का मीत' के लिए नए चेहरों की तलाश कर रहे थे। उन्होंने फिल्म में विनोद खन्ना से बतौर सहनायक काम करने की पेशकश की। वर्ष 1968 में प्रदर्शित फिल्म 'मन का मीत' हिट साबित हुई। फिल्म की सफलता के बाद विनोद खन्ना को 'आन मिलो साजन', 'मेरा गांव मेरा देश', 'सच्चा झूठा' जैसी फिल्मों में खलनायक की भूमिकाएं मिली। उन्हें प्रारंभिक सफलता गुलजार की फिल्म 'मेरे अपने' से मिली। वर्ष 1973 में विनोद खन्ना को एक बार फिर से निर्देशक गुलजार की फिल्म 'अचानक' में काम करने का अवसर मिला जो उनके कॅरिअर की एक और सुपरहिट फिल्म साबित हुई। वर्ष 1974 में प्रदर्शित फिल्म 'इम्तिहान' भी सुपरहिट हुई। वर्ष 1977 में प्रदर्शित फिल्म 'अमर अकबर एंथनी' विनोद खन्ना की सबसे कामयाब फिल्म रही। वर्ष 1980 में प्रदर्शित फिल्म 'कुर्बानी' एक और सुपरहिट फिल्म आई। वर्ष 1997 राजनीति में प्रवेश किया और भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर वर्ष 1998 में गुरदासपुर से चुनाव लड़कर लोकसभा सदस्य बने। बाद में केन्द्रीय मंत्री के रूप में भी उन्होंने काम किया। विनोद खन्ना 2014 के लोकसभा चुनाव में भी भाजपा के टिकट पर गुरदासपुर से चुनाव जीतकर संसद पहुंचे थे। बीमार रहने के बावजूद उनका अपने निर्वाचन क्षेत्र से सम्पर्क बना रहा। उनके प्रतिनिधि क्षेत्र में लगातार सक्रिय रहते हुए जन समस्याओं के समाधान में संलग्न थे। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी, भाजपा अध्यक्ष अमित शाह, बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन, रजनीकांत, ऋषि कपूर, अक्षय कुमार, शत्रुघ्न सिन्हा, गीतकार गुलजार, मुम्बई के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस, राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित देश के वरिष्ठ राजनेताओं, कलाकारों और उनके प्रशंसकों ने उनके निधन पर संवेदना व्यक्त की। ■ **-मदन पटेल**

ज़िंदगी को दें बेहतर आतिथ्य

होटल एवं रेस्टोरेंट प्रबंधन, क्रूज होटल प्रबंधन, सत्कार प्रबंधन एवं खानपान, होटल एवं पर्यटन एसोसिएशन, एयरलाइंस कैटरिंग एंड केबिन सर्विसेज, क्लब मैनेजमेंट, फॉरेस्ट लाज, गेस्ट हाउस प्रबंधन, वैश्विक यात्रा और उड़ान उद्योग जैसे क्षेत्रों के उभार के चलते होटल प्रबंधन में प्रशिक्षितों की बड़ी मांग है। यह उम्मीदवार की शिक्षा, उसके कार्यानुभव पर निर्भर करता है कि उसे किस तरह की नौकरी का प्रस्ताव मिले। बहरहाल उच्च और मध्य स्तर के प्रबंधन उम्मीदवारों के लिए जरूरी है कि उनके पास यात्रा प्रबंधन के क्षेत्र में कोई न कोई डिग्री हो। जहां तक उम्मीदवारों के चयन की बात है तो कुछ होटल विश्वविद्यालयों से सीधे स्नातकों की भर्ती करते हैं जबकि कुछ सिर्फ प्रशिक्षित उम्मीदवारों को ही नौकरी पर रखते हैं। उम्मीदवार 10+2 में 50 प्रतिशत नम्बर नहीं हैं वो उपलब्ध अन्य किस्म के डिप्लोमा या सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम कर सकते हैं। इसके अलावा कुछ होटल प्रशिक्षण एवं जॉब की सुविधा मुहैया कराते हैं, जिन उम्मीदवारों के पास अन्य कोई विकल्प न हो, वो इसे चुन सकते हैं। भारतीय होटल प्रबंधन संस्थान विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु प्रवेश परीक्षा आयोजित करते हैं।

संवाद क्षमता

जो छात्र-छात्राएं इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने की सोच रहे हों उनमें संवाद की मजबूत क्षमता और तार्किकता के साथ-साथ खुशनुमा व्यक्तित्व होना चाहिए। जिनमें इन योग्यताओं का अभाव हो उन्हें उम्मीदवार बनने के पहले इन खामियों को दूर कर लेना चाहिए। यही वजह है कि कई छात्र-छात्राएं जो होटल प्रबंधन के क्षेत्र में जाने के लिए बहुत पहले से ही तय कर लेते हैं, वो हाई-स्कूल परीक्षा के बाद से ही इसकी तैयारी शुरू कर देते हैं।

विपुल संभावनाएं

अन्य उद्योगों की ही तरह प्रबंधन उद्योग भी देश और दुनिया की अर्थव्यवस्था से संचालित होने वाला क्षेत्र है। अगर देश और दुनिया की अर्थव्यवस्था में उभार का दौर है तो नि:संदेह इस क्षेत्र में बहुत सारी संभावनाएं मौजूद हैं। वर्तमान में देश में 24 लाख से ज्यादा लोग होटल प्रबंधन क्षेत्र में कार्यरत हैं।

देश में बढ़ते शहरीकरण और अर्थव्यवस्था के विस्तार से आने वाले सालों में इस क्षेत्र में रोजगार की विपुल संभावनाएं हैं। क्योंकि देश और दुनिया के तमाम उभरते शहरों में बहुत तेजी से होटल शृंखलाओं का विस्तार हो रहा है। ऐसे में होटल बजाय अप्रशिक्षित लोगों के, प्रशिक्षित लोगों को नौकरी देने में प्राथमिकता दे रहे हैं।

नियुक्ति के पद

जनरल मैनेजर, रेजीडेंट मैनेजर, एग्जीक्यूटिव हाउस कीपर्स, फ्रंट ऑफिस मैनेजर्स और कन्वेंशन सर्विस मैनेजर्स, ये कुछ प्रमुख पद होते हैं। इस क्षेत्र के किसी होटल समूह में जनरल मैनेजर या महाप्रबंधक जहां उस समूह के होटलों की तमाम संचालित गतिविधियों का दिशावाहक और जिम्मेदार होता है, वहीं रेजीडेंट मैनेजर पर किसी होटल में तमाम गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित करवाने की तात्कालिक जिम्मेदारी होती है।

एग्जीक्यूटिव हाउसकीपर्स पर होटल की साफ-सफाई के प्रबंधन की जिम्मेदारी होती है तो फ्रंट ऑफिस मैनेजर्स सीधे ग्राहकों से पहले स्तर पर मुखातिब होते हैं। जबकि कन्वेंशन सर्विस मैनेजर्स होटल के प्रमोशन की विभिन्न जिम्मेदारियों को संभालते हैं।

प्रारंभिक वेतन

आमतौर पर इंडियन होटल मैनेजमेंट से प्रशिक्षित उम्मीदवारों को 20,000 रुपये मासिक का प्रारंभिक वेतन मिलता है जबकि डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम करने वालों को आमतौर पर 8 से 10,000 रुपये की शुरुआती नौकरी मिल जाती है। इसके बाद इस क्षेत्र में तमाम दूसरे क्षेत्रों की तरह ही आपकी मेहनत, कौशल, कल्पनाशीलता और मौके को सही तरह से भुनाने की क्षमता पर वेतन निर्भर करता है। जो हजारों से लेकर लाखों रुपये महीने तक जाता है।

-प्रत्युष डेस्क

AKME GROUP OF COMPANIES

AKME FINTRADE (I) LTD.
(RBI Reg. No. 10.00092)

AKME FINCON PVT LTD.
(RBI Reg. No. B.10.00119)

AKME STAR HOUSING FINANCE LTD.
(NHB Reg. No. 08.0076.09)

AKME BUILD ESTATE PVT. LTD. **AKME PROPERTY & BUILDERS**

TVS **AKME TVS** TVS KING ऑटो का राजा

(Akme Automobiles Pvt. Ltd.)

(Authorised Dealer of TVS Motor Company for Two Wheeler & Three Wheeler)

AKME BUSINESS CENTRE
4-5, Subcity Centre, Savina Circle, Udaipur (Raj.) 313 002
Ph. : 0294-2489502/03/04, 2481244

कम्प्यूटर के दुष्प्रभाव से बचाए पर्वतासन

शहरी जीवनशैली में कम्प्यूटर सबके जीवन में शामिल हो गया है। लेकिन उस पर घंटों काम करने वाले कई बार यह भी भूल जाते हैं कि इसके कई दुष्परिणाम भी हैं। योग की कुछ क्रियाओं को अपनाकर उन दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है।

कम्प्यूटर जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। किन्तु इसका अधिक उपयोग आंख, हाथ, रीढ़, कमर, गर्दन तथा हाथों पर अनेक दुष्प्रभाव डालता है। कम्प्यूटर के अधिक उपयोग से उत्पन्न होने वाली एक प्रमुख समस्या कार्पेनल टनल सिंड्रोम है, जिसमें कलाई तथा अंगुलियों में तीव्र दर्द, सूजन, अंगुलियों का सुन्न पड़ना एवं अंगुलियां पतली होने जैसी समस्याएं सामने आतीं है। अगर आप भी इनमें से किसी समस्या से जूझ रहे हैं तो कुछ यौगिक क्रियाओं के अभ्यास से आप इन पर काबू पा सकते हैं और अगर आप अब तक ऐसी समस्या की चपेट में नहीं आए हैं तो इनसे बचे रहेंगे।

आसन

हाथों एवं पूरे शरीर के सूक्ष्म व्यायाम से कम्प्यूटर जनित सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। कुछ आसन जैसे अष्टांग नमस्कार, पर्वतासन, कुक्कुर आसन, उत्थत पद्मासन, भुजंगासन तथा वृश्चिक आसन आदि का अभ्यास करना चाहिए।

हाथों का सूक्ष्म व्यायाम

- फर्श या कुर्सी पर रीढ़, गला व सिर को सीधा कर बैठ जाएं। दोनों हाथों को कंधों की ऊंचाई तक सामने की ओर फैला दें। इसके बाद हथेलियों को कड़ाई के साथ बंद करें तथा खोलें। इसी प्रकार मुट्ठियों को 15-20 बार बंद करें और खोलें।
- मुट्ठियों को बंद कर कलाइयों को 10 बार घड़ी की विपरीत दिशा में घुमाएं।
- हाथों को कड़ाकर हथेलियों को कलाई से ऊपर उठाएं तथा कलाई से नीचे की ओर गिराएं। ऊपर की ओर उठाने पर हथेलियां सामने की ओर हो जाती हैं तथा नीचे की ओर करने पर हथेलियां शरीर की ओर हो जाती हैं। यह क्रिया 15 से 20 बार करें।
- हथेलियों को दीवार पर रखकर इन्हें आगे की ओर इतना दबाएं कि दर्द न हो। यह क्रिया भी 10 से 20 बार करें।

पर्वतासन

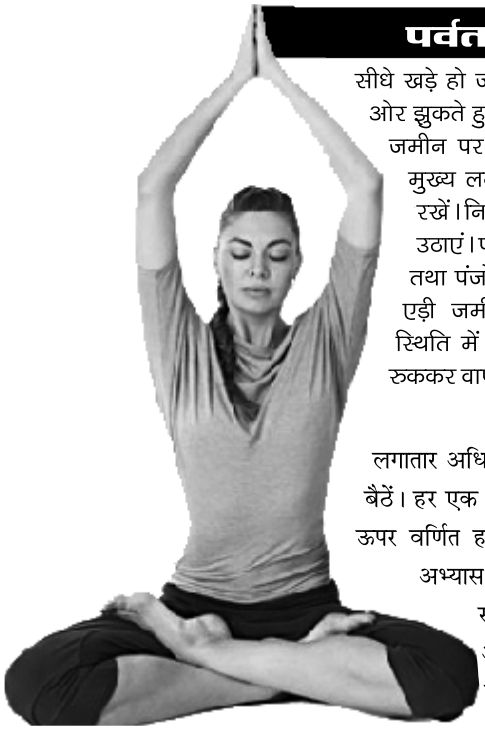

सीधे खड़े हो जाएं। इसके बाद आगे की ओर झुकते हुए दोनों हथेलियों को आगे जमीन पर रखें। हाथों तथा पैरों के मुख्य लगभग 4-5 फीट का अंतर रखें। नितम्बों को अधिकतम ऊपर उठाएं। पूरे शरीर का भार हथेलियों तथा पंजों पर रखें। प्रयास करें कि एड़ी जमीन को स्पर्श करे। इस स्थिति में आरामदायक अवधि तक रुककर वापस पूर्व की स्थिति में आएं।

सुझाव

लगातार अधिक देर तक कम्प्यूटर पर न बैठें। हर एक घंटे बाद दो मिनट के लिए ऊपर वर्णित हाथों के सूक्ष्म व्यायाम का अभ्यास करें। प्रतिदिन 2 से 5 बार सूर्य नमस्कार का अभ्यास और आधा घंटा प्रात: सैर करें।

उत्थित पद्मासन

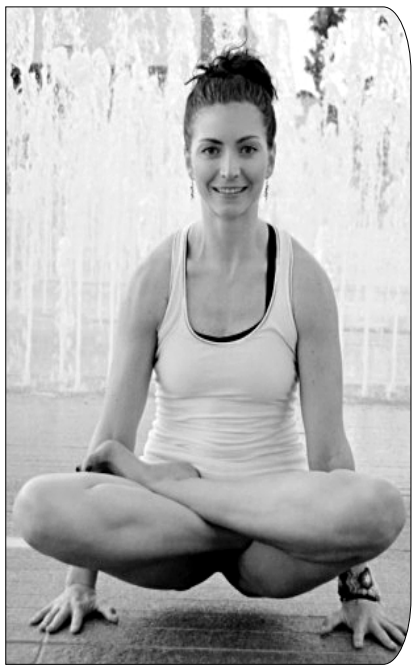

दोनों पैरों को सामने की ओर फैलाकर बैठ जाएं। बाएं पैर को मोड़कर इसके पंजे को दाएं जंघामूल पर तथा दाएं पैर के पंजे को बाएं जंघामूल पर रखें। यह पद्मासन है। दोनों हाथों को शरीर के बगल में जमीन पर रखकर हथेलियों पर पूरे शरीर को जमीन से ऊपर उठाएं। इस स्थिति में आरामदायक अवधि तक रुकें, फिर पूर्व स्थिति में आएं।

- कौशल कुमार

Mewar University
Knowledge to Wisdom

MEWAR UNIVERSITY

A University u/s 2 (f) of the UGC Act 1956, established by Govt. of Rajasthan Act. 4 of 2009 with the right to confer degrees u/s 22 (1) of the UGC Act

MEMBER, ASSOCIATION OF INDIAN UNIVERSITIES (AIU)

ADMISSION ANNOUNCEMENT 2017-18

Diploma, Degree and PG Programmes

Engineering & Technology

Polytechnic Diploma
(Chemical, Civil,Computer Science & Engg., Electronics & Communication,Electrical, Mechanical, Mining,Cement & Concrete Technology, Cement & Ceramics Engg., Textile Engg., Architecture,Automobile, Instrumentation & Control Engg. Petro-Chemical, Plastic Engg.)

B.Tech
(Chemical, Civil, Computer Science & Engg. Electrical, Electronics & Communication, Mechanical, Instrumentation & Control Engg.)

M.Tech
(Computer Science, Digital Communication, Manufacturing System, Power System, Structural Eng., VLSI, Transportation, thermal, Polymer, Cement & Ceramics, Power Electronics & Drives, Renewable Energy, Environmental Technology)

Agriculture & Veterinary Sciences

B.Sc. Agriculture , B.Sc. Forestry
B.Sc. Agronomy , B.Sc. Horticulture
M.Sc. Agronomy
PG Diploma in Organic Farming

Humanities, Social Science & Fine Arts

B.A. (Hons.), B.A. & M.A.
History, Economics, Political Science, Philosophy, Sociology, Public Admin, Hindi, English, Geography, Psychology, Sanskrit, Yoga, Astrology.

MSW
(Family&Child Welfare ,Urban & Rural Community Developments, Personnel Management & Industrial Relations)

Computer System Studies

BCA, B.Sc. (IT), BCA-MCA(Integrated) ,
MCA, PGDCA

Science & Technology

B.Sc(Hons) ,B.Sc(Gen.), M.Sc
(Physics, Chemistry, Mathematics, Bio-tech, Botany, Zoology, Computer Science, Geology, Micro-biology, Bio-informatics, Environmental Science, Operation Research, Statistics, Clinical Psychology)

Mass & Media Communication

B.A., M.A.
Journalism & Mass Communication

Management and Commerce

B.Com.(Hons), B.Com.(Hons)- IFA,
B.Com.(Pass Course), BBA (Hons)-CIMA
M.Com, BBA, BBA-MBA (Integrated)
BTTM, MBA (Full Time)
(Finance, HR, IT, Marketing)

Legal Studies

BA - LLB. (Integrated)
BBA - LLB. (Integrated)
LL.B (3Years), LL.M (2Years)
PG Diploma in Cyber Law

Paramedical Sciences

D. Pharma, B.Pharma,
DMLT, BMLT, BPT

Education & Psychology

B.P.E, B.Ed, B.A. / M.A. (Education)
Diploma in Elementary Education

Vocational Sciences, Skill Development & Entrepreneurship Studies

Diploma Fashion Design, ***Diploma*** Interior Design
Diploma Leather & Footwear,
B.A. Jewellery Design & Manufacturing Techniques

Scholarship/Rebate to merit - cum need based Students belonging to SC/ST/OBC (BPL)/Minority/General

NH-79, Gangrar, Chittorgarh (Raj.) - 312901 Phone : 01471-291151/52, 9269629541,9414109080
Email : admission@mewaruniversity.org Website : www.mewaruniversity.org

ईद की दावत

रहमत और बरकत लेकर आया है, ईद का त्योहार। इस मुबारक मौके पर घर आने वाले रिश्तेदारों, मित्रों और अपने लिए भी बनाइये कुछ खास लज़ीज व्यंजन

स्पेशल रबड़ी सिंवइयां

सामग्री : सिंवइयां - एक कप, घी-एक चम्मच, सूखे मेवे कटे हुए - आधा कप, दूध-2 किलो, चीनी-एक कप, इलायची पाउडर-एक चम्मच, पानी-2 कप।

विधि : रबड़ी बनाना : दूध को एक कड़ाही में उबलने के लिए रख दें। जब दूध गाढ़ा हो जाए तो उसमें चीनी डाल दें और उबलने दें। जब लच्छे पड़ने लगें तो गैस बंद कर दें और इलायची पाउडर डाल दें।

सिंवइयां बनाना : सिंवइयों को एक चम्मच घी में हल्का गुलाबी होने तक सेक लें। फिर उसमें पानी और सूखे मेवे डाल दें। जब पानी सूख जाए, तो गैस बंद कर दें।

ऐसे करें सर्व : एक गिलास लें। उसमें पहले रबड़ी डालें। फिर सिवइयां और फिर से रबड़ी डालकर सर्व करें।

ईद शाही रोट

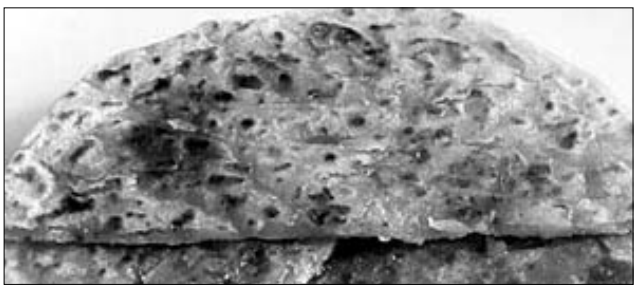

सामग्री : आटा - आधा किलो, मैदा - एक कप, काजू पाउडर-एक चम्मच, खसखस-एक चम्मच, नारियल का बुरादा-एक चम्मच, दूध-एक कप, नमक - आधा चम्मच, चीनी-आधा चम्मच, अजवाइन-आधा चम्मच, घी सेकने के लिए। **विधि :** सभी चीजों को मिलाकर आटा गूंथ ले और दस मिनट छोड़ दें। उसके बाद मोटे रोट बना लें और धीमी आंच पर सेक लें। फिर इसे दूध के साथ सर्व करें।

मुबारका बिरयानी

सामग्री : चावल-2 कप, दही-एक कप, गाजर-एक, शिमला मिर्च-एक, पत्तागोभी कटी-आधा कप, प्याज-2, अदरक-लहसुन का पेस्ट-एक छोटा चम्मच, केसर - 10 से 12 पत्ते, गुलाब जल-एक चम्मच, लालमिर्च-आधा चम्मच, गरम मसाला-आधा चम्मच, नमक-स्वादानुसार, घी-एक बड़ा चम्मच, तेजपत्ता-2, दालचीनी पाउडर-1/4 चम्मच, जीरा-आधा चम्मच।

विधि : चावलों को दो घण्टे के लिए भिगो दें। सभी सब्जियां चौकोर काट लें और केसर गुलाब जल में भिगो दें। फिर एक कड़ाही लें। उसमें घी डालें, फिर जीरा डालें। प्याज और अदरक, लहसुन का पेस्ट डालकर भून लें। फिर सभी सब्जियां डाल दें। सभी मसाले और नमक डालें, फिर थोड़ा-सा पानी डाल कर उबाल लें। जब सब्जियां थोड़ी पक जाएं तो उसमें आधा दही डाल दें और पकने दें। उसके बाद चावल में पानी, तेजपत्ता, लौंग, गरम मसाला डालकर 75 फीसदी उबाल लें और छान लें। एक हांडी लें। उसमें सबसे पहले सब्जियां डालें। फिर थोड़ी केसर डालें, फिर चावल डालें। फिर बचा दही डालें और थोड़ा-सा गरम मसाला और दालचीनी का पाउडर डालें। ऊपर से कपड़ा या फॉइल पेपर लगा दें और 220 सेंटीग्रेट पर 15 मिनट तक पका लें। आप इसे गैस तंदूर में भी पका सकती हैं।

रोलर पास्ता

सामग्री : पास्ता, कोई भी - 2 कप, चीनी-एक कप, काजू व बादाम कटे-आधा कप, केसर की पत्ती गुलाब जल में भिगी हुई-5 से 7, नारियल का बुरादा-2 चम्मच, चीनी-एक कप। **विधि :** सबसे पहले कच्चे पास्ता को घी में भून लें और उसी पास्ता को उबाल लें। फिर छान लें और ठंडा पानी डालकर फिर छान लें। उसके बाद एक कड़ाही में चीनी और आधा कप पानी डालें। पांच मिनट पका लें। उसके बाद पास्ता, नारियल का बुरादा, काजू, बादाम और भिगी केसर डालकर दो मिनट पका लें। इसे गरमा-गरम परोसें। ■

- कला केडिया

लीची

ठंडी भी और कैंसर रोधी भी

गर्मियों में लोग लिक्विड डाइट और फलों का रस लेना पसंद करते और खानपान की आदतों में काफी बदलाव कर लेते हैं ताकि उन्हें गर्मी में खाना पचाने में आसानी हो। गर्मियों में पेट की समस्याओं से बचने के लिए लोग लीची खाना ज्यादा पंसद करते हैं। यह रस से भरपूर होने के साथ फायदेमंद भी है। गर्मियों में लीची खाने के कई फायदे हैं। यह शरीर का तापमान बनाएं रखने के साथ ही कैंसर से लेकर ब्लड प्रेशर तक की बीमारी को दूर करने में सहायक है।

- लीची खाने से चेहरे पर निखार आता है, इसके अलावा चेहरे पर बढ़ती उम्र के निशान भी कम दिखाई देते हैं।
- कैंसर जैसी घातक बीमारी को दूर करने में कारगर है। इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जिसके नियमित सेवन से कैंसर के सेल्स ज्यादा नहीं बढ़ पाते। इसमें मौजूद पोटेशियम और कॉपर ब्लड प्रेशर को कंट्रोल रखने के साथ ही हार्ट अटैक के खतरे को कम करता है।
- लीची खाने से कब्ज की समस्या से निजात मिलती है।
- शरीर के इम्यून सिस्टम को बढ़ाने में यह बहुत लाभकारी मानी है।

मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान में तेजी

-अनिल मिश्रा

राजस्थान के करीब 42 हजार गांवों को जल स्वावलम्बी बनाने की एक महत्त्वाकांक्षी योजना मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने हाथ में ली है। अभियान की शुरुआत 27 जनवरी 2016 से हो चुकी है। उस दिन राजस्थान के 3259 गांवों में जल स्वावलम्बन योजना का विधिवत आरम्भ हुआ। पहले साल करीब तीन हजार गांवों को जल स्वावलम्बी बनाने के लिए चिह्नित किया गया। अगले तीन सालों में करीब 21 हजार गांवों को जोड़ते हुए उन्हें लाभान्वित किया जाएगा। इस योजना के तहत जल स्वावलम्बन के लिए स्थानीय जलस्रोतों जैसे तालाब, बावड़ी, कुए इत्यादि को संरक्षित व विकसित किया जाएगा।

जल संग्रहण कलस्टर इण्डेक्स क्षेत्र में 2 को इकाई मानते हुए प्राकृतिक जल संसाधनों का प्रबंधन किया जाएगा। यह गांवों को जल की आवश्यकता की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने व स्थानीय समाधान की योजना है, जिसे सरकारी और जन भागीदारी के तहत पूरा किया जाएगा। राज्य की पंचायतों और इस योजना से जुड़े एनजीओ को भी इससे जोड़ने का लक्ष्य है। नदी और उसके जलग्रहण और प्रवाह क्षेत्र को अवरूद्ध करने वाले अवैध कब्जों को भी व्यापक लाभ की दृष्टि से जन सहयोग से हटाने के लिए आम सहमति बनानी होगी। भूजल का अंधाधुंध दोहन न हो इसके लिए जनचेतना आवश्यक है। ऋषि- मुनियों ने कहा है कि पानी की बर्बादी धन की बर्बादी जैसी ही है अत: इसकी बचत निहायत जरूरी है। परम्परागत कृषि के सिंचाई साधनों से पानी की बेहद खपत होती है। इसलिए खेती का पैटर्न बदलने के लिए फव्वारा तकनीक से बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति अपनाने के लिए किसानों एवं ग्रामीणों में जन चेतना जागृत करनी होगी। इसके लिए संबंधित प्रशासनिक अधिकारी, मंत्री व सभी जनप्रतिनिधि भी गांव-गांव पहुंचे और एक संकल्प के साथ लक्ष्य को पूरा करवाएं। जल अभियांत्रिकी मंत्री किरण माहेश्वरी स्वयं राज्य में जल चेतना एवं जल प्रबंधन के वास्ते सर्वाधिक सक्रिय हैं। सभी जल संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करने के लिए वाटर ग्रिड बनवाने की दिशा में तथा जल प्रबंधन एवं समन्वय स्थापित करने में स्वयं सक्रिय हैं। इस बीच सरकार ने 'जल ही जीवन' का एक नया कार्यक्रम बनाया इससे भी जल संरक्षण एवं धरती को पानी से रिचार्ज करने के तरीको में बढ़ोतरी होगी।

जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज, कांकरोली को मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के तहत करीबन 38 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में 9 जगहों पर तालाब एवं नाड़ी गहरी करने का दायित्व सौंपा गया है। जे. के. टायर अपनी सामाजिक व क्षेत्रीय जिम्मेदारियों के प्रति वचनबद्ध है और जल प्रबन्धन कार्यों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी कर रहा है। इसी क्रम में ग्राम फियावड़ी, जिला राजसमन्द के तालाब को करीब 13 हजार वर्ग मीटर खोद कर जल-ग्रहण क्षमता में वृद्धि एवं मौजूदा तटबंध व पाल का पुन: निर्माण करवाया गया। इसके साथ ही रामपुरिया तालाब एवं जोहिड़ा भेरू जी के स्थान पर नाड़ी, नाथूवास चेकडेम नाड़ी, ईंट भट्टों की नाड़ी, खातीखेड़ा नाड़ी, श्मशान के सामने चारागाह में नाड़ी को गहरा एवं मरम्मत करने का लगभग 30 हजार वर्गमीटर का कार्य पूरा होने वाला है।

जिला कलक्टर श्रीमती अर्चना सिंह एवं अनिल मिश्रा- जनरल मैनेजर ग्राम सचिव, सरपंच एवं फियावड़ी ग्रामवासियों के साथ जल स्वावलम्बन अभियान के तहत निर्मित तालाब का 1 जुलाई 16 को भूमि पूजन किया गया था। उपरोक्त कार्य पूर्ण होने वाला है। इस काम को पूरा करने वाली संस्था विजन इंडिया के अधिकारियों तथा ग्रामवासियों ने जे. के. टायर के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के मानव संसाधन अधिकारी नरेन्द्र कुमार शर्मा एवं प्रशासनिक अधिकारी बाबूलाल शर्मा ने अतिथियों का स्वागत कर ग्रामवासियों एवं विजन इंडिया के अधिकारियों के सहयोग के लिए धन्यवाद व्यक्त किया।

जल स्वावलम्बन अभियान के प्रमुख उद्देश्य

1. राज्य में उपलब्ध विभिन्न वित्तीय संसाधनों, केन्द्रीय, राज्य, कॉर्पोरेट जगत, ट्रस्टों, गैर-सरकारी संगठन एवं जन सहयोग के बीच समन्वय स्थापित कर जल संरक्षण एवं जल भराव संरचनाओं की गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन करना।

2. ग्रामीणों एवं लाभान्वितों को जल के समुचित उपयोग के बारे में जागृत कर जन-सहभागिता से कार्य सम्पादित कराना।
3. ग्रामसभा में जल की समग्र आवश्यकता यथा पेयजल, सिंचाई, पशुधन व अन्य व्यवसायिक कार्यों का आकलन कर उपलब्ध समस्त जलस्रोतों से प्राप्त पानी के अनुरूप जल बजट का निर्माण व उसी के अनुरूप कार्यों का चिह्नीकरण तथा प्रस्ताव पारित कर मिशन की ग्राम कार्य योजना तैयार करना।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से प्राप्त जल प्रवाह, वर्षा-जल, सतही-जल, भूगर्भीय जल एवं मिट्टी की नमी के जल भराव क्षेत्रों की क्षमता को विकसित करना। उपलब्ध जल संग्रहण ढांचों का उपयोग। अनुपयोगी जल ढांचों का पुनरूद्धार व कायाकल्प, उन्हें क्रियाशील करना एवं नए जल संग्रहण ढांचों का निर्माण करना।
5. जल ग्रहण कलस्टर इन्डेक्स कैचमेन्ट क्षेत्र को इकाई मानते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन तथा जल, जंगल, जमीन जन एवं जानवर का विकास करना।
6. ग्राम को जल आत्मनिर्भर बनाकर पेयजल का स्थाई समाधान करना।
7. क्षेत्रों में जल संग्रहण एवं संरक्षण कर सिंचाई क्षेत्रफल को बढ़ाना।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांवों को इस दिशा में आत्मनिर्भर बनाना है और साथ ही जल के समुचित उपयोग से भूमि की पैदावार क्षमता को भी बढ़ाना है।

चले बसे प्रमुख समाजसेवी लोलावत सा.

श्री पूरणमल जैन 'लोलावत' सा. 26 अप्रैल को संसार से विदा हो गए। कई सामाजिक संगठनों की अगुआई और विकास को आगे बढ़ाने वाले यशस्वी 'मास्टर सा.' उदयपुर से 40 किमी दूर 'बाठेड़ा कलां' गांव में जन्मे तथा बाद में उदयपुर में बस गए।

साधारण परिवार में पैदा होकर उन्होंने अध्यापन कार्य को अपना पेशा बनाया। बाद में उन्होंने रियल एस्टेट कारोबार में अपनी ऐसी साख बनाई कि उनके बनाई प्लानिंग में लोग पूर्ण विश्वास से डील करते रहे। अपने पैतृक निवास के प्रसिद्ध 'अड़िन्दा पार्श्वनाथ मन्दिर' के वे लंबे अर्से तक अध्यक्ष रहे। उनकी देखरेख में ही यह प्रसिद्ध धार्मिक स्थल शानदार पर्यटन व आस्था स्थल बन गया। जैन समाज के अलावा अन्य समाज के बीच भी उन्होंने अपनी मजबूत पैठ बनाई।

आम लोगों के काम करवाने के लिए उन्होंने अपनी राजनैतिक एप्रोच भी बढ़ाई। उच्च व्यावसायिक व सामाजिक पहुंच के बावजूद वे आम लोगों के बीच सरल व मिलनसार स्वभाव के लिए लोकप्रिय रहे। उनके निधन पर कई प्रमुख समाजजनों व राजनीतिक दलों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वे अपने पीछे विरह-व्यथित पत्नी पुष्पा देवी, पुत्र-पुत्रवधू अमित मोनिका, पुत्री-दामाद मधु-दिनेश, निरंजना-राजेन्द्र, मीनल-मनीष, अंतिमा-अभिषेक व जयश्री-राहुल सहित भरापूरा जैन(लोलावत) परिवार छोड़ गए।

गर्मियों में पशुओं की देखभाल

सृष्टि के विकास के साथ ही कृषि एवं पशुपालन का कामकाज होता रहा है। दोनों ही क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी क्रिया भले ही बदल गई, परन्तु बेसिक फेक्टर यथावत है। यानी मानव और पशु का महत्त्व बना रहेगा। इनके बिना जीवन नहीं चल सकता है। कृषि से खाद्यान्न पैदा होता और पशुपालन से दूध एवं अन्य वस्तुएं प्राप्त होती हैं। भारत में पहले हर घर में दुधारू एवं खेतीबाड़ी में उपयोगी पशुओं का पालन होता रहा है। गर्म मौसम में मानव जीवन के साथ पशुओं की हिफाजत, देखभाल, रोगमुक्त रखने व उन्हें पौष्टिक आहार देने की नितांत जरूरत है। प्रस्तुत है शोधार्थी ध्वनि शर्मा का पशुपालन से संबंधित आलेख।

प्राचीन काल से ही भारत पशुपालन व कृषि प्रधान देश रहा है। पशुपालन व देखरेख करना प्रागैतिहासिक काल से ही प्रारंभ हो गया था। ग्रीष्म ऋतु में पशुओं की देखभाल की विशेष आवश्यकता होती है। गर्मी के मौसम में बाहरी तापमान ज्यादा होता है, जिसके फलस्वरूप पशुओं के शरीर का तापमान बढ़ जाता है और पशु तनावग्रस्त होने लगता है। पशुओं के स्वास्थ्य में गिरावट आने लगती है। इससे उनके बीमार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है, जिससे पशुओं में कार्य क्षमता और उनकी उत्पादन क्षमता में कमी होने लगती है। इसलिए गर्मी के मौसम में पशुओं की समुचित देखभाल अति आवश्यक है।

पशुओं में रोग के लक्षण

भूख में कमी (जुगाली बन्द करना), शरीर का तापमान बढ़ना, लड़खड़ाना मुँह खोलकर सांस लेना, हांफना, लार गिरना, प्यास ज्यादा लगना, सूखी व खुरदरी त्वचा।

गर्मी के प्रभाव

गर्मीजन्य तनाव, शरीर भार में कमी, दुधारू पशुओं में दूध की मात्रा कम होना एवं दूध में पोषक तत्वों की कमी होना, नर पशुओं में वीर्य की गुणवत्ता में गिरावट, प्रजनन दर में कमी होना, भ्रूण का मरना व कमजोर बच्चे का जन्म होना, रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होना।

पशुओं को बचाने के उपाय

पशुओं को गर्मी से बचानें के लिए निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए, जिससे पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादन क्षमता की गुणवत्ता बनी रहे।

पशुओं की आवास व्यवस्था/प्रबंधन

- दोपहर में पशुओं को घर के अन्दर या पेड़ की छांव के नीचे रखना चाहिए।
- आवास की छत को पैरा या पत्ते से ढकना चाहिए। इससे आवास के अन्दर गर्मी कम होगी।
- पशु आवास की ऊँचाई कम से कम 4 से 5 मीटर होनी चाहिए।
- पशु आवास में पर्याप्त मात्रा में खिड़की एवं झरोखा होना चाहिए, जिससे ताजी हवा आ सके।
- दोपहर के समय खिड़की या घर के खुले भाग को बोरी से ढक देना चाहिए और पानी से समय-समय पर भिगोना चाहिए।
- पशुशाला के आस-पास घास व पेड़-पौधे पर्याप्त होने चाहिए इससे आवास के अन्दर गर्मी कम होती है।
- दुधारू पशुओं के लिए कूलर, पंखा रहना चाहिए।

जल व्यवस्था/प्रंबधन

- गर्मियों के दिनों में पशुओं को प्रतिदिन नहलाना चाहिए।
- दुधारू पशुओं के लिए पशुशाला के अंदर स्प्रिंकलर, फव्वारा लगा सकते हैं।
- ठंडा साफ सुथरा पानी हर समय पशुओं को उपलब्ध होना चाहिए।
- विशेष रूप से भैंसों के लिए तालाब होना जरूरी है, जिसमें भैंस कुछ देर तक विहार कर सके, इससे भैंस का शारीरिक तापमान कम होता हैं।

पशु आहार प्रंबधन

- गर्मियों के मौसम में पशुओं को हरा चारा देना चाहिए, अगर हरा चारा उपलब्ध न हो तो पेड़ की पत्ती जैसे आम की पत्ती, बबूल की पत्ती, जामुन की पत्ती देना चाहिए।
- गर्मी में संतुलित राशन देना चाहिए जिससे पशुओं की उत्पादन एवं कार्य क्षमता बनी रहे।
- पौष्टिक आहार का मिश्रण पशुओं को खिलाना चाहिए

उदाहरण के तौर पर

संघटक	मात्रा (प्रतिशत)
गेहूँ चोकर	20
चावल का चोकर	20
मकई	15
खली	25
अरहर की चुरी	10
मूंग की चुरी	5
मिनरल मिक्सर व नमक	5
कुल मात्रा प्रतिशत	**100**

चोकर/दाना के मिश्रण

सामग्री	भाग प्रतिशत
मूंगफली खली	25
चना	20
जौ	15
गेहूँ का चोकर	40
कुल मात्रा	**100**

- पशुओं को प्रतिदिन 4-5 बार खाना देना चाहिए
- पशुओं का खनिज मिश्रण, विटामिन व फीड सप्लीमेंट देना चाहिए।

पशुओं को चराने की विधि

- गर्मी के मौसम में पशुओं को प्रात:काल 9:00 बजे तक एवं सांय: 5 बजे के बाद चराना चाहिए, क्योंकि इस समय तापमान कम रहता है।
- अगर संभव हो तो पशुओं को रात में चरा सकते हैं।
- पशुओं को प्रतिदिन दो घण्टा सुबह एवं दो घंटा शाम को चराना चाहिए।

JK Cement LTD.
1974 से
राष्ट्र के निर्माण में भागीदार
मजबूत इमारतें बनाना एक बात है। जबकि मजबूत रिश्ते बनाना अलग बात है। साढ़े तीन दशक से अधिक समय से, जे.के. सीमेंट लिमिटेड अपने ग्राहकों, चैनल साझेदारी और स्टेकहोल्डरों को उनकी आशाओं से अधिक मूल्य का सृजन करके उनके भरोसे की नींव को और मजबूत बनाने की दिशा में निरंतर कार्यरत है। यह अपने पितृ समूह-जे.के. संगठन के उच्च मानदंडों की कसौटी पर खरा उतरा है।
हमारी यूनिट्स : जे.के.सीमेंट वर्क्स निम्बाहेड़ा। जे.के. सीमेंट वर्क्स, मांगरोल। जे.के. सीमेंट वर्क्स, गोटन। जे.के. सीमेंट वर्क्स, मुद्दोल। जे.के. सीमेंट वर्क्स, गोटन
सेंट्रल मार्केटिंग ऑफिस :- उत्तर (व्हाइट सीमेंट और ग्रे सीमेंट) : नई दिल्ली दक्षिण (ग्रे सीमेंट) : बेलगाम, कर्नाटक
www.jkcement.com
हमारे ब्राण्ड्स
J.K. SUPER CEMENT
JK WHITE CEMENT
JK WALL PUTTY
JK WATER PROOF

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

मन अशांत रहेगा, आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होगी, स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही ठीक नहीं, भूमि सम्बन्धित निवेश इस माह टालें, पैतृक विवादों का समाधान हो सकता है। जीवन साथी से अच्छा तालमेल, सन्तान पक्ष मध्यम, वैचारिक समन्वय बनाये रखें।

वृषभ

मेल-मिलाप एवं सामाजिक कार्यों में व्यस्तता, भौतिक सुखों में वृद्धि सम्भव, सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी, विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता संभव, कार्य एवं व्यावसायिक क्षेत्र में परिवर्तन सम्भव, वर्तमान कार्य क्षेत्र के विस्तार का योग।

मिथुन

बौद्धिक-व्यक्तित्व निखारने का सुयोग्य समय, साझेदारी में लाभ, परन्तु आत्मविश्वास की कमी के कारण निर्णय टल सकते हैं, बड़ों का परामर्श लाभदायक, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, जीवन साथी से सामंजस्य रखें, पुरुषार्थ पर ध्यान देवें।

कर्क

वित्तीय मामलों में सावधानी आवश्यक, वर्तमान कार्यकलापों एवं व्यवसाय में सतर्कता, अपने अनुभवों का लाभ, विदेश प्रवास की इच्छा पूरी हो, आय के स्रोत बढ़ेंगे, परन्तु खर्च की अधिकता।

सिंह

रचनात्मक कार्यों में वृद्धि, व्यावसायिक एवं नौकरी सम्बन्धित कार्यों में कठिनाइयों के साथ सफलता, साझेदारी प्रतिकूल रहेगी, माह का उत्तरार्द्ध विशेष फलदायी सिद्ध, भौतिक एवं दिखावटी वस्तुओं पर खर्च, खतरा मोल लेने में विशेष सावधानी।

कन्या

माह के उत्तरार्द्ध में कर्ज से छुटकारा पा सकेंगे, नये प्रेम संबंध की शुरुआत संभव, भाग्य का अच्छा साथ मिलेगा, अपने कर्म क्षेत्र में विस्तार, एवं निर्भीक विचारधारा से प्रतिष्ठा, भय की स्थिति से निजात, स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा।

तुला

जीवन साथी का पूर्ण सहयोग, पुराने विवादों का समाधान, रोजगार के प्रचुर संसाधन प्राप्त होंगे।, आवश्यकता से अधिक दौड़-भाग, किसी रोग से पीड़ित है तो आराम मिलेगा, संतान पक्ष से अशान्ति, आय प्रभावित होगी।

वृश्चिक

नये रोग का सामना करना पड़ सकता, राजकीय एवं शासकीय कार्यों में बाधाएं, नये लोगों से मेल मिलाप एवं लाभ, पूर्व नियोजित कार्यों में भी विघ्न संभव, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ रहेगा, भाग्य मध्यम, भाई-बन्धुओं से वैमनस्य।

धनु

न्यायिक मामले सुलझेंगे, समय के अनुसार सुझबूझ दिखानी होगी, पारिवारिक समस्याओं से छुटकारा, सोचेंग कुछ और एवं करेंगे कुछ और, रोजगार के बेहतर अवसर मिलेंगे, दाम्पत्य जीवन में तनाव की स्थिति, सन्तान की ओर से सन्तुष्टि।

मकर

भागमभाग की स्थिति रहेगी, अधिकारियों एवं वरिष्ठजनों से मुलाकातें तथा सृजनात्मक कार्य में रहेंगे संलग्न, पुरुषार्थ के अनुपात में परिणाम नहीं, कार्य क्षेत्र में विस्तार माह के उत्तरार्द्ध में सम्भव, स्वास्थ्य में प्रतिकूलता, व्यय अधिक होगा।

कुम्भ

निर्णय शक्ति में उठापटक रहेगी, आलस्य के कारण कुछ कर पाने की स्थिति में न रहेंगे, मित्रों एवं अपनों से टकराव, परन्तु आप सही साबित होंगे, व्यापार एवं कार्यक्षेत्र में बदलाव की स्थिति, स्वास्थ्य में गिरावट, जीवन साथी से कटुता, साझेदारी नुकसानप्रद, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ रहेगा।

मीन

धार्मिक एवं पारिवारिक कार्यक्रमों में व्यस्तता, मांगलिक कार्यों का आयोजन, भाई-बहिनों का पूर्ण सहयोग, माह का पूर्वार्द्ध आपके लिए प्रतिकूल, जो विचार चल रहे वे 9 जून से परिवर्तित होंगे, परिवार या कार्यस्थल में टकराव, लम्बी दूरी की यात्राओं के योग बनेंगे।

पृष्ठ 27 का शेष

वापसी के लिए कांग्रेस में बुनियादी बदलाव

हाल ही में महाराष्ट्र के जुझारू नेता अविनाश पाण्डेय को एआइसीसी महासचिव बना कर राजस्थान कांग्रेस प्रभारी बनाया गया। अस्सी के दशक में छात्र संगठन और युवक कांग्रेस से अपने कॅरियर की शुरूआत करने वाले पाण्डेय जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं के बीच काफी लोकप्रिय हैं। वे महाराष्ट्र के विधायक व राज्यसभा सांसद तथा राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस संगठन के कई महत्त्वपूर्ण पदों पर भी रहे। संगठन के बेजोड़ शिल्पी और आम कार्यकर्ताओं के बीच मिलनसार अविनाश पाण्डेय के चयन से राजस्थान कांग्रेस में नया उत्साह दिख रहा है। इनकी टीम में चार एआइसीसी सचिव भी हैं। ये हैं : यूपी के पूर्व विधायक विवेक बंसल, उत्तराखंड के पूर्व विधायक गाज़ी मोहम्मद निजामुद्दीन, दिल्ली के पूर्व विधायक तरुण कुमार और देवेन्द्र यादव। कांग्रेसी हलके में माना जा रहा है कि यह राजस्थान विधानसभा चुनाव की पुरजोर तैयारी है। कांग्रेस ने यदि निष्ठावान कार्यकर्ताओं को पार्टी से जोड़ने और जनता के बीच फिर से पैठ बनाने का प्रयास किया तो राजस्थान में भाजपा के लिए खासी मुसीबत खड़ी हो सकती है।

पीसीसी बैठक में एकता व उत्साह का नज़ारा : कांग्रेस कमेटी की प्रदेश स्तरीय कार्यकारिणी व पदाधिकारियों, विधायकों तथा जिला अध्यक्षों की संयुक्त बैठक जयपुर में 14 मई को आयोजित हुई। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में नए महासचिव व प्रदेश प्रभारी नियुक्त होने के बाद अविनाश पाण्डेय पहली बार जयपुर आए तो कांग्रेसजनों में खासा उत्साह देखा गया। पूर्व महासचिव व प्रभारी गुरुदास कामत अर्से से पद छोड़ने को उतावले थे। लंबे समय से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट सरकार के खिलाफ अभियान चला रहे हैं, परन्तु संगठन में सुस्ती पसरी है। अविनाश पाण्डेय के पदभार संभालते ही आम कांग्रेसजनों के बीच नई आशा व विश्वास का संचार हुआ। कांग्रेस में कार्यकताओं और नेताओं की कमी नहीं है, बस उनमें नए जोश का संचार करना और उनकी मान-मनुहार की जरूरत है। कई समय से संगठन में गुटबाजी व्याप्त है। इससे बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं में निराशा व्याप्त रही। भाजपा सरकार जनता की उम्मीदों पर नाकारा साबित हुई, परन्तु क्षेत्रीय स्तर पर संगठन सरकार का न प्रतिरोध कर पा रहा था और न ही विपक्ष की अपनी जिम्मेदारी का वहन। ऐसे में प्रदेश स्तरीय कांग्रेस की धमाकेदार बैठक से कार्यकर्ताओं के चेहरे खिल उठे। बैठक में अविनाश पाण्डेय ने साफतौर पर कहा कि अब कार्यकर्ताओं व नेताओं को गुटबाजी छोड़ना ही होगा। पिछले चुनाव में पार्टी से हुई गलतियों को सुधारा जाएगा और अगले साल विधानसभा चुनाव राहुल गांधी के नेतृत्व में ही लड़े जाएंगे। कांग्रेस पार्टी का मुख्य लक्ष्य देश में खोई प्रतिष्ठा हासिल करना है। राजस्थान में वसुन्धरा सरकार की घोर विफलता से कांग्रेस की सरकार बनना तय है और मुख्यमंत्री बनाने का फैसला पार्टी परम्परा के अनुसार विधायकों और हाइकमान की सहमति से होगा। बैठक में एआइसीसी महासचिव अशोक गहलोत ,डॉ. सी. पी. जोशी, मोहन प्रकाश, प्रदेश अध्यक्ष सचिन पायलट, प्रतिपक्ष नेता रामेश्वर डूडी, डॉ. गिरिजा व्यास सहित कई नेता मौजूद थे। तमाम नेताओं ने एकजुटता दिखाई और संदेश दिया कि सभी का सोनिया गांधी और राहुल गांधी में पूरा विश्वास है। यदि प्रदेश के सारे नेता और कार्यकर्ता संगठन की मजबूती के लिए मिल बैठकर काम करेंगे तो राजस्थान में अगली सरकार कांग्रेस के नेतृत्व में ही बनेगी।

आमूलचूल बदलाव की जरूरत : देश भर में सत्ता के दौरान अहं में डूबे नेता आज भी उसी ठसके से चल रहे हैं। आम कार्यकर्ता के बीच बैठना उन्हें पसंद नहीं। भाजपा का केन्द्रीय नेतृत्व 2019 की नहीं, 2024 की भी तैयारियां कर रहा है और कांग्रेस के नेता अभी बूथ चुनाव और व्यक्तिगत शिकवे-शिकायतों से उबर भी नहीं पा रहे हैं। सिर्फ़ लफ्ज़ों के बल पर जनता का भरोसा जीतना मुश्किल है। कई राज्यों में कांग्रेस के कमजोर कप्तान कागजी घोड़े दौड़ा रहे हैं। देश के हर कोने में कांग्रेस का मजबूत आधार है, जिसकी पहचान नहीं हो रही। फिर से विश्वास बहाली के लिए कांग्रेस हाईकमान ने गुजरात, गोवा और कर्नाटक में बड़े बदलाव किए हैं और राष्ट्रीय स्तर पर सक्षम लोगों को बड़ी जिम्मेदारी दी है। अप्रैल में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का महासचिव बना कर गुजरात जैसे महत्त्वपूर्ण राज्य का कांग्रेस प्रभारी बनाया गया है। वे आम कार्यकर्ताओं के बीच काफी लोकप्रिय और अपनी सादगी-सौम्यता के लिए पहचाने जाते हैं। राजस्थान के अब राष्ट्रीय स्तर पर डॉ. सी पी जोशी, मोहन प्रकाश व अशोक गहलोत तीन महासचिव हैं। मई में कांग्रेस आलाकमान दो राज्यों में कांग्रेस कप्तान बदल चुका है। सुनील जाखड़ को पंजाब और प्रीतमसिंह को उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बना कर मजबूती की दिशा में एक और कदम उठाया है। जल्द ही कुछ और सूबों में कांग्रेस को नए कप्तान मिल सकते हैं। कांग्रेस नेतृत्व ने इस साल के अंत में होने वाले गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विजयी होने की रणनीति पर अमल शुरू कर दिया है। यदि संगठन स्तर पर इसी तरह बदलाव और नई जान फूंकने की लगातार कोशिशें परवान पर चढ़ी तो हार को जीत में बदलना शायद ज्यादा मुश्किल नहीं होगा।

प्रत्यूष समाचार

जीएसटी पर परिचर्चा

जीएसटी पर चर्चा करते जे.के. टायर के महाप्रबन्धक अनिल मिश्रा, वेदान्ता के अमिताभ गुप्ता, अंशुल मोगरा एवं पुष्पकांत शाकद्वीपी।

उदयपुर। चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री और बिजनेस स्टेण्डर्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में जीएसटी पर विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया। वेदान्ता हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य वित्त अधिकारी अमिताभ गुप्ता, जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्री के महाप्रबंधक अनिल मिश्रा, यूसीसीआई के मानद कोषाध्यक्ष अंशुल मोगरा एवं पेसेफिक विवि के प्रो. पुष्पकांत शाकद्वीपी ने जीएसटी कर प्रणाली से उद्योग, व्यवसाय पर प्रभाव व लाभों तथा वाणिज्य कर विभाग के सहायक आयुक्त संजय कुमार विजय ने प्रावधानों के बारे में बताया। यूसीसीआई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हंसराज चौधरी ने अतिथियों का स्वागत किया।

डिजायर टूअर के नए मॉडल का अनावरण

नवनीत मोटर्स के सीईओ एल.एन. माथुर डिजायर टूअर के नए मॉडल का अनावरण करते हुए साथ में हमेर सिंह एवं मोहम्मद खान।

उदयपुर। मारूति सुजुकी इंडिया के अधिकृत विक्रेता नवनीत मोटर्स में डिजायर टूअर के नए मॉडल का अनावरण पिछले दिनों सीईओ एल एन माथुर और अरावली ट्यूर के हमेरसिंह ने किया। इस दौरान टैक्सी ऑपरेटर्स और ग्राहक उपस्थिति थे। जनरल मैनेजर मोहम्मद खान ने बताया कि नई डिजायर टूअर में ग्राहकों के लिए नए लग्जरी एवं आरामदायक फीचर्स शामिल किए गए हैं। आकर्षक इंटीरियर एवं फ्रंट पावर विंडो, सेन्ट्रल लोक जैसे फीचर्स का समावेश हैं।

नंदवाना को पीएचडी

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय ने आशीष नंदवाना को पीएचडी की उपाधि प्रदान की है। उन्होंने राजस्थान विद्यापीठ का इतिहास (बीसवीं शताब्दी) विषय पर सहायक आचार्य डॉ. हेमेन्द्र चौधरी के निर्देशन में शोध कार्य किया।

धर्मशाला निर्माण में सहयोग के लिए आभार

महाराणा मेवाड़ चेरिटबल फाउण्डेशन के अध्यक्ष एव प्रबन्ध न्यासी अरविन्दसिंह मेवाड़ के साथ समिति के पदाधिकारी बालूसिंह कानावत, नारायण सिंह चुण्डावत एवं अन्य।

उदयपुर। चित्तौड़गढ़ स्थित आसावरा माता में कार्यरत भवानी क्षत्रिय समाज धर्मशाला विकास समिति द्वारा नवनिर्मित धर्मशाला में सहयोग के लिए अरविन्दसिंह मेवाड़ का आभार व्यक्त किया गया। आसावरा माता मंदिर के समीप मुख्य मार्ग पर समिति द्वारा वृहद स्तर पर धर्मशाला का निर्माण करवाया जा रहा है। इसके लिए महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन उदयपुर द्वारा आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। समिति के पदाधिकारी बालूसिंह कानावत एवं नारायण सिंह चुण्डावत के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने शंभूनिवास पैलेस में अरविन्दसिंह मेवाड़ से भेंट कर उनका आभार व्यक्त किया।

राज्य में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल

विष्णुचरण मलिक

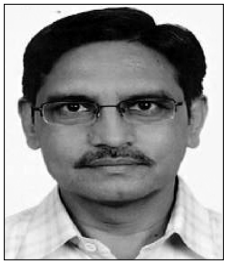
प्रेमचंद बेरवाल

राजेन्द्र भट्ट

जितेन्द्र उपाध्याय

मुक्तानंद अग्रवाल

उदयपुर। राजस्थान में पिछले दिनों बड़ा प्रशासनिक फेरबदल करते हुए कार्मिक विभाग ने 77 आईएएस और 46 आईपीएस तथा 150 आरएएस के तबादले किए।

इनमें 15 जिलों के कलक्टर भी शामिल हैं। राजसमंद में प्रेमचंद बेरवाल, उदयपुर में विष्णुचरण मलिक, डूंगरपुर में राजेन्द्र भट्ट, भीलवाड़ा में मुक्तानंद अग्रवाल, कोटा में रोहित गुप्ता, पाली में सुधीर कुमार शर्मा, बूंदी में शिवांगी स्वर्णकार को कलक्टर बनाया गया है। राजसमंद के नए एसपी मनोज कुमार होंगे। उदयपुर में नए सीसीएफ अक्षयसिंह होंगे। जितेन्द्र कुमार उपाध्याय को आयुक्त देवस्थान विभाग उदयपुर, कालूराम रावत पुलिस अधीक्षक बांसवाड़ा, शिवराज मीणा को पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़, हिम्मत अभिलाष टांक को पुलिस अधीक्षक डूंगरपुर पद पर लगाया गया है। रामनाथ चाहिल को मुख्य कार्यकारी अधिकारी बांसवाड़ा, बालमुकुंद असावा को मुख्य कार्यकारी अधिकारी नाथद्वारा मंदिर मंडल, परशुराम धानका को मुख्य कार्यकारी अधिकारी डूंगरपुर, गोविंद सिंह देवड़ा को जिला आबकारी अधिकारी उदयपुर, प्रदीपसिंह सांगावत को अतिरिक्त आबकारी अधिकारी जोन, दाताराम को मुख्य कार्यकारी अधिकारी चित्तौड़गढ़, आशीष कुमार शर्मा को प्रन्यास सचिव भीलवाड़ा, ज्ञानमल खटीक को जिला रसद अधिकारी चित्तौड़गढ़, विनय पाठक, अतिरिक्त जिला कलेक्टर डूंगरपुर, वंदना खोरवाल, उप निदेशक स्थानीय निकाय उदयपुर, हेमेन्द्र सागर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रतापगढ़ बनाए गए हैं।

मेवाड़ विश्वविद्यालय ने किया एमओयू

एमओयू का आदान-प्रदान करते सचिव गोविन्द गदिया, आर. के. गदिया एवं अन्य।

चित्तौड़गढ़। मेवाड़ विश्वविद्यालय एवं इंटरनेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन यूके के मध्य गत 28 अप्रैल को एमओयू किया गया। जिससे इंटरनेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन यूके द्वारा मेवाड़ विश्वविद्यालय के बीबीए एवं बीकॉम के पाठ्यक्रमों को अकादमिक मजबूती मिलेगी। विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. टीएन माथुर ने बताया कि अब से मेवाड़ विश्वविद्यालय के उक्त पाठ्यक्रम इंटरनेशनल स्किल डेवलपमेंट कारपोरेशन यूके की विशिष्ट पाठ्य प्रणाली से चलाये जाएंगे। जिससे विश्वविद्यालय में अध्ययनरत प्रबन्धन के विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष शैक्षणिक लाभ एवं बीकॉम ऑनर्स का पाठ्यक्रम एसोसिएशन ऑफ चार्टर्ड सर्टिफाइड अकाउंटेंट्स एवं बीबीए चार्टर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अकाउंटेंट द्वारा सर्टिफाइड किया जाएगा। पाठ्यक्रमों की रोजगारोन्मुखी विशेषता को बढ़ावा मिलेगा। इस अवसर पर मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी के सचिव गोविन्द गदिया, आर के गदिया, डीन पालीवाल, डी. के. शर्मा, ओएसडी विधानी एवं समस्त विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

योगी को एनएसएस अवलोकन का निमंत्रण

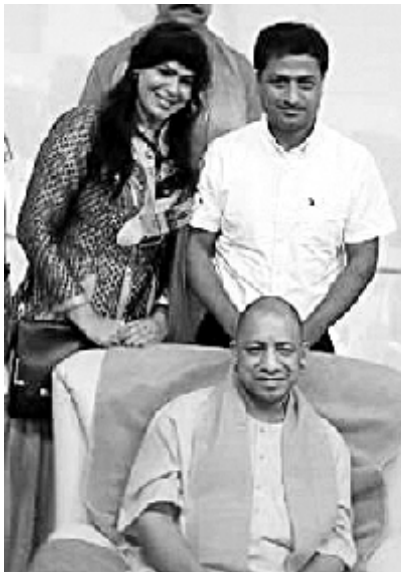
उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ नारायण सेवा संस्थान के निदेशक प्रशांत अग्रवाल एवं वंदना अग्रवाल।

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल व निदेशक वंदना अग्रवाल ने हाल ही में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके आवास पर भेंट की और उन्हें संस्थान अवलोकन का निमंत्रण दिया। उन्होंने संस्थान के दिव्यांग एवं अन्य पीड़ितों के लिए संचालित नि:शुल्क सेवा प्रकल्पों की मुख्यमंत्री को जानकारी दी। योगी ने उदयपुर यात्रा का कार्यक्रम बनने पर संस्थान में आने के लिए आश्वस्त किया।

सज्जनगढ़ पैलेस रोड का पेवरीकरण

उदयपुर। गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने पिछले दिनों सज्जनगढ़ पैलेस रोड पेवरीकरण का शुभारंभ किया। नगरविकास प्रन्यास के माध्यम से 30 लाख रुपये की लागत से करीब सवा किलोमीटर लम्बी सड़क का पेवरीकरण होगा। उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने बड़ी तालाब से सज्जनगढ़ क्षेत्र में जलापूर्ति की बात कही। इससे अभयारण्य के साथ-साथ आमजन को भी पेयजल की सुलभता होगी। समारोह को नगर विकास प्रन्यास के अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, मेयर चन्द्रसिंह कोठारी, डिप्टी मेयर लोकेश द्विवेदी, मुख्य वन संरक्षक राहुल भटनागर ने भी संबोधित किया। स्वागत उप वन संरक्षक(वन्य जीव) टी. मोहनराज ने किया। वन संरक्षक आईपीएस मथारू, यूआईटी सचिव रामनिवास मेहता सहित वन विभाग के अधिकारीगण व समाजसेवी मौजूद थे।

सज्जनगढ़ पैलेस रोड पेवरीकरण के शुभारंभ पर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया, फूलसिंह मीणा, रविन्द्र श्रीमाली, राहुल भटनागर, रामनिवास मेहता एवं अन्य।

झाला ने पदभार संभाला

उदयपुर। भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन पद पर गुणवन्त सिंह झाला ने पदभार ग्रहण किया। झाला ने कहा कि विश्वविद्यालय छात्र-छात्राओं की रुचिनुसार नए पाठ्यक्रम शुरू करेगा। साथ ही प्लेसमेन्ट शिविर, बालिका शिक्षा, समेकित कृषि एवं कम्प्यूटर शिक्षा को प्राथमिकता दी जावेगी। विद्या प्रचारिणी सभा के मंत्री डॉ. महेन्द्रसिंह राठौड़, प्रबन्ध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़, वित्तमंत्री डॉ. दरियावसिंह चुण्डावत, कार्यसमिति सदस्य मूलसिंह सोलंकी, डॉ. शिवसिंह सारंगदेवोत, राजेन्द्रसिंह झाला, महेशचन्द्रसिंह सोलंकी, बलवन्तसिंह झाला, प्रदीपसिंह झाला, कुलदीपसिंह चुण्डावत, भवानीप्रतापसिंह झाला, पुष्पेन्द्रसिंह शक्तावत आदि मौजूद थे।

डॉ. जोशी के अधीक्षक बनने पर खुशी

उदयपुर। महाराणा भूपाल चिकित्सालय में ऑर्थोपेडिक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. विनय जोशी के अधीक्षक बनाने का चिकित्सकों, सहयोगियों एवं नर्सिंगकर्मियों ने स्वागत किया है। एमएस ऑर्थोपेडिक डॉ. विनय जोशी पांच वर्ष तक सरकारी नियुक्तियों पर खाड़ी देशों में कंसलटेंट के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। सात से ज्यादा शोध पत्रों का वाचन कर चुके है और कई पब्लिकेशन में उनके पत्र प्रकाशित हुए हैं। उनके आने के बाद आर्थोपेडिक विभाग टीम ने अब तक 206 घुटने व 350 स्पाइन सर्जरी सफलतापूर्वक की है। डॉ. जोशी की प्राथमिकता एमबी चिकित्सालय की आपातकालीन इकाई को सुदृढ़ और उसका विस्तार करना है। रेजिडेंट डॉक्टर, सीनियर डॉक्टर व नर्सेज कर्मचारियों के बीच सौहार्द्र का वातावरण स्थापित करने के लिए आपसी सम्प्रेषण को बेहतर बनाया जाएगा।

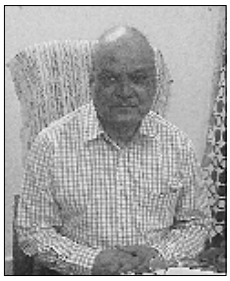

जे. के. सुपर सीमेंट के नए लोगो की लांचिंग

निम्बाहेड़ा। देश के सीमेंट उद्योग में अग्रणी जे. के. सीमेंट वर्क्स ने अपने सुप्रसिद्ध ब्रांड जे. के. सुपर सीमेंट को निम्बाहेड़ा और मांगरोल प्लांट में एक नए अवतार में लांच किया। इस मौके पर कंपनी के युनिट हेड एस. के. राठौड़ ने कहा कि नया लोगो सुरक्षा, विकास, स्थायित्व, शक्ति एवं निरन्तरता का प्रतीक है। कंपनी की ब्रांडिंग टीम ने आमजन, स्टॉकिस्ट, डीलर्स, कर्मचारियों व श्रमिकों से एक सर्वे कर उत्पाद की ब्रांडिंग नए लुक के साथ लांच किया है। इस अवसर पर पी. आर. चौधरी, केएम जैन, महिम कच्छावा, डीके पटेल आदि भी मौजूद थे।

हितैषी को ब्राह्मण रत्न सम्मान

जयपुर सांसद रामचरण बोहरा, विधायक रामलाल शर्मा, मनोज भारद्वाज, पंडित सुरेश मिश्रा से पुरस्कार प्राप्त करते विष्णु शर्मा हितैषी।

उदयपुर। सर्वब्राह्मण महासभा, राजस्थान की ओर से जयपुर में पन्द्रह दिवसीय भगवान परशुराम जयंती समारोह का समापन समारोह 7 मई को भैरोंसिंह शेखावत स्मृति सभागार, चेम्बर भवन में संपन्न हुआ।

समारोह में प्रदेश की 40 विभूतियों को विभिन्न क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए 'ब्राह्मण रत्न' सम्मान प्रदान किया गया। उदयपुर संभाग से पत्रकारिता और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य के लिए 'प्रत्यूष' के सम्पादक एवं समाजसेवी विष्णु शर्मा हितैषी को यह अवार्ड जयपुर सांसद रामचरण बोहरा, उपमहापौर मनोज भारद्वाज, विधायक रामलाल शर्मा एवं सर्वब्राह्मण महासभा के प्रदेशाध्यक्ष पंडित सुरेश मिश्रा ने प्रदान किया।

रोटरी क्लब हेरिटेज की बुलेटिन का विमोचन

बुलेटिन का विमोचन करते रमेश चौधरी, डॉ. यशवंत कोठारी, डॉ. निर्मल कुणावत, डॉ. लोकेश जैन, दीपक सुखाड़िया एवं अशोक सोनी।

उदयपुर। रोटरी क्लब हेरिटेज की वर्ष 2016-17 की प्रान्तपाल की अधिकारिक यात्रा होटल अलका में आयोजित की गई। प्रान्तपाल रमेश चौधरी ने रोटरी द्वारा वैश्विक स्तर पर आयोजित कार्यों की जानकारी दी। क्लब अध्यक्ष संजीव जोधावत ने बताया कि इससे पूर्व प्रान्तपाल ने रामपुरा स्थित संस्कृत उच्च प्राथमिक विद्यालय में बालक-बालिकाओं के लिए शौचालय एवं स्वच्छ पेयजल टंकी निर्माण का उद्घाटन किया। क्लब ने रोटरी इण्डिया फाउण्डेशन को 91 हजार रुपये का चेक प्रदान किया। अतिथियों ने क्लब की बुलेटिन का विमोचन भी किया।

प्रेम अध्यक्ष एवं मुकेश सचिव बने

प्रेम मेनारिया

मुकेश गुरानी

उदयपुर। रोटरी क्लब मेवाड़ में वर्ष 2018-19 के लिए प्रेम मेनारिया अध्यक्ष और मुकेश गुरानी सचिव चुने गए। क्लब अध्यक्ष संदीप सिंघटवाड़िया ने बताया कि क्लब की बैठक में दोनों पदाधिकारियों को निर्विरोध चुना गया। इस दौरान अन्य पदाधिकारी, सदस्य मौजूद थे।

द स्कॉलर्स एरिना के शिक्षकों को सम्मान देते बी.एल. जैन, डॉ. लोकेश जैन, डॉ. शर्मिला जैन एवं प्रशांत दुराफे।

आभार प्रदर्शन समारोह

उदयपुर। द स्कॉलर्स एरिना संस्थान में आभार प्रदर्शन समारोह उत्साह से मनाया गया।

प्राचार्य डॉ. शर्मिला जैन ने बताया कि मुख्य अतिथि कान्तिलाल मेहता, विशिष्ट अतिथि सरस्वती मेहता, पद्मावती संस्थान के संरक्षक बी. एल. जैन, संस्थान के प्रशासक डॉ. लोकेश जैन, बांसवाड़ा शाखा प्रबन्धक प्रशान्त दुराफे मौजूद थे। कई खेलों का आयोजन किया गया। शिक्षकों ने भी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी।

इंदिरा आईवीएफ का स्थापना दिवस

उदयपुर। 22 सेंटरों के साथ देश की सबसे बड़ी फर्टिलिटी चेन इंदिरा आईवीएफ हॉस्पिटल प्रा. लि. उदयपुर ने 2 मई को अपना सातवां स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया। वर्ष 2011 से शुरू हुए आईवीएफ से अब तक 17 हजार से ज्यादा नि:संतान दम्पतियों ने संतान प्राप्त की है।समारोह में इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के संस्थापक और चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, क्षितिज, नितिज, आशीष लोढ़ा, मनीष खत्री और डॉक्टर्स सहित पूरा स्टाफ मौजूद रहा।

समारोह में उपस्थित चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, डॉ. क्षितिज मुर्डिया, नितिज मुर्डिया, मनीष खत्री, आशीष लोढ़ा एवं अन्य।

सोजतिया सम्मानित

उदयपुर। वरिष्ठ नागरिक परिषद् उदयपुर द्वारा पिछले दिनों समाजसेवी प्रो. रणजीत सिंह सोजतिया के 80 वर्ष की आयु पूरी होने पर सम्मान किया गया। डॉ. के. एन. नाग पूर्व वाइस चांसलर एमएलएसयू, सज्जन सिंह राणावत, पूर्व आइएएस अध्यक्ष भूपाल सिंह कोठारी, सीनियर एडवोकेट मदनलाल धुपड़ एवं सचिव के. एस. नलवाया ने उन्हें शुभकामनाएं दी।

एमडीएस में कल्पित का उत्साहवर्द्धन

कल्पित वीरवाल का सम्मान करते रवीन्द्र श्रीमाली, डॉ. प्रहलाद राय सोमानी, रमेश चन्द्र सोमानी, डॉ. शैलेन्द्र सोमानी एवं अन्य।

उदयपुर। एमडीएस सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, हिरणमगरी में कल्पित वीरवाल के लिए विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इसमें महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली, एमडीएस एज्यूकेशन सोसायटी के केदारनाथ गुप्ता, डॉ. प्रहलाद राय सोमानी रवीन्द्र पारिख, ट्रस्टी रमेश चन्द्र सोमानी एवं निदेशक डॉ. शैलेन्द्र सोमानी भी उपस्थित रहे। यूआईटी चेयरमैन द्वारा 5000 रुपए का चेक कल्पित वीरवाल को प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि कल्पित वीरवाल ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित जेईई मेन्स परीक्षा में देश में सर्वोच्च स्थान पाया है।

डॉ. पारीक से बच्चों ने सीखा मनोविज्ञान

उदयपुर। फोर्टिस जेके हॉस्पिटल, उदयपुर के तत्त्वावधान में दो दिवसीय मनोविज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. समीर पारीक ने बच्चों को मीडिया से होने वाले दुष्प्रभावों पर बात की। उन्होंने माता-पिता एवं गुरुजन से आह्वान किया कि बच्चों के मानसिक एवं शारीरिक विकास पर ध्यान दें। कार्यक्रम की अध्यक्षता फोर्टिस अस्पताल लिमिटेड राजस्थान डायरेक्टर प्रतीम तंबोली ने की। डायरेक्टर महेन्द्रपाल सिंह छाबड़ा एवं गुरविंदर सिंह भी उपस्थित थे।

दिव्य प्रताप ने जीता पदक

दिव्य प्रतापसिंह का सम्मान करते कोच मंजीत सिंह, मोना पालीवाल एवं स्कूल निदेशक दिलीप सिंह यादव।

उदयपुर। मिरेण्डा सीनियर सैकंडरी स्कूल के यूकेजी के छात्र दिव्य प्रताप सिंह ने दिल्ली में हुई ऑल इंडिया रियल गोल्ड रोलर स्केटिंग चैम्पियनशिप में अपने आयु वर्ग में राष्ट्रीय स्तर पर कांस्य पदक जीता। स्केटिंग कोच मंजीत सिंह और दिव्य प्रताप सिंह का सम्मान किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य मोना पालीवाल, निदेशक दिलीप सिंह यादव आदि मौजूद थे।

मेवाड़ नर्सिंग कॉलेज में समारोह

उदयपुर। मेवाड़ बी.एस.सी. नर्सिंग कॉलेज द्वारा नर्सिंग दिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि संस्थान निदेशक पंकज कुमार शर्मा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। प्राचार्य सुनील कुमार ने प्रथम वर्ष के छात्रों को नर्सिंग की शपथ दिलाई। उप प्राचार्य संदीप गर्ग ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर चतुर्थ वर्ष के छात्रों को फेयरवेल भी दी गई। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सरस्वती, स्पीच प्रतियोगिता में प्रथम स्थान घेवर चंद, वाद-विवाद में मशीनीकरण के पक्ष में राजश्री तथा विपक्ष में महिपाल सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रश्नोत्तरी के विजेता पुखराज, नारायण, हेमंत, रामकरण रहे।

राजस्थान फैशन वीक समारोह

एनआईसीसी की डायरेक्टर डॉ. स्वीटी छाबड़ा फैशन वीक की प्रतिभागियों के साथ।

उदयपुर। अर्चना ग्रुप एवं एनआईसीसी के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थानी संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अशोक पैलेस में राजस्थानी फैशन वीक के तहत महिलाओं को 20 मई को विभिन्न पुरस्कार प्रदान किए गए।

एनआईसीसी की निदेशक डॉ. स्वीटी छाबड़ा ने बताया कि बिंदु शर्मा को मई क्वीन, सुनीता सिंघवी को समर कूल आउटफिट, सुषमा कुमावत को बोल्ड एंड ब्यूटीफुल, डॉ. उर्मिला जैन को पारंपरिक पोशाक, शालिनी भटनागर को बनी-ठनी, डॉ. ममता धूपिया को चोखो मुखड़ो, श्रद्धा गट्टानी का लाडो का अवार्ड दिया गया। कार्यक्रम के निर्णायक डॉ. अरविंदर सिंह, डॉ. सीमा सिंह, नेहा पालीवाल व प्रीति रावल थे। इस फैशन वीक के तहत राजस्थानी परम्परा से जुड़ी हर उस वस्तु को यहां प्रस्तुत किया गया, जिसमें राजा-महाराजाओं की थेवा ज्वैलरी मुख्य आकर्षक रही। राजस्थान की बहुरंगी परम्परा, वेशभूषा, आभूषण को पुनर्जीवित करने के लिए यह फैशन शो एक माध्यम बना। अर्चना ग्रुप के सौरभ पालीवाल ने बताया कि इसमें उदयपुर के अलावा जयपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़ सहित अन्य स्थानों से प्रतिभागी भी आए।

मंदिर का 19वां पाटोत्सव

उदयपुर। भूपालपुरा में अष्टमुखी भगवान पशुपतिनाथ एवं विजय हनुमान मंदिर का 19वां पाटोत्सव पिछले दिनों मंदिर सेवा समिति द्वारा मनाया गया। पं. मोहन लाल शर्मा के आचार्यत्व में हवन किया गया। प्रवक्ता नंदलाल मंदवानी ने बताया कि कार्यक्रम में पूज्य श्रीखानपुर सिंधी पंचायत, सिंधु युवा संगठन भूपालपुरा व महिला सिंधु संगम का उल्लेखनीय योगदान रहा। अध्यक्ष अशोक मंदवानी के सान्निध्य में मंदिर पर ध्वजारोहण किया गया।

अजमेरा को डॉक्टरेट की उपाधि

उदयपुर। राजकीय नर्सिंग कॉलेज, उदयपुर की प्राचार्या विजयम्मा अजमेरा को गीतांजली नर्सिंग यूनिवर्सिटी द्वारा पीएचडी की उपाधि दी गई। अजमेरा को गीतांजली यूनिवर्सिटी में नर्सिंग के डीन डॉ. जयलक्ष्मी एल. एस. के निर्देशन में 'जैविक अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण पर अभिविन्यास कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन' विषयक शोध पर डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई है।

रतलिया बने प्रदेशाध्यक्ष

उदयपुर। शहर के समाजसेवी प्रवीण रतलिया को नरेन्द्र मोदी विचार मंच का प्रदेशाध्यक्ष नियुक्त किया गया। मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. सिंह ने दिल्ली में इसकी घोषणा की।

मारुति न्यू डिजायर की लॉंचिंग

न्यू डिजायर के नए मॉडल का अनावरण करते स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक आर. पी. गुप्ता, मोहम्मद खान एवं अन्य।

उदयपुर। कंपनी के अधिकृत विक्रता नवनीत मोटर्स के शोरूम पर बहुप्रतीक्षित न्यू डिजायर के नए मॉडल का एसबीआई के क्षेत्रीय प्रबंधक आरपी गुप्ता ने 17 मई को अनावरण किया। नवनीत मोटर्स के जनरल मैनेजर मोहम्मद खान ने बताया कि नई डिजायर बेहतरीन इंटीरियर डिजाइन और सुरक्षा फीचर्स से युक्त है।

दीपक अध्यक्ष

उदयपुर। लायन्स क्लब उदयपुर की नवीन कार्यकारिणी में दीपक बोर्दिया को अध्यक्ष एवं भूपेन्द्र नागोरी को सचिव मनोनीत किया है। क्लब सचिव डॉ. आशा गुप्ता ने बताया कि नरेश सरनोत को कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष पद पर लोकेश कोठारी, अरुण डूंगरवाल, गोपाल अग्रवाल का मनोनयन किया गया है।

श्रद्धांजलि

पूर्व विधायक जुगल काबरा का निधन

जोधपुर। पूर्व विधायक जुगल काबरा का 10 मई को मुंबई में इलाज के दौरान निधन हो गया। कैंसर का इलाज कराने काबरा कुछ दिन पूर्व मुंबई गए थे। बीस अक्टूबर 1946 को जोधपुर में जन्मे काबरा 1998 से 2003 तक जोधपुर शहर के विधायक रहे। प्रदेश की राजनीति में गहलोत के सबसे करीबी माने जाने वाले काबरा करीब डेढ़ दशक तक जोधपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। वे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट, विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष रामेश्वर डूडी, एआईसीसी महासचिव अशोक गहलोत सहित कई कांग्रेस नेताओं ने विधायक जुगल काबरा के आकस्मिक निधन पर अपनी संवेदना प्रकट करते हुए कांग्रेस नेताओं ने कहा है कि स्वर्गीय काबरा समर्पित एवं कर्मठ कांग्रेस नेता एवं जनसेवक थे। वे सहजता, अनुशासन और विनम्रता जैसे गुणों के धनी थे।

उदयपुर। श्री अनिल जैन चौधरी (अनूसा) सुपुत्र, श्रीमती पानकुंवर स्व. रोशनलाल जी जैन का स्वर्गवास 19 अप्रैल 2017 हो गया। वे अपने पीछे विरह व्यथित माता पानकुंवर, पुत्र-दीपक व राजेन्द्र सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

With Best Compliments

DHL

DHL EXPRESS INDIA PVT. LTD.

53, Panchwati, Udaipur, Tel. : 0294-2414388, Tele Fax : 0294-2414388

E-mail : savvyan2006@yahoo.co.in I savvyan@sancharnet.in

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
AADHAR PRODUCTS
डिसाइड
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
Decide
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध !
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

A Product of
अर्चना Panch 5 mani Fragrance
अर्चना एक्टिव
आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर
1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच
निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स
कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)
वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti
फोन : 0294-2492161, 2490899
व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।
मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

MENARIA
GUEST HOUSE
Home Away From Home
Well equipped Conference & Party venue available
ACCOMMODATION :
Well Appointed AC/Non AC Guest Rooms.
All rooms in suite with hot & cold water,
Elevator (Lift), telephone, satellite TV etc.
A.L. Menaria Mob. : 8003763838
P.S. Menaria Mob. : 9414233164
J.P. Menaria Mob. :9414263411
MENARIA GUEST HOUSE
मेनारिया गेस्ट हाऊस
Off. : Opp. Akashwani Colony, Hiran Magri, Sec.5,
UDAIPUR 313002 (Raj.) Ph. : 2461976, 2467411 (O)

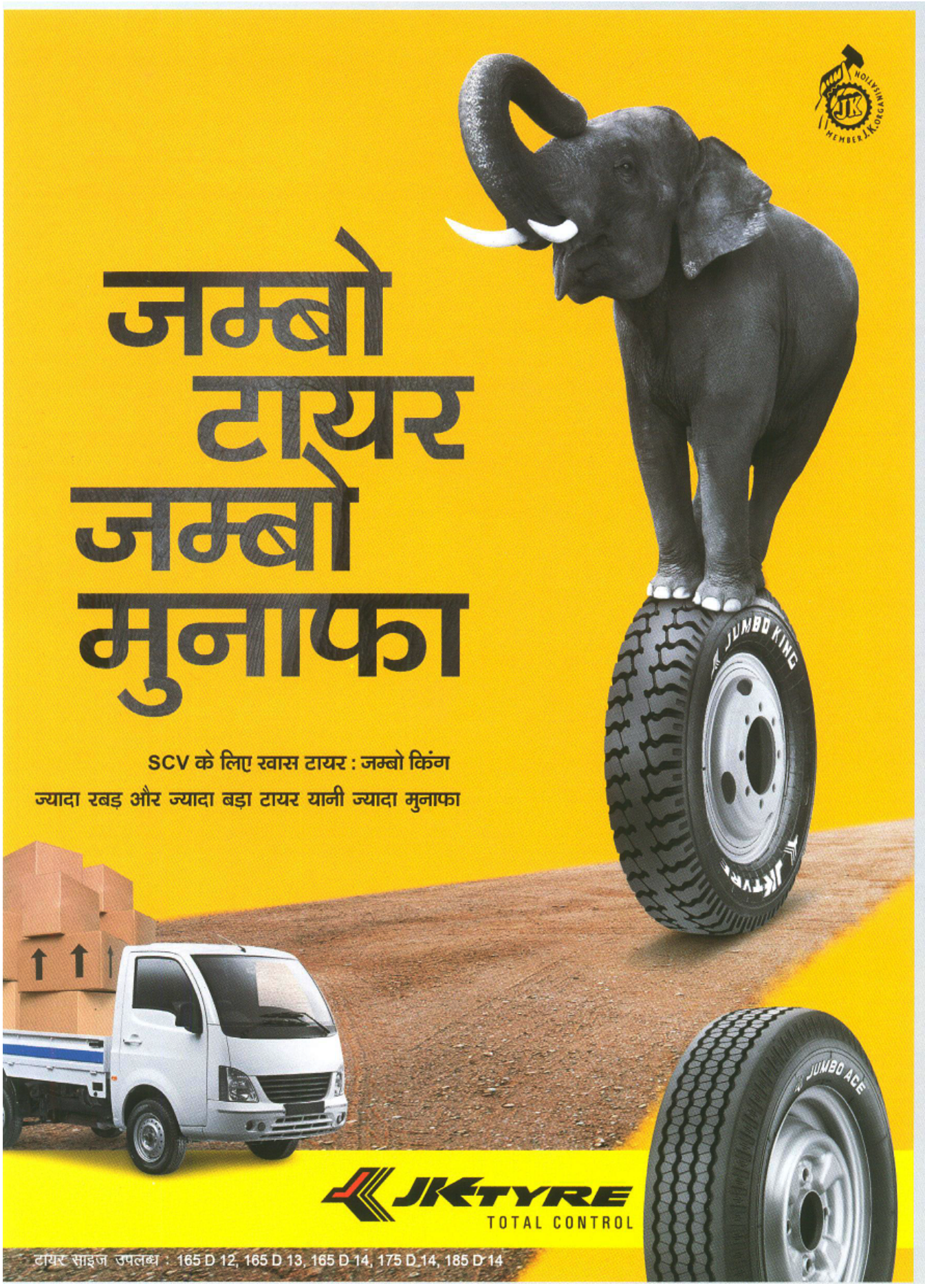

जम्बो टायर
जम्बो मुनाफा
SCV के लिए खास टायर : जम्बो किंग
ज्यादा रबड़ और ज्यादा बड़ा टायर यानी ज्यादा मुनाफा
JUMBO KING
JUMBO ACE
JKTYRE
TOTAL CONTROL
टायर साइज उपलब्ध : 165 D 12, 165 D 13, 165 D 14, 175 D 14, 185 D 14

BHUPAL NOBLES' UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved by Rajasthan Legislative Assembly, University Act No. 23 of 2015)

Promoted by : Vidya Pracharini Sabha, Bhupal Nobles' Sansthan Udaipur, Rajasthan (Estd. 1923)

Admission Open 2017-18

Pioneer Institute of Academic Excellence since last 94 years providing Quality Education and Career Base to students to become Noble Citizens of the Society.
Equipped with the latest and Hi-tech state-of-the-Art educational facilities. Post Metric Fellowship of State Govt., PG Scholarships of Central Govt. and other scholarships available.

Bhupal Nobles' P.G. College (Co-Education)

Email : bnpg1954@yahoo.co.in- 0294-2412981, 2423948

Bhupal Nobles' P.G. Girls' College

Email : bnpggcudr@gmail.com - 0294-2422934, 2420916

FACULTY OF SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES (Contact - 7230060809)

B.A. • Political Science, History, Sociology, English, Hindi, Geography Economics, Physical Education, Sanskrit, Drawing & Painting, Public Administration, Psychology, Music, Home Science
M.A. • Political Science, History, Sociology, English Lit., Hindi Lit. Geography Economics, Public Adm. Psychology, Visual Art & Home Science
Ph.D. • Political Science, History, Sociology, English Lit., Geography Economics, Public Adm. Psychology, Visual Art, Home Science , Hindi Lit.

Faculty of Commerce & Management (Contact - 7230060808)

B.Com • 3 years Degree
Hotel Mgt. • BHM (4 Years Degree) & BATM (3 Years Degree)
B.B.A • 3 Years Degree
M.Com • ABST, Bus. Adm., Banking & Bus. Economics
Ph.D. • ABST, Bus. Adm., Banking & Bus. Economics

Faculty of Science (Contact - 7230060810)

B.Sc. • Physics, Chemistry, Mathematics, Botany, Zoology, Computer Science, Geology, Statistics, Economics, Clinical Nutrition & Dietician, Biotech.
B.Sc. Bio-technology (Honours) • 3 Years Degree
B.Sc. Home Science • 3 Years **B.C.A** • 3 Years Degree **PGDCA** • 01 Year
M.Sc. • Physics, Mathematics, Chemistry, Bio-technology, Botany, Zoology Computer Science, Home Sci. (Human Development & Family Studies)
Ph.D. • Physics, Mathematics, Chemistry, Bio-technology, Botany, Zoology, Computer Science & App.

Bhupal Nobles' College of Pharmacy

Email- bnpharmacy@gmail.com **Website :** www.bnpharma.org
Ph.- 0294-2413182, 9414313542, 7230060825

Bhupal Nobles' Institute of Pharmaceutical Sciences

Email : bnipsudaipur@gmail.com **Website :** www.bnips.org
Ph. 0294-2410406, 9414738107

Faculty of Pharmacy (Contact – 7230060826, 7230060827)

B.Pharma • 4 Years Degree — **D. Pharma** • 2 Years
Pharm D • 6 Years — **Pharm D – (PB)** 3 Years
M.Pharma • Pharmaceutics, Pharmacology, Pharm Chemistry Quality Assurance
Ph.D. • Pharmaceutics, Pharmacology, Pharm Chemistry, Pharmacognosy

Faculty of Agriculture (Contact - 7230060805)

B.Sc. (Honours) • Agriculture- 4 Years Degree Course

Bhupal Nobles' College of Physical Education

Website : www.bnphysical.org, 0294-2428469, 9314495356

Faculty of Physical Education (Contact - 7230060844)

B.P.Ed. • 2 Years, M.P.Ed- 2 Years, PG Yog Diploma - 1 Year
Ph.D. • Physical Education

Faculty of Education (Contact - 7230060811)

B.Ed. • 2 Years

Bhupal Nobles' Law College

Ph. 0294-2417211, 9461530320

Faculty of Law (Contact - 7230060812)

LLB • 3 Years Degree **LLM** • 2 Years Degree (PG)

Career Counseling & Placement Cell

Pratap Shodh Pratishthan (Contact - 7230060819)

Historical & Cultural Research Centre.

Bhupal Nobles' Sr. Sec. School (RBSE) (Contact - 7230060828)

Email : bnsss1923@gmail.com Ph. 0294-2423952

Bhupal Nobles' Public School (CBSE) English Medium (Contact - 7230060829)

Email : bnpublicudaipur@rediffmail.com Ph. 0294-2426018

Bhupal Nobles' Girls P.G. College, Rajsamand
(Affiliated to M.L.Sukhadia University, Udaipur)
Ph. 02952-230707, 9414158352, 9828579061, 7230060813
B.A., B.Com, B.Sc., BCA, M.A., M.Sc. (Chemistry)

Bhupal Nobles' Girls' College, Salumber
(Affiliated to M.L.Sukhadia University, Udaipur)
Ph. 02906- 232411, 9414609913, 7230060846
B.A., B.Com, BCA

Ph.D. Programme

Contact- Dean, PG Studies – 7230060807, 7230060824

For Admission Procedure Please Visit Our Website
www.bnuniversity.ac.in **Email –** registrar@bnuniversity.ac.in
0294- 2414497, 2414498

Hostel Facility Available for Girls & Boys Separately
Contact : 0294-2417181, 9001709559, 9414313542, 7230060831

Mohabbat Singh Rathore | **Dr. Mahendra Singh Rathore** | **Gunwant Singh Jhala**